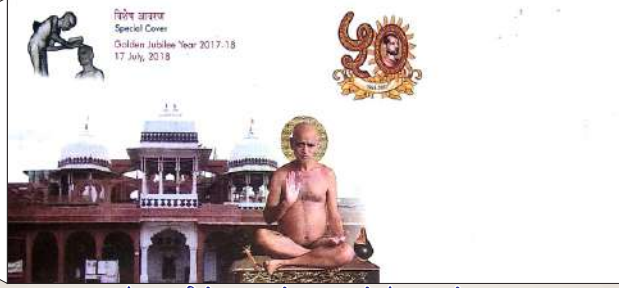


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बरार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वन महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री सकल दिगम्बर जैन समाज झालावाड़ (राजस्थान) के माध्यम से दिनांक 17-07-2018 को भारतीय डाक विभाग के राजस्थान डाक परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		जुलाई 2019 (आषाढ़ शुक्ल)	
16	मंगलवार	पूर्णिमा	पूर्वाषाढ़
17	बुधवार	प्रतिपदा	उत्तराषाढ़
18	गुरुवार	द्वितीया	श्रवण
19	शुक्रवार	तृतीया	धनिष्ठा
20	शनिवार	चतुर्थी	शतभिषा दि./रा.
21	रविवार	पंचमी	शतभिषा
22	सोमवार	षष्ठी	पूर्वाभाद्रपद
23	मंगलवार	सप्तमी	उत्तराभाद्रपद
24	बुधवार	अष्टमी	रेवती
25	गुरुवार	नवमी	अश्विनी
26	शुक्रवार	दशमी	भरणी
27	शनिवार	एकादशी	कृत्तिका
28	रविवार	द्वादशी	रोहिणी
29	सोमवार	त्रयोदशी	मृगशिरा
30	मंगलवार	चतुर्दशी	आर्द्रा
31	बुधवार		पुनर्वसु

(अगस्त 2019)

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अगस्त 2019 (श्रावण शुक्ल)	
1	गुरुवार	अमावस	पुष्य
2	शुक्रवार	द्वितीया	आश्लेषा
3	शनिवार	तृतीया	मघा पू.फा.
4	रविवार	चतुर्थी	उत्तराफाल्गुनी
5	सोमवार	पंचमी	हस्त
6	मंगलवार	षष्ठी	चित्रा
7	बुधवार	सप्तमी	स्वाती
8	गुरुवार	अष्टमी	विशाखा
9	शुक्रवार	नवमी	अनुराधा
10	शनिवार	दशमी	ज्येष्ठा
11	रविवार	एकादशी	मूल
12	सोमवार	द्वादशी	पूर्वाषाढ़
13	मंगलवार	त्रयोदशी	उत्तराषाढ़
14	बुधवार	चतुर्दशी	श्रवण दि./रा.
15	गुरुवार	पूर्णिमा	श्रवण

तीर्थकर कल्याणक

18 जुलाई : भ. मुनिसुव्रतनाथ गर्भ कल्याणक
27 जुलाई : भ. कुन्धनाथ गर्भ कल्याणक
02 अगस्त : भ. सुमतिनाथ गर्भ कल्याणक
06 अगस्त : भ. नैमिनाथ जन्म-तप कल्याणक
07 अगस्त : भ. पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक
15 अगस्त : भ. श्रेयांशनाथ गर्भ-मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 जुलाई : अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
17 जुलाई : वीर शासन जयंती
18 जुलाई : रत्नावलि, एकावली, द्विकावली
21 जुलाई : रविव्रत
28 जुलाई : रोहिणी व्रत, रविव्रत
01 अगस्त : सप्तम स्थान व्रत प्रारंभ
07 अगस्त : सप्तम स्थान व्रत पूर्ण, मोक्ष सप्तमी
10 अगस्त : सौभाग्य दशमी, कलेश दशमी, अक्षय
12 अगस्त : श्रावण द्वादशी
14 अगस्त : कर्म निर्जरा व्रत
15 अगस्त : षोडशकारण व्रत प्रारंभ

सर्वार्थ सिद्धि

23 जुलाई : 05/58 बजे से 13/15 बजे तक ।
25 जुलाई : 05/59 बजे से 17/40 बजे तक ।
27 जुलाई : 19/31 बजे से 30/00 बजे तक ।
29 जुलाई : 06/00 बजे से 18/23 बजे तक ।
01 अगस्त : 06/02 बजे से 12/12 बजे तक ।
04 अगस्त : 06/03 बजे से 30/03 बजे तक ।
08 अगस्त : 21/28 बजे से 30/05 बजे तक ।
09 अगस्त : 06/05 बजे से 21/59 बजे तक ।
11 अगस्त : 06/05 बजे से 24/46 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : जुलाई-24, 25 अगस्त-5
वाहन क्रय : जुलाई-19, 28 अगस्त-5, 7, 9, 14, 15
मशीनरी प्रारंभ : जुलाई-19, 24 अगस्त-5, 6, 11
विद्यारंभ मुहूर्त : जुलाई-18, 19



संस्कार सागर

• वर्ष : 21 • अंक : 243 • जुलाई 2019

• वीर नि.संवत् 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- आज गुरु पूर्णिमा है, मैं कहता हूँ गुरु ही पूर्ण माँ है । 08
- चंद्रगुप्त की चंद्रगिरि 11
- हम अपनी विरासत बचाने को आगे आएँ 14
- आचार्य श्री विद्यासागर जी का संस्कृत और प्राकृत भाषा में योगदान 32
- अभाव प्रमाण की श्रेणी में पृथक् से क्यों नहीं 40
- वर्तमान समय में प्राकृतिक चिकित्सा की आवश्यकता 46
- भगवान महावीर की दिव्य-देशना 49
- जैन व्यक्तित्व डॉ लक्ष्मीमल सिंधवी (जैन) 54
- पाइल्स नियंत्रण से रहें स्माइल 57

बाल कहानी

- आलू से मौत 59

कविता

- अचानक ही वहाँ का मंजर बदल गया 30
- वंशवाद की फसल 39
- सी.सी. कैमरा और आदमी 41
- बदलाव 48

कहानी

- मेरी बन्दना हुई 42

नियमित स्तंभ

- पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 10
- चलो देखें यात्रा : 17 • आगम दर्शन : 20 • पुराण प्रेरणा : 23 • माथा पच्ची : 23
- कैरियर गाइड : 24 • दुनिया भर की बातें : 26 • इसे भी जानिये : 30 • दिशा बोध : 31
- आओसीखें : जैन न्याय : 40 • हमारे गौरव : 51 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास : 54 • हास्य तरंग : 58
- बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं

: अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 65 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

* आंतरिक सज्जा *
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- ♦ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- ♦ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- ♦ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- ♦ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते
की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो
तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 साल)
परम संरक्षक : 15000/-

अपनेशहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
खाता क्र. 07882151004198 (IFSC: ORBC0100788)
• आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 155104000037022
• आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)
में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

**कार्यालय
संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in



• सम्पादक महोदय, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विगत माह एक सर्वदलीय बैठक का आयोजन किया था जिसमें एक विषय विचाराधीन रखा था कि 1 देश में 1 चुनाव हो अर्थात् लोकसभा और विधानसभा का चुनाव एक साथ हो प्रस्तुत विषय पर मतभेद प्रगट हुआ और 8 राजनैतिक दल सहमत हुए तो 8 राजनैतिक दल इस प्रस्ताव से असहमत रहें। इसे देश दुर्भाग्य ही कहा जाना चाहिये कि देश कि धनबर्बाद होने के साथ साथ समय की भी बर्बादी रोकने के लिये भी सहमति नहीं बन पायी जो राजनैतिक दल राष्ट्रहित को ताक में अपने झूठे अहं को आगे बढ़ाकर चलना चाहते हैं उन्हें जनता को सबक सिखाना चाहिये ताकि राष्ट्र सर्वोपरि का पाठ दूसरे दल भी ठीक से समझ लें।

• सम्पादक महोदय, विगत माह विश्व कप क्रिकेट हुआ जिसमें भारत-पाकिस्तान का मैच हुआ और पाकिस्तान भारत के हाथों से 89 रनों से हारा। पाकिस्तान प्रधान इमरान खान जो पूर्व क्रिकेट टीम के कप्तान रहे उन्होंने पाक टीम को पहले वेटिंग लेने की सलाह दी परन्तु केप्टन ने उनकी सलाह नहीं मानी और पहले फील्डिंग ली पाक टीम हार गई तो यह कैसे कहा जा सकता था कि पहले वेटिंग लेने पाक टीम निश्चित जीत जाती। यह क्रिकेट खेल है जिसमें प्रधानमंत्री स्तर के व्यक्ति को हस्ताक्षेप नहीं करना चाहिये क्योंकि हस्ताक्षेप करने से प्रधानमंत्री की गरिमा समाप्त हो जाती किन्तु टीम को जबरदस्त विरोध सामना करना पड़ा जो उचित नहीं है।

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के जुलाई अंक में मेरी वन्दना हो गई शीर्षक से कहानी को

पढ़ा। कहानी की कथावस्तु ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मुनि पुष्पदंत सागर जी की समाधि को लेकर जिस तरह से कथावस्तु की क्रमबद्धता एवं पात्रों का चयन किया गया है वह यह सोचने के

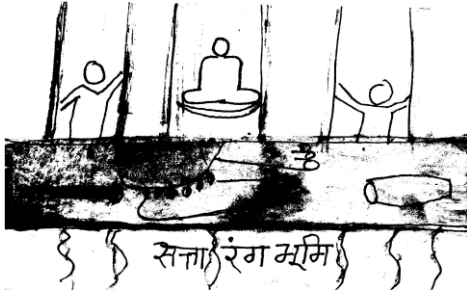
लिये मजबूर कर देता है कि कहानी की बुनावट किस तरीके से हो सकती है। सचमुच में कहानी पढ़ करके ऐसा लगा कि जितने भी मुनियों की समाधि हुई उन सब पर कहानी लिखी जा सकती है। बस चाहिये एक कहानी लेखक।

संस्कार सागर जी पहचान उसकी कहानी ही है जिस कहानी को पाठक पढ़ना प्रारम्भ करता है, जब तक उसका अन्त नहीं होता है तब तक वह पढ़ने को बेचैन रहता है। ऐसी ही कहानी संस्कार सागर में प्रकाशित होती रहें ऐसी आशा है।

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के जुलाई अंक विद्वान डॉ. सुनील संचय का हम अपनी विरासत बचाने आगे आये शीर्षक से लेख पढ़ा। लेखन ने अपने लेख को माध्यम से दर्द वयाँ किया वह हकीकत है। दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति की धारा अक्षुण्ण है उस धारा में कला संस्कृति धर्मदर्शन सिद्धांत अध्यात्म का गहन सौरभ गौरव सम्मिश्रित है। महान आचार्य परम्परा और साहित्य साधना की उपलब्धि युगों युगों तक अमर रूप में बहुत सौन्दर्य धारण किये हुये हैं संतो की तपो साधना पद्धति हमारी विरासत है इसे विद्रूप विकृत होने से बचाना हमारा परम कर्तव्य है अतः हमें आगे आना चाहिये लेखक की गम्भीर अपील है। इस पर हमें अवश्य ध्यान देना चाहिये।

भक्ति तरंग

अध्यात्म नाट्य



सप्त तत्त्व रंग भूमि में, नटत ब्रह्म नटराय
रत्नत्रय आभूषण मंडित, शोभा अगम अथाय
सहज सखा निःशंकादिक गुण, सुदृढ़ समाज बढ़ाय
समता वीन मधुर रस बोलै, ध्यान मृदंग बजाय
नदत निर्जरा नाद अनूपम, नुपुर संवर ल्याय
लय निज रूप मगनता-ल्यावत, नृत्य सुज्ञान कराय
समरस गीत अलापन पुनि जो, दुर्लभ जगमहँ आय
भागचन्द्र आपहि रीझत तहाँ, परम समाधि लगाय
तहाँ कृतकृत्य सु होत मोक्षनिधि, अतुल इनामहिं पाय

इस लोक रूपी रंगभूमि में, सत् पदार्थों की नाट्यशाला में नव पदार्थ सप्त तत्त्व, छह द्रव्यों की अलग अलग रूप भूमिका है। जीव भी सत् है। शेष द्रव्य हैं वह भी यहाँ अपना विशिष्ट अभिनय करते हैं।

सत् पदार्थों की इस रंगभूमि में रत्नत्रय (सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र) के आभूषण से सज्जित, व्यवस्थित व संयमित जीव रूपी पात्र/चेतन की शोभा अथाह, अनन्त है, अपार है। निशंकित आदि गुण उसके साथी है जो सम्यक्त्व की वृद्धि करते हैं। दृढ़ करते हैं, इस प्रकार सम्यक्त्व से समाज को स्थायित्व प्रदान करते हैं।

उस सम्यक्त्व से सज्जित चेतन की समता-रूपी वीन मधुर ध्वनि का गुंजन करती है, ध्यान का मृदंग बजता है, जिसके अनहद नाद से उस चेतन के कर्मों की निर्जरा होती है। नूपुर-संवर लाता है।

इस प्रकार स्व की एकरसता में एक लय में मगन होकर ज्ञान का नर्तन होता है और समभाव का मधुरगीत गाने से सर्वमैत्री के भाव प्रस्फुटित होते हैं और ऐसा प्रतीत होता है मानो दुर्लभ जग में लोक में आ गये हों। कवि भागचंद्र कहते हैं कि अपने आत्म स्वरूप पर रीझ कर (जानकर-प्रेमकर) उसी में ध्यान-समाधि लगाने से स्वरूप की प्राप्ति अर्थात् मोक्ष का अद्वितीय पुरस्कार प्राप्त होता है।



जैन धर्म को खतरा किससे?

भारतीय नीतिकारों ने दो प्रकार के शत्रुओं का उल्लेख किया है। प्रथम बाह्य शत्रु द्वितीय अन्तरंग शत्रु। बाह्य शत्रु से किसी भी धर्म संस्कृति को उतना खतरा नहीं रहा है अन्तरंग शत्रुओं से रहा है। किसी भी राजा के लिये भी बाह्य शत्रु उतना विनाशकारी नहीं जितना है विनाश का कारण अन्तरंग शत्रु बनता है। किसी भी राजा के अन्तरंग शत्रु, काम, क्रोध, मद, हर्ष, और शोक होते हैं। इन शत्रुओं से जो राजा जितना परहेज कर लेता है वह उतना अपनी राजसत्ता को बचाने में सफल होता है। काम और ऐसी अन्दर की वे दुर्भावनायें हैं जो लगाव और अलगाव को पैदा करती हैं। लगाव कामान्धता से पैदा होता है और यह लगाव आसक्ति में बदल जाता है और कई तरह की विकृतियाँ पैदा कर देता है। क्रोध जो बैर और अलगाव पैदा कर देता है।

विवेक शून्यता को उत्पन्न करके हित और अहित की समझ नष्ट कर देता है। अहंकार या मद संगठन शक्ति को समाप्त कर देता है। संगठन शक्ति समाप्त हो जाने के बाद कोई भी राज्य, संस्था अथवा धर्म सदैव कमजोर रहता है।

जैन धर्म की रक्षा, उसकी संगठन, शक्ति और समाज शक्ति पर निर्भर करती है। उसको मानने वाले धर्मात्मा लोग जब कम होने लगते हैं अथवा धर्म मानने वाले लोगों में पंथ, जाति और सन्त के आधार पर बिखराव पैदा होता है तब उस धर्म पर खतरा पैदा हो जाता है।

जैन धर्म अनादिनिधन धर्म है। संस्कृति और साहित्य की दृष्टि से सीमातीत गौरवशाली है। वस्तुनिष्ठ जैन धर्म इतना सशक्त है कि कोई भी उस पर प्रहार नहीं कर सकता। तीर्थ, साहित्य, मन्दिर, मूर्ति पर प्रहार करने की बात कोई अहंकारी सोच लेता है किन्तु समाज संगठन यदि सशक्त होता है तो जैन धर्म के आयतनों पर कोई दुष्ट से दुष्ट पुरुष भी पागलपन सवार होने के पहले तक आक्रमण करने की बात नहीं सोच सकता। वर्तमान परिस्थिति में जैन समाज अपने बिखराव को रोक नहीं पा रहा है। जाति-पंथ की छोटी सोच से ऊपर उठकर समाज एकता की बात प्राथमिक तौर पर महत्वपूर्ण नहीं मान पा रहा है। धर्मात्मा में ही धर्म होता है। धर्मात्मा के बिना मंदिर और मूर्ति में धर्म मानकर धर्मात्मा की उपेक्षा करके मात्र क्रियाकाण्ड को जो महत्व दिया जाता है यही जैन धर्म के ऊपर सबसे बड़ा खतरा है।

यदि हम जैन धर्म के खतरों की सूची तैयार करते हैं तो सर्वप्रथम खतरा है साधर्मियों का पंथवाद, जातिवाद और संतवाद के आधार पर बिखराव होना। दूसरा खतरा साधर्मियों को प्रायश्चित्त विधि से दोष मुक्त ना करते हुए मात्र उसकी उपेक्षा कर देना, समूह से पृथक् कर देना यह जैन धर्म के लिये बेहद खतरनाक कदम है। अपनी भावी पीढ़ी को जैन धर्म और संस्कृति से परिचित नहीं कराना एक खतरनाक भूल है। अपनी व्यस्तताओं का बहाना लेकर मात्र आधुनिक शिक्षा से जोड़े रखना अथवा अल्प आयु में छात्रावासीय शिक्षा को महत्व देना इससे शिक्षा और संस्कार का समीकरण बिगड़ जाने के कारण एक गम्भीर खतरा जैन धर्म को पैदा होता है।

सजातीय विवाह का आग्रह एवं साधर्मियों विवाह की प्रक्रिया को महत्व नहीं देना भी समाज के भविष्य एवं जैन धर्म को कमजोर बनाता है। जैन धर्म को खतरा अन्य धर्मात्माओं से कम जैन धर्म अनुयायियों की ठीक समझ न होने से अधिक है।

आज गुरु पूर्णिमा है, मैं कहता हूँ गुरु ही पूर्ण माँ है

✽ विधानाचार्य ब्र. त्रिलोक जैन ✽

भारतीय संस्कृति संत, साहित्य, और साधना की त्रिवेणी है। भारतीय वसुंधरा रत्न गर्भा के साथ संत-साधु गर्भा भी है। धरती की कोख से जहाँ राजाओं के मुकुट सजाने वाले रत्न निकलते हैं, तो चक्रवर्ती सम्राटों के मुकुटवद्ध मस्तक जिनके चरणों में श्रद्धा से झुक जायें ऐसे परम पूज्य आत्म साधक, स्व पर कल्याणकारी शिष्य हितकारी गुरु देव भी अपनी चरण रज से धरती को धन्य करते हैं।

भारत में गुरु का स्थान सर्वोपरि है, पूज्य है, प्रणम्य है वंदनीय है।

गुरु से बड़ा कोई मीत नहीं है, गुरु से बड़ा कोई गीत नहीं है।

गुरु ही जग में तारण हारा, गुरु से बड़ा कोई तीर्थ नहीं है।

लोग कहते हैं आज गुरु पूर्णिमा है, मैं कहता हूँ गुरु ही पूर्ण माँ है। गुरु के अन्दर माँ जैसी करुणा के साथ पिता का कठोर अनुशासन भी होता है। माँ लालन करती है, पिता पालन करता है, शिक्षा गुरु ताड़न करता है, पर आत्म हितेषी सद गुरुदेव शिष्य का लालन पालन ताड़न कर आत्मोत्कर्ष के मार्ग पर लगा देते हैं।

लालन, पालन, ताड़न में त्रिलोकी, जो होते हैं दक्ष।

सद गुरु कहते उन्हें, जिन आत्म कल्याण है लक्ष।

जिन शिष्य अभ्युदय है लक्ष गु का अर्थ है अन्धकार रू का अर्थ है प्रकाश। जो जाग्रत दिव्य आत्म साधक शिष्य की सुप्त चेतना को जाग्रत कर मोह के अन्धेरे से ज्ञान के सवेरे एवं विवेक के उजले की ओर ले जाये, उन दिव्य साधक को ही भारत में पूज्य गुरुदेव का सम्मान प्राप्त है।

इस धरा पर जब जब योग गुरु शिष्य का मिलन हुआ है, तब तब गुरु शिष्य के संगम से धर्म का मानवता का दिव्य प्रकाश फैला है। आचार्यवर्य मुनि कुल तिलक परम पूज्य ज्ञानसागर जी महाराज एवं विद्याधर का मिलन इसका श्रेष्ठ उद्घारण है। माँ श्री मति ने पिता मल्लप्पा के घर आगन में जिस संभावना को जन्म दिया था उस उजली संभावना विद्याधर को आचार्य श्री विद्यासागर के रूप में संभव कर दिखाया गुरुणांगु गुरु आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज ने।

भारतीय संस्कृति में श्री गुरुदेव जिस ऊँचाई पर विराजमान कवि हृदय मनीषियों ज्ञानियों ने गुरु वंदना की है, उसके सामने हिमालय वोना हो जाता है, सुमेरु पर्वत छोटा दिखाई देता है। एक ओर संसार सागर को पार करने के लिये गुरुदेव को तारण तरण उपमा दी तो दूसरी ओर राम भक्त तुलसीदास जी ने जय जय हनुमान गुसाई कृपा करो गुरुदेव की नाई, कहकर गुरु कृपा को भगवत कृपा से ऊँचा स्थान दिया।

सच्चा गुरु वही है जो शिष्य को अज्ञान की प्राण हीन गलियों के अन्धकार से निकाल कर

ज्ञान के जीवन प्रकाश की ओर ले जाये। गुरु की दिव्य आँख शिष्य के उज्ज्वल भविष्य को वर्तमान में देख लेती है, वह तालाब के कीचड़ को नहीं खिलने वाले कमल को देखती है। सच्चे गुरु चर्चा से अधिक अपनी चर्चा एवं चरित्र से प्रति प्रेरित करते हैं। वर्तमान में गुरुत्व इस दिव्य ऊँचाई पर गुरुत्व एवं मुनित्व के साथ विराजमान है त्रिलोक पूज्य श्रमण सूर्य संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज। त्रिकाल वंदनीय परम पूज्य गुरुदेव अपने कठोर तप त्याग एवं शील संयम सदाचार से आत्म अभ्युदय के साथ शताधिक निर्ग्रन्थ दिगम्बर यतियों, आर्थिका माताओं, एवं हजारों ब्रम्हचर्य धारी युवा साधक साधिकाओं व्रती भाई बहनों को श्रेयस उत्कर्ष कर रहे हैं। चौबीस घंटे में एक बार बिना नमक मीठे के बिना सब्जी फलों के बिना किसी मेवा मिष्ठान के आहार ग्रहण कर, यत्नाचार जीव रक्षा करते हुये पैदल भीषण सर्दी में अमर कंटक जैसे ठंडे स्थान पर सर्दी से सीधी मुलाकात और गर्मी में कुण्डलपुर, नेमावर, डोंगरगढ़ जैसे तीव्र गर्म स्थानों पर साधन कर अपने आत्म कल्याण के साथ, आप शिक्षा स्वास्थ्य स्वालंबन, स्वभाषा एवं स्वदेशी का दिव्य संदेश देकर राष्ट्र अभ्युदय के हित चिंतक संत के महिमा शाली गौरव को धारण कर रहे हैं। आप से प्रेरित होकर देश विदेश में उच्च पदों की नौकरिया छोड़ हजारों युवक युवतियां ब्रह्मचर्य धारण कर हथकरधा, गोसेवा, एवं प्रतिभा स्थली गुरुकुलों के माध्यम से शिखा एवं संस्कारों का उन्नयन कर रहे हैं।

त्रिलोक और त्रिकाल में धर्म का प्रवर्तन, सदाचार का उन्नयन, संरचना का संवर्धन, एवं तप त्याग का वर्णन जिनके द्वारा होता है, उन्हीं महापुरुष को संसार श्रद्धा की आँख से देखता है, आस्था से पूजता है, विश्वास से स्वीकार करता है। शिष्य हितेषी राष्ट्रीय अभ्युदय के हित चिंतन पूज्य गुरुदेव विद्यासागर जी महाराज भगवान महावीर की अहिंसा करुणा दया क्षमा के जीवंत रूप में धर्म तीर्थ को अपनी चर्चा और चर्चा से वर्धमान कर रहे हैं। हमारा सौभाग्य है हम संत शिरोमणि युग में जन्में हैं। जीव में गुरुकृपा के बिना सुगति एवं सफलता के द्वार नहीं खुलते।

सुना है एक सैनिक गुरु की तलाश में था रास्ते में एक व्यक्ति मार्ग से काँटों कंकणों को साफ कर रहा था। सैनिक ने घोड़े पर बैठे बैठे गुरु के बारे में उस व्यक्ति से पूछा उचित उत्तर न मिलने से सैनिक चार जली कटी बातें सुना ठोकर लगाकर आगे बढ़ा। आगे उसे किसी से ज्ञात हुआ जो पीछे मार्ग को साफ कर रहे थे वही गुरुदेव है। सैनिक गुरुदेव के चरणों में जाकर गिर गया रोने गिड़ गिड़ाने लगा अपने कृत्य की क्षमा मागने लगा, तब गुरुदेव ने कहा लोग मटका खरीदते हैं तो ठोक बजाकर देखते हैं तुझे मुझे गुरु बनाने के पहले ठोक बजा लिया क्या बुरा किया। सहनशीलता समता एवं साधना की त्रिवेणी गुरु हृदय में सदा प्रवाहित रहती है।

अब जरा शिष्य के समर्पण श्रद्धा आस्था पर विचार करते हैं। वस्तुता आस्था से रास्ता श्रद्धा से शास्ता एवं समर्पण से गुरु कृपा का प्रसाद मिलता है।



श्रेयस स्वास्थ्य योग

बच्चों के दांत कैसे संभाले

दुनियाभर के बच्चों के डॉक्टर मानते हैं कि बच्चों के दांत आने के दौरान जो दर्द होता है, उसके लिये दवा जरूरी नहीं है। जबकि माता पिता उनके मसूड़े को सुन्न करने के लिये घातक लोकल एनिस्थेटिक बेजोकेन और लिडोकेन जैसी दो चीजों का इस्तेमाल करते हैं।

हाल में यूनाइटेड स्टेट्स फूड एवं ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (यू.एस.एफ.डी.ए) ने लिडोकेन के इस्तेमाल के खिलाफ पेरेंट्स को चेताया था। कुछ साल पहले बच्चों में इस दवा के कारण तनाव, दृष्टि दोष, उल्टी, आलस जैसे गंभीर साइड इफेक्ट देखने को मिले थे।

इसकी वजह से बच्चों के लिये खाना निगलना भी मुश्किल हो जाता था। साथ ही हृदय और तंत्रिका तंत्र पर भी यह विपरीत प्रभाव डालता है। बच्चों में कई अन्य तरह की समस्याएं भी देखने को मिलती थी। इससे पहले यू.एस.डी.एफ. ए ने उन प्रोडक्ट के खिलाफ भी चेतावनी जारी की थी, जिनमें बेंजोकेन होता है। इसमें कहा गया था कि मसूड़े के दर्द इसके इस्तेमाल से खून में ऑक्सीजन की मात्रा तेजी से घटने लगती है, जो घातक साबित हो सकती है।

छह माह से लेकर तीन साल तक हर माह बच्चों के दांत तेजी से निकलते हैं। इस दौरान वे चिड़चिड़े होने के साथ खाना कम कर देते हैं। किसी भी चील को जोर से चबाने की कोशिश करते हैं। बुखार भी आ सकता है। जबकि पेरेंट्स कभी-कभी इसे खांसी, उल्टी, डायरिया और छाती में कफ जमा होने के लक्षण मान लेते हैं। जबकि इसका कारण कुछ और होता है।

बच्चों को दर्द से बचाने के लिये अपना सकते हैं ये उपाय-

- * मसूड़े को उंगली से हल्का मसाज दें। इससे बच्चों को अच्छा महसूस होगा। दर्द कम होगा।
- * टूथिंग रिंग के अलावा साफ कपड़ा भी चबाने को दे सकते हैं। बच्चे को देने से पहले इन दोनों चीजों को कुछ देर के लिये फ्रिज में रखें (चिल्ड न करें) ये नसों को आराम पहुंचाने में सहायक होंगे, जिससे दर्द कम होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि बच्चा इन्हें निगल न लें।

चंद्रगुप्त की चंद्रगिरि

* ब्र. समता जैन मारौरा (इन्दौर) *

ऐसी महिमा बनी तीर्थ की, करें आरती अभिनंदन ।
जिसकी उज्ज्वल कीर्ति, सुवास, घर-घर महके चंदन ॥
भद्रबाहु प्रभाचन्द्र आचार्य, सिद्धांत चक्रवर्ती तुम्हें नमन ।
जब तक नभ में चांद दिवाकर, चंद्रगिरि तीर्थ को नमन ॥

विश्व के प्राणियों को सुख और स्वातंत्र्य को संदेश देने वाली श्रमण संस्कृति की शीतलधारा इस पुण्यभूमि पर सतत् प्रवाहमान रही है। उत्तर भारत यदि गौरवान्वित है तीर्थकरों की भूमि होने के कारण, तो दक्षिण भारत भी पावन हुआ है उन तीर्थकरों के विहार से। दक्षिण भारत की गरिमा इसलिये भी है क्योंकि तीर्थकरों की लोक कल्याणी वाणी को प्रसारित करने वाले गुरु उनके साधना मार्ग को जीवन में उतारकर साक्षात् दिखने वाले आचार्य, प्रायः दक्षिण भारत में ही जन्में हैं। वहीं उन्होंने अपनी साधना के द्वारा श्रमण संस्कृति की प्रभावना की है।

शास्त्रों की रचना तथा विभिन्न शास्त्रों का संरक्षण दीर्घकाल तक दक्षिण भारत में ही हुआ है। ऐसा ही एक क्षेत्र देव-शास्त्र-गुरु की त्रिवेणी श्रवणबेलगोला तीर्थ है। जहाँ दो पर्वत हैं उनमें से एक सम्राट-चन्द्रगुप्त और आचार्य भद्रबाहु की साधना एवं सल्लेखना स्थली चंद्रगिरि पर्वत है। इस चंद्रगिरि पर्वत की समुद्रतल से ऊंचाई 3052 फुट की है। इस पर्वत पर कुल मंदिरों की संख्या 16 है।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना के समय से ही चन्द्रगुप्त और उसके मंत्री चाणक्य पर आचार्य भद्रबाहु का प्रबल प्रभाव था। इसी का फल था कि दोनों महापुरुषों ने दिगम्बरी दीक्षा धारण करके अपने जीवन का परिष्कार किया। चाणक्य ने वहीं उत्तर भारत में मुनि पद की साधना सम्पन्न की। आचार्य भद्रबाहु के सम्पर्क के कारण चन्द्रगुप्त के विचारों में भी उदासीनता आने के कारण मगध का शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप कर शान्त जीवन बिताने के लिये उन्होंने अपनी उपराजधानी उज्जयिनी को अपना निवास बना लिया था।

मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त का जैन संस्कृति के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आचार्य भद्रबाहु चन्द्रगुप्त के कुलगुरु थे। चाणक्य और चन्द्रगुप्त पर उनका बड़ा ही प्रभाव था। इसी कारण दोनों महापुरुषों ने जीवन के अन्त में समस्त परिग्रह का त्याग करके मुनि दीक्षा लेकर सल्लेखना धारण की।

चन्द्रगुप्त ने जीवन के प्रारम्भ में अपनी महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित चाणक्य के मार्गदर्शन में साम्राज्य स्थापित किया था। चन्द्रगुप्त ने अपने पुरुषार्थ से हिमालय से दक्षिणी समुद्रों तक, दक्षिणावर्त, आर्यावर्त पर अपनी भुजा के बल से प्रभुता हासिल की थी। चन्द्रगुप्त का साम्राज्य सही अर्थों में स्व भुजोपार्जित साम्राज्य था।

इतने बड़े साम्राज्य के विधिवत् संचालन के लिये चन्द्रगुप्त ने अनेक प्रांतीय राजधानियों की स्थापना की थी। गृह प्रदेश पाटलीपुत्र पर स्वयं शासन करते थे। यूनानी राजा सेल्यूकस से जीते हुए सीमावर्ती प्रान्तों का शासन कपिशा से होता था। तक्षशिला उत्तर भारत की राजधानी थी। दक्षिण भारत में शासन सुवर्णगिरि से संचालित होता था। गिरिनगर से सौराष्ट्र का शासन होता था। पश्चिमी भारत का संचालन उज्जयिनी से होता था।

चन्द्रगुप्त को वैराग्य - तात्कालिक कूटनीति में विष कन्याओं का उपयोग होता था। चाणक्य ने इन विषकन्याओं से चंद्रगुप्त की जीवन की सुरक्षा के लिये चन्द्रगुप्त के भोजन में बहुत समय तक थोड़ा-थोड़ा विष मिलाकर, चन्द्रगुप्त को विष का अभ्यस्त बना दिया था। जिससे विषाक्त वस्तुओं या व्यक्तियों के सम्पर्क से चन्द्रगुप्त को कोई भी हानि ना पहुंचा सके। एक दिन वह विषाक्त भोजन का ग्रास चन्द्रगुप्त ने कौतुकवश अपनी गर्भवती प्रिया को खिला दिया। क्षण भर में ही विष का प्रभाव परिलक्षित होने लगा। तब चाणक्य ने शल्य चिकित्सा से गर्भस्थ शिशु को तो बचा लिया परन्तु रानी के प्राणों की रक्षा नहीं कर पाया। विष के प्रभाव से वह बालक मस्तक पर एक श्याम बिन्दु लेकर जन्मा, इस लिये उसका नाम बिन्दुसार पड़ा। वही मौर्य साम्राज्य का उत्तराधिकार हुआ।

प्राण वल्लभा की मरण वेदना से चन्द्रगुप्त का मन विरक्ति से भर गया। चन्द्रगुप्त को राज्य लक्ष्मी और भोगों के रस, बेरस लगने लगे। जब बिन्दुसार को पाटलीपुत्र के सिंहासन पर बिठाकर स्वयं उज्जयिनी में निवास किया। सुयोग से उसी वर्ष उसके उज्जयिनी नगर में भद्रबाहु महाराज का चातुर्मास हुआ। गुरु सान्निध्य एवं धार्मिक चिन्तन-मनन तथा गुरुवाणी के श्रवण ने चन्द्रगुप्त की दिशा बदल दी। चन्द्रगुप्त ने वीतराग निर्ग्रन्थ आचार्य की जीवन पद्धति को निकट से देखा। आचरण में अहिंसा वाणी में स्याद्वाद और चिन्तन में अनेकान्त का समावेश को प्रत्यक्ष देखा।

उज्जयिनी में ही चातुर्मास समाप्ति के कुछ दिन शेष रहने पर रात्रि के पिछले पहर में सम्राट चन्द्रगुप्त ने 16 दुः स्वप्न देखे। आचार्य भद्रबाहु ने निमित्त ज्ञान के आधार पर स्वप्नों का अर्थ बताया, उससे तो सम्राट चन्द्रगुप्त की वैराग्य की भावना और प्रबल हो गई। फिर उन्होंने बिन्दुसार को राज्य देकर स्वयं आचार्य भद्रबाहु से जैनश्वरी दीक्षा धारण कर ली। चन्द्रगुप्त द्वारा देखे गये 16 स्वप्न और उनके फल इस प्रकार हैं -

1. सूर्य का अस्त होना- अर्थात् पंचमकाल में अंगधारी मुनि नहीं होंगे।
2. कल्पवृक्ष का टूटती शाखायें- क्षत्रिय राजा दिगम्बर दीक्षा धारण नहीं करेंगे।
3. समुद्र द्वारा सीमा लांघना- राजा लोग अन्यायी होंगे।
4. 12 फणधारी सर्प का दिखना- उत्तर भार में 12 वर्षों का अकाल पड़ा।
5. देव विमान वापस लौटना- पंचमकाल में स्वर्ग के देव नहीं आयेंगे।
6. ऊंट पर बैठा राजकुमार- मंत्री, राजा गण दया रहित होंगे।
7. दो काले हाथियों का लड़ना- समय पर बारिश नहीं होगी।

8. दो बछड़ों द्वारा रथ खींचना- अब मुनि धर्म का निर्वाह युवावस्था में ही हो सकेगा।
9. नग्न स्त्रियों का नाचना- मनुष्य वीतरागी देव छोड़ कुदेव को पूजेंगे।
10. स्वर्ण पात्र में कुत्ते द्वारा खाना- उत्तम कुलों की लक्ष्मी नीच कुलों में जायेगी।
11. जुगनू का चमकना- जैन धर्म की प्रभावना कम होगी।
12. शुष्क सरोवर में दक्षिण दिशा में थोड़ा सा जल- जैन धर्म दक्षिण दिशा में ही रहेगा।
13. धूप में खिला कमल- ब्राह्मण, क्षत्रिय जैन धर्म से रहित होंगे और वैश्य लोग जैन धर्म पालेंगे व धनवान बनेंगे।
14. छिद्र सहित चंद्रमा- जिन शासन में अनेक भेद हो जायेंगे।
15. हाथी पर बंदर बैठा हुआ- पंचमकाल में नीच लोग राज्य करेंगे। उनकी सेवा ब्राह्मण-क्षत्रिय करेंगे।
16. धूल में रत्नों का ढेर दिखना- आगे मुनिराजों में आपस में सांमंजस्य नहीं होगा।

इस प्रकार चन्द्रगुप्त ने विशाल देश के साम्राज्य को त्याग कर दुर्लभ राजसी भोगों को ठुकराकर पुत्र बिन्दुसार को राज्य सौंपकर कठिन साधना मार्ग में अंतिम श्रुत केवली से मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। 12 वर्षों तक कठोर साधना के उपरान्त अपने गुरु चरण चिन्हों की वंदना करते हुए निर्भय साधना पूर्वक उसी गुफा में देहोत्सर्ग किया।

आगम के पारगामी श्रुतज्ञों की श्रृंखला में जैसे आचार्य भद्रबाहु अंतिम श्रुतकेवली थे। वैसे ही मुकुट उतारकर केशलोच करने वाले राजभवन से सीधे वनगमन करने वाले अंतिम मुकुटधर नरेश थे सम्राट चन्द्रगुप्त। उनके पश्चात् किसी मुकुटबद्ध राजा ने राजसी वैभव का त्याग करके जिन दीक्षा धारण नहीं की। इन गुरु-शिष्य की सल्लेखना के उपरान्त सहस्रों दिगम्बर मुनियों ने इस चिक्कबेट पर्वत पर समाधि मरण करके पर्वत के एक-एक कण को पवित्र किया है।

सम्राट चन्द्रगुप्त के नाम पर इस चिक्कबेट पर्वत का नाम **चंद्रगिरि** प्राप्त हुआ और कालान्तर में एक छोटे से जिनालय का पुनर्निर्माण होने पर उसका नाम चन्द्रगुप्त बसदि पड़ा।

सम्राट चन्द्रगुप्त के स्वर्गारोहण के 500 वर्ष पश्चात् एक दासोज नाम शिल्पकार ने आचार्य भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की गौरवगाथा एवं आचार्य भद्रबाहु के संघ की विहार की घटनाओं का अंकन-सुन-सुनकर पाषाण फलकों पर अंकित कर दिया और वह पाषाण फलक चंद्रगुप्त बसदि जिनालय में सुरक्षित है।

अन्तिम श्रुत केवली भद्रबाहु और सम्राट चंद्रगुप्त की समाधि साधना से पावन यह श्रवणबेलगोला के चंद्रगिरि एवं विन्ध्यगिरि पर्वत शाश्वत् तीर्थ है।

**सन्मति शासन को नमूँ, नमूँ शारदा सार ।
भद्रबाहु आचार्य की, महिमा मन में धार ॥
इसी भारत वसुंधरा पर हुये हैं कई आचार्य ।
अंतिम श्रुत केवली हुए, भद्रबाहु आचार्य ॥**

हम अपनी विरासत बचाने को आगे आएँ

* डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) *

आज हमारी समाज में शिथिलाचार एक ज्वलन्त प्रश्न और चिंता का विषय बन गया है। दिनों दिन बढ़ रहा शिथिलाचार लाइलाज होता जा रहा है, राष्ट्रीय नेतृत्व का अभाव, संगठन और एकता के अभाव में इस पर काबू पाना असंभव सा प्रतीत हो रहा है। लगता है जैनश्वरी संस्थान संक्रमण के दौर से गुजर रही है।

जहाँ हमें आज विधर्मियों, असामाजिक तत्वों से अपने आराध्यों की रक्षा के लिये जूझना पड़ता है वहीं आज साधुओं-श्रावकों में बढ़ता शिथिलाचार हमारी चिंता बढ़ा रहा है। आये दिन जब नित-नये शिथिलाचार के खुलासे देखने-सुनने को मिलते हैं तो मन व्यथित हो उठता है। नासूर की तरह बढ़ रहे इस शिथिलीकरण में मात्र साधु को दोष देना भी न्यायसंगत नहीं होगा। इसमें श्रावक, विद्वान, श्रेष्ठि आदि भी कहीं न कहीं दोषी हैं। अकेले मात्र साधु शिथिलता की ओर नहीं बढ़ सकता। मोबाइल, लेपटॉप, ए.सी. की सुविधायें मुहैया कराने में किनका हाथ होता है। साधु तो खुद बाजार में लेने जाता नहीं होगा। आज श्रावकों को जागरूक होना बहुत आवश्यक हो गया है। हमें यह नियम भी बड़ी ही कठोरता के साथ लागू करना होगा कि महिलायें मंदिर जी, गुरुओं के दर्शन आदि में सादगी और शालीन परिधान में आये।

अकेले में महिलाओं का प्रवेश बिल्कुल ही वर्जित किया जाये। हमें यह भी जरूरी है कि साधुओं की साधना ने अनुकूल वातावरण की जिम्मेदारी का निर्वाहन भी करना होगा। अगर कोई साधु अपने 28 मूलगुणों से भटक रहा है तो समाज के लोगों की जिम्मेदारी है उनको निवेदन पूर्वक उन्हें बतायें कि यह उनका काम नहीं है। उन्हें अकेले में उनकी विपरीत चर्चा के बारे में निवेदन के साथ अवगत करायें ताकि साधु सम्हल सके। ऐसे में आज सबसे बड़ी जरूरत है जागरूकता की।

यदि अब भी न जागे तो मिट जाएंगे खुद ही।

दास्तां तक भी न होगी, हमारी दस्तानों में॥

जब कोई अप्रिय घटना घट जाती है तो हम निंदा आदि प्रस्ताव पास करके हम कुछ नहीं कर पा सकने की निराशा से ऊपर उठने की कोशिश और कुछ तो किया की संतुष्टि में अक्सर एक साथ जी लेते हैं। आखिर यह सब कब तक! अब हमारी समाज को निर्णायक फैसले लेना होगा। साधुओं में बढ़ता शिथिलाचार निश्चित ही दिगम्बरत्व पर मंडराता खतरा है। ऐसे ही नित नये खुलासे होते रहे तो कही हमें सरकारी ऐसी कानूनी प्रक्रिया का सामना न करना पड़े जब हमारे आराध्य दिगम्बर मुनियों को स्वतंत्र विहार करने में कानूनी दिक्कतों का सामना करना पड़े।

विश्व में जैन धर्म के साधुओं की शाख त्याग, तप और कठोर ब्रह्मचर्य व्रत के कारण है। दिगम्बरत्व का आधार ही ब्रह्मचर्य है। आज जब कथित बाबाओं के कुकृत्यों के कारण संस्था संकट के दौर से गुजर रही है, लोगों की आस्था साधुओं से उठती जा रही है ऐसे में पूरी दुनिया को जैन साधुओं में एक आशा की किरण दिख रही है परंतु अब दिगम्बर साधुओं के खुलासे से उनकी भी आस्था डगमगाने लगेगी। वर्तमान में घटित कुछ गम्भीर घटनाओं को साधारण रूप से कतई नहीं लिया जाना चाहिये। मुनि निन्दा न करें यह शब्द शिथिलाचार को और बढ़ावा दे रहा है।

उपगूहन स्थितिकरण की आड़ में शिथिलाचार का खेल रूकना चाहिये। गलत आचरण के सम्बन्ध में ठोस कार्यवाही अपेक्षित है। न कोई संतवाद न पंथवाद।

जब कोई शिथिलाचार सम्बन्धी कोई घटना घट जाती है तो घटना चैनल, दैनिक समाचार पत्रों, फेसबुक आदि में प्रसारित नहीं होना चाहिये इसे रोकने का प्रयास होना चाहिये। कठोर कार्यवाही अमल में लानी चाहिये पर मीडिया में अपनी पगड़ी उछालने से बचना चाहिये। क्योंकि यह जैनों के विरुद्ध स्थायी दस्तावेज बन जायेगा। हम अपने घर की बात घर में ही करें तो ज्यादा श्रेयस्कर होगा। ऐसे लोगों को किसी कवि की यह पंक्तियां महत्वपूर्ण हैं।

दिल की बात नजर में रहे जो अच्छा है।

घर की बात घर में रहे तो अच्छा है॥

आज हम सभी को आत्मावलोकन करने की जरूरत है। विद्वानों को इस ओर खास ध्यान रखने की जरूरत है, समाज में निर्णय का पालना कराने में विद्वान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। अब क्रियान्वित की सशक्त योजना आवश्यक है। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिये कि निर्दोष मुनियों के सम्मान पर आँच नहीं आनी चाहिये। सबसे पहले में शिथिलाचार के मानक तय करने होंगे। क्या चारित्रिक शिथिलाचार ही मात्र शिथिलाचार है? बाकी सब जायज है? शिथिलाचार के सभी बिंदुओं पर सार्थक कदम आज की आवश्यकता है।

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली।

न हो जिसको ख्याल खुद अपनी हालात बदलने की॥

शिथिलाचारी कोई भी हो उस पर तत्काल कार्यवाही ही हो। समाज और धर्म की अप्रभावना की चिंता करें। भौतिक परिग्रह मोबाइल, लेपटॉप रखने वाले साधुओं को कोई स्थान न दें। एकल विहारी को समाज किसी भी हाल में प्रश्रय न दें। इसमें कठोरता रखें। हमारे दिगम्बर साधु हमारी आन-बान-शान हैं, हमारे गौरव और परम वंदनीय हैं। जिनकी गिनती पंच परमेष्ठी में होती है, हम ऐसी महान दिगम्बर मुद्रा का अपमान कैसे सहन कर सकते हैं? दिगम्बर मुद्रा की रक्षा के लिये हमें प्रण लेना होगा। विद्वानों की गिरती-गरिमा भी चिंता का बिंदु है। गिरते आचरण पर विद्वानों को भी सोचना होगा। ब्रह्मचारी वर्ग और श्रावकों को भी अपना अंतर मन टटोलना होगा। क्या समाज में दिनों-दिन आ रही गिरावट को रोकने के लिये क्या हम यह नियम लागू कर सकने में समर्थ हैं कि कोई भी शराब आदि का सेवन करने वाला, दुराचार, अनाचार, वेश्यामरण करने वाला, दुर्व्यसनी, अनैतिक कार्यों से अंधाधुंध पैसा अर्जित करने वाला कोई भी व्यक्ति जैन समाज के उच्च पदों पर नहीं बैठाया जायेगा।

आज सभी को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है ऐसे में आज विद्वानों ब्रह्मचारी वर्ग, श्रावक को भी अपनी एक आदर्श आचार संहिता की जरूरत महसूस की जा रही है। क्या आज एक जैन लों की आवश्यकता नहीं है?

जो कार्य आचार्य, संघ, विद्वानों और समाज को समय रहते कर लेना चाहिये था अब मीडिया और कानून कर रहा है। क्या ये माना जाये कि आचार्य या समाज में नियंत्रण शक्ति नहीं रही? विडम्बना तो ये है कि दोष सिद्ध होने के बावजूद ना तो दीक्षा क्षेद होती है न ही सम्यक् स्थितिकरण। शिथिलाचार की घटित घटनाओं ने हमारे, धर्म हमारी मान्यताओं, हमारी निर्ग्रन्थ

संत परंपरा को कलुषित करने का प्रयास किया गया है। हम व्यथित हैं, आक्रोशित हैं, लेकिन चुप हैं।

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध।

जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध॥

एक सामान्य श्रावक, जो स्वभाव से ही बहुत आस्थायवान होता है, उसकी आस्था के साथ भयंकर खिलवाड़ आखिर कब तक ! वह बहुत व्यथित हैं, उसकी आस्था खंडित हुई है। इन गंभीर घटनाओं ने उसे दिग्भ्रमित-सा कर दिया है। पर हम कब चेतेंगे ?

अगर शिष्य के शिथिलाचार पर रोक नहीं हो रही है तो दोषी आचार्य भी हैं। संघ में बुलावें। समझावें। स्थितिकरण करें। अभ्यास करावें। उचित समझें तो ही बाहर जाने की अनुमति दें। एकल तो कदापि नहीं। शिष्य आज्ञा नहीं माने तो समाज के बीच उनकी दीक्षा क्षेद और संघ बहिष्कार की घोषणा करें। फिर समाज अपना कार्य करे। प्रत्येक आचार्य को अपने शिष्यों की सूची जारी करना चाहिये। वह इसलिये कि जब कोई अनहोनी हो जाती है तो आचार्य कह देते हैं कि संघ से निष्कासित थे, जबकि वह उन्हीं आचार्य को ही अपना गुरु मानते थे। कुछ तो जिम्मेदारी लेनी होगी। केवल उपगूहन का पाठ पढ़ाकर शिथिलाचार और अनाचार को ना तो कानून माफ करेगा ना जैनेतर समाज। विडम्बना तो यह है कि कुछ आचार्य का नियंत्रण अपने शिष्यों पर नहीं रहा है। अपने आचार्य की बात आज उनके शिष्य मानने तैयार नहीं, एक ही संघ के शिष्यों के आपस में मतैक्य, भिन्नता देखी जाती है। यहां तक कि एक ही संघ के शिष्य अगुवानी करने, मिलन करने में किनारा करते नजर आते हैं, एक ही नगर में विराजमान होने के बावजूद मिलन नहीं हो पाता। ऐसी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है जो कहीं से भी समाज की सेहत के लिये ठीक नहीं है। समय रहते हमें चिंतन करना होगा। लेकिन सिर्फ चिंतन से ही काम नहीं बनने वाला, प्रबुद्ध वर्ग को अपनी चिर-निद्रा तोड़कर समाज के समक्ष उपजे इस अस्तित्व के संकट को समाप्त करने के लिये कोई ठोस कदम भी उठाना होगा। अर्थ के मामले में साधु की लिप्तता और अर्थ का साधु के इर्द गिर्द अथाह प्रवाह हमारे वीतराग निर्ग्रन्थ और अपरिग्रही साधु के स्वरूप पर बड़ा प्रश्न चिन्ह है ? इस पर समय रहते जल्द चिंतन और हल की महती जरूरत है। हमें समय की पुकार सुननी होगी और सार्थक कदम उठाने के लिये निजी स्वार्थों की तिलांजलि देनी होगी, समाज हित सर्वोपरि होना चाहिये।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं।

मेरी कोशिश है कि यह सूरत बदलनी चाहिये॥

हम अपनी विरासत बचाने को आगे आएंगे। इसकी रक्षा करने के लिये हमें संकल्पित होना होगा। मात्र प्रस्ताव पास कराने या व्हाट्सएप, फेसबुक पर ज्ञान बांटने की आदत से बाहर निकलकर कुछ सार्थक निर्णायक कदम उठाना आज की महती आवश्यकता है। हम साधु, विद्वान, ब्रह्मचारी, श्रावक आदि में पनप रहे शिथिलाचार पर अंकुश लगाने के लिये संकल्पित हो सके तो सार्थकता होगी।

दम तोड़ती साधु संस्था की गरिमा को बचाये रखना समाज की प्राथमिकता होनी चाहिये क्योंकि दिगम्बर जैन धर्म की पहचान हमारे साधु संस्था से ही है।

कुहासा आसमां पर छा रहा है और हम चुप हैं।

अंधेरा धूप को धमका रहा है और हम चुप हैं॥

चलो देखें यात्रा

अद्भुत जैन तीर्थ द्रोणागिरि- पार्श्वनाथ मंदिर

* डॉ. अरविन्द जैन (भोपाल) *

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में विजावर तहसील में स्थित है। द्रोणागिरि क्षेत्र पर्वत पर है। वहाँ पहुँचने के लिये 232 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। सीढ़ियाँ पक्की बनी हुई हैं। पर्वत की तलहटी में सेंधपा नामक एक छोटा सा गाँव है। वहाँ पहुँचने के लिये मध्य रेलवे के सागर या हरपालपुर स्टेशन पर उतरना चाहिये। सुविधानुसार मऊ, महोबा या सतना भी उतर सकते हैं। प्रत्येक स्टेशन से क्षेत्र लगभग 100 किमी. पड़ता है। सभी स्थानों से पक्की सड़क गयी है। कानपुर-सागर रोड़ अथवा छतरपुर सागर रोड़ पर मलहरा ग्राम है। मलहरा से द्रोणागिरि 7 किमी. है। वहाँ तक पक्की सड़क है। सागर से मलहरा तक बसें चलती हैं। बस द्वारा मलहरा पहुँचकर वहाँ से नियमित बस द्वारा क्षेत्र तक जा सकते हैं। बस का टिकट सेंधपा के लिये लेना चाहिये। गाँव का नाम तो सेंधपा है, किन्तु पर्वत का नाम द्रोणागिरि है। सेंधपा के बस अड्डे से जैन धर्मशाला लगभग 100 गज दूर गाँव के भीतर है। निर्वाणकाण्ड में इस संबंध में निम्नलिखित उल्लेख मिलता है-

फलहोडी बड़गामे, पच्छिम भायम्मि दोणगिरि सिहरे।

गुरुदत्तादि मुणिन्दा, णिव्वाण गया णमो तेसिं॥

अर्थात्, फलहोडी बड़गाँव के पश्चिम में द्रोणागिरि पर्वत है। उसके शिखर में गुरुदत्त आदि मुनिराज निर्वाण को प्राप्त हुए। उन्हें मैं नमस्कार करता हूँ।

संस्कृत निर्वाण भक्ति में केवल क्षेत्र का नाम द्रोणिमान् दिया हुआ है। उसका कोई परिचय अथवा वहाँ से मुक्त होने वाले मुनि का नाम नहीं दिया गया है।

निर्वाण काण्ड में द्रोणागिरि की पूर्व दिशा में जिस फलहोडी बड़गाँव का उल्लेख किया गया है, वह गाँव आजकल नहीं मिलता। वर्तमान द्रोणागिरि के निकट सेंधपा ग्राम है, जिसका कहीं कोई उल्लेख नहीं है। कल्पना की जाती है कि यहाँ प्राचीन काल में फलहोडी बड़गाँव रहा होगा और वह किसी कारणवश नष्ट हो गया होगा। वास्तव में सेंधपा गाँव विशेष प्राचीन प्रतीत नहीं होता। कहा तो यह जाता है कि जिस भूमि पर यह ग्राम बसा हुआ है, वह पहले निकटवर्ती ग्राम की श्मशान भूमि थी। इस गाँव के निकट किसी प्राचीन ग्राम के अवशेष प्राप्त होते हैं जो काफी बड़े क्षेत्र में फैले हुए हैं। पर्वत की तलहटी में इन्हीं अवशेषों के बीच एक भग्न प्राचीन जैन चैत्यालय अब भी खड़ा है, जिसे लोग बँगला कहते हैं। यदि यहाँ खुदाई की जाये तो यहाँ पर पुरातत्व की विपुल सामग्री मिलने की संभावना है।

निर्वाण काण्ड के उल्लेख से ज्ञात होता है कि यहाँ से न केवल गुरुदत्त मुनि ही मोक्ष पधारे हैं, अपितु अन्य मुनि भी मुक्त हुए हैं। भाषा कवियों ने इनकी संख्या साढ़े तीन कोटि दी है। वास्तव में तपोभूमि की उपयुक्त रमणीयता को देखते हुए प्राचीन काल में यहाँ तपस्या के लिये आना अधिक संभव था और अनेक मुनियों का यहाँ से निर्वाण प्राप्त करना असंभव नहीं था।

प्राचीन शास्त्रों में द्रोणागिरि का उल्लेख- निर्वाण काण्ड और निर्वाण भक्ति के अतिरिक्त द्रोणागिरि या द्रोणिमान् पर्वत का उल्लेख भगवती आराधना, आराधनासार, कथाकोष आदि ग्रंथों में आया है। भगवती आराधना में आचार्य शिवकोटि इस प्रकार वर्णन करते हैं -

हत्थिणपुर गुरुदत्तो, संवलिथालीव दोणिमत्तम्मि।

उज्झंतो अधियासिय, पडिपण्णो उत्तमं अट्ठ॥

अर्थात्, हस्तिनापुर के निवासी गुरुदत्त मुनिराज द्रोणिमान् पर्वत के ऊपर सम्भलिथाली के समान

जलते हुए उत्तम अर्थ को प्राप्त हुए। सम्भलिथाली का अर्थ है- एक बर्तन जिसमें घास-फूस भरा हो, उसका मुख नीचे की ओर हो और सूख पत्तों आदि से ढँका हो तथा उसके चारों ओर अग्नि लगी हो। अग्नि लगने पर जिस प्रकार भीतर का घास-फूस जलने लगता है, उसी प्रकार द्रोणिमान् पर्वत के ऊपर गुरुदत्त मुनिराज भी जलकर मुक्त हुए।

इसी प्रकार आराधनासागर ग्रंथ में इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया गया है-

वास्तव्यो हस्तिने धीरो, द्रोणीमति महीधरे।

गुरुदत्तो यतिः स्वार्थं, जग्राहानलवेष्टितः ॥

अर्थात् हस्तिनापुर के निवासी गुरुदत्त मुनि ने द्रोणिमान् पर्वत पर अग्नि लगने पर आत्मा के प्रयोजन (स्वार्थ) को सिद्ध किया।

द्रोणगिरि की तलहटी में सेंधपा गाँव बसा हुआ है। गाँव में एक जैन मंदिर है। यहीं जैन धर्मशालायें बनी हुई हैं। धर्मशाला से दक्षिण की ओर दो फर्लांग दूर पर्वत है। पर्वत के दायें और बायें बाजू से कठिन और श्यामली नदियाँ सदा प्रवाहित रहती हैं। ऐसा प्रतीत होता है, मानों ये सदानीरा पार्वत्य सरिताएँ इस सिद्धक्षेत्र के चरणों को पोखार रही हों। पर्वत विशेष ऊँचा नहीं है। पर्वत पर जाने के लिये 232 पक्की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। चारों ओर वृक्षों और वनस्पतियों ने मिलकर क्षेत्र पर सौन्दर्य राशि बिखेर दी है। पर्वत के ऊपर कुल 28 जिनालय बने हुए हैं। इनमें तिगोड़ा वालों का मंदिर सबसे प्राचीन है। इसे ही बड़ा मंदिर कहा जाता है। इसमें भगवान आदिनाथ की एक सातिशय प्रतिमा संवत् 1541 की विराजमान है। सम्मोदशिखर के समान यहाँ पर भी चन्द्रप्रभ टोंक, आदिनाथ टोंक, आदि टोंक हैं। यहाँ 13 फुट ऊँची एक प्रतिमा का भी निर्माण हुआ है। अंतिम मंदिर पार्श्वनाथ स्वामी का है। उसके नीचे 3 गज ऊँची, 1 गज चौड़ी और 4-5 गज लम्बी एक गुफा बनी हुई है। इस गुफा के संबंध में विचित्र प्रकार की विविध किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। एक किंवदन्ती यह है कि सेंधपा गाँव का रहने वाला एक भील प्रतिदिन इस गुफा में जाया करता था और वहाँ से कमल का एक सुन्दर फूल लाया करता था। उसका कहना था कि गुफा के अंत में दीवार में एक छोटा छिद्र है। उसमें हाथ डालकर वह फूल तोड़कर लाता था। उस छिद्र में दूसरी और एक विशाल जलाशय है। उसमें कमल खिले हुए हैं। वहाँ अलौकिक प्रभापुंज है। बिल्कुल इसी प्रकार की किंवदन्ती मांगीतुंगी क्षेत्र पर भी प्रचलित है। एक दूसरी किंवदन्ती है कि गुफा 14-15 मील दूर भीमकुण्ड तक गयी है। पर्वत की तलहटी से एक मील आगे जाने पर श्यामली नदी का भराव है, जिसे कुडी कहते हैं। वहाँ दो जलकुण्ड पास-पास में बने हुए हैं, जिनमें एक शीतल जल का है और दूसरा उष्ण जल का। यहाँ चारों ओर हर, बहेड़ा, आँवला आदि वनौषधियों का निर्भयतापूर्वक विचरण करते हैं। कभी-कभी सिंह, तेंदुआ या रीछ भी इधर जल पीने आ जाते हैं। पर्वत पर अनेक जिनालय हैं जिसमें पार्श्वनाथ जिनालयों का यहाँ मुख्य रूप से वर्णन है -

मंदिर नं. 3- पार्श्वनाथ मंदिर-पाषाण की कृष्णवर्ण, 2 फुट 7 इंच ऊँची, पद्मासन प्रतिमा। विक्रम संवत् 1997 माघ सुदी 5 चन्द्रवार को प्रतिष्ठित। इस प्रतिमा के ऊपर सहस्र फण वाले भगवान पार्श्वनाथ सुशोभित हैं।

मंदिर नं. 9- पार्श्वनाथ मंदिर- मूँगिया वर्ण, पद्मासन प्रतिमा 3 फुट 3 इंच अवगाहना, वि. सं. 1907 फागुन सुदी 10 शुक्रवार को प्रतिष्ठित। सप्त फणवाली है।

मंदिर नं. 10- पार्श्वनाथ मंदिर- शुक्ल वर्ण, पद्मासन प्रतिमा, 2 फुट 6 इंच अवगाहना। वि. सं. 1907 फागुन वदी 10 को प्रतिष्ठित। सप्त फणवाली है।

मंदिर नं. 11- पार्श्वनाथ मंदिर-प्रतिमा श्वेतवर्ण, पद्मासन, 2 फुट 8 इंच अवगाहना। लेख नहीं है। नौ फणवाली है।

मंदिर नं. 15- पार्श्वनाथ मंदिर-श्वेतवर्ण, पद्मासन, 1 फुट 10 इंच उत्तुंग प्रतिमा। वि. सं.

1545 में प्रतिष्ठित। दूसरी वेदी में भी पार्श्वनाथ हैं।

मंदिर नं. 22- पार्श्वनाथ मंदिर- कृष्णवर्ण पद्मासन, 1 फुट 1 इंच अवगाहना वाली प्रतिमा। संवत् 1901 माघ सुदी 5 सोमवार को प्रतिष्ठित। जटाएँ कन्धों पर लहरा रहीं हैं।

मंदिर नं. 27- पार्श्वनाथ मंदिर-श्वेतवर्ण, पद्मासन, 10 इंच अवगाहना वाली प्रतिमा। सं. 1548 में प्रतिष्ठित। मूर्ति पर फण नहीं हैं। सर्प लांछन है।

मंदिर नं. 28- पार्श्वनाथ मंदिर के पास पर्वत पर जो गुफा है, उसके बायीं ओर संवत् 1996 में एक कमरे में 3 हाथ ऊँची और 4 हाथ चौड़ी देशी पाषाण की वेदी पर गुरुदत्त मुनिराज के चरण विराजमान थे। वे अब वहाँ से उठाकर मूर्तियों के आगे रख दिये गये हैं। इस कमरे में दलीपुर और गोलगंल ग्रामों से लायी हुई कुछ प्राचीन मूर्तियाँ रखी हैं। इन मूर्तियों में मंदिर नं. 2 की वह पार्श्वनाथ मूर्ति भी है, जिसे किसी अज्ञ ग्वाले ने लाठी से दायीं भुजा और कंधे को खंडित कर दिया था और मंदिर में इस मूर्ति के स्थान पर अन्य मूर्ति विराजमान कर दी थी। पार्श्वनाथ की यह मूर्ति कृष्णवर्ण, पद्मासन है और इसकी अवगाहना 3 फुट 7 इंच है।

निर्वाण गुफा- अन्तिम पार्श्वनाथ मंदिर के नीचे एक प्राकृतिक गुफा है। वह विशेष लम्बी चौड़ी नहीं है। उसकी गहराई जानने का कोई साधन भी नहीं है। गुफा के बाह्य भाग में गुरुदत्तादि मुनियों के चरण-चिन्ह विराजमान हैं। विश्वास किया जाता है कि इसी गुफा में तपस्या करते हुए उन्हें मुक्ति प्राप्त हुई थी।

धर्मशालायें- क्षेत्र पर कुल 2 धर्मशालायें हैं, जिनमें कुल 3 कमरे बने हुए हैं। क्षेत्र पर बिजली है तथा जल के लिये कुएँ हैं। क्षेत्र पर गद्दे, रजाईयाँ, बर्तन, चारपाई आदि की व्यवस्था है तथा क्षेत्र से आटा, दाल आदि खाद्य वस्तुएँ भी मिल सकती हैं।

वार्षिक मेला- क्षेत्र पर प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्ण 1 से 5 तक वार्षिक मेला होता है।

क्षेत्र व्यवस्था- इस क्षेत्र की व्यवस्था निर्वाचित प्रबन्ध समिति करती है। क्षेत्र की सारी व्यवस्था अतिरिक्त क्षेत्र पर स्थित श्री गुरुदत्त दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय और मलहरा में स्थित जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की व्यवस्था भी यही समिति करती है। इनके अतिरिक्त क्षेत्र पर अन्य जो भी संस्थाएँ हैं, उनका भी संचालन यहीं समिति करती है। यहाँ पर एक धार्मिक एवं प्रबंधन शिक्षण संस्थान भी संचालित किया जाता है, जिसमें प्रतिवर्ष कई विद्यार्थियों को निःशुल्क धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ ऑफिस मैनेजमेंट एवं बहीखाते आदि की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। विशेष रूप से यहाँ से अध्ययन प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को संस्थान द्वारा रोजगार दिलवाने का भी सफल प्रयास किया जाता है।

क्षेत्र पर शिकार- निषेध राजकीय आदेश- विजावर नरेश राजा भानुप्रताप (रियासतों के विलीनीकरण से पूर्व) के समय से इस तीर्थ पर शिकार आदि खेलना राज्य की ओर से निषिद्ध है। इससे संबंधित फरमान, जो राज दरबार से जारी किया गया था, इस प्रकार है- नकल हुकम दरबार विजावर इजलास जनाव येतमाहराम मुंशी शंकरदयाल साहब दीवान रियासत मुसवते दरखास्त जैन पंचान सभा सेंधपा जरिये दलीचंद वैशाखिया अजना संरक्षण जैन सभा मारु जे 22 मई सन् 1931 (ईसवीय दरखास्त फर्माये जाने हुकम न खेलने शिकार क्षेत्र द्रोणगिरि वावै मौजा सेंधपा पर अनीज इसके कि विला इजाजत जैन सभा दीगर कोम के लोग क्षेत्र मजकूर पर न जा सके हुक्मी इजलास खास रकम जदे 25 मई सन् 1931 ईसवीय ऐमाद कराये जाने मुश्तहरी कोई शख्स वगैर इजाजत जैन सभा पर्वत पर न जायेने शिकार खेले। (मुहर)

हुकम हुआ जरिये परचा मुहकमा जंगल अ मुहकमा पुलिस के वास्ते तामील इत्तला दी जावे। तारीख 28 मई सन् 1931 ईस्वी।

इस फरमान द्वारा द्रोणगिरि पर्वत पर जैन समाज का पूरा अधिकार माना गया है। तथा जैन सभा की आज्ञा के बिना शिकार खेलने पर पाबन्दी लगा दी गयी है। यद्यपि रियासतों के समाप्त होने पर उनके कानून और आदेश भी समाप्त हो गये हैं। किन्तु यह आदेश कानून के रूप में नहीं, परम्परा के रूप में अब भी प्रचलित और मान्य है।



विश्वशांति: आत्मशांति विधायक शांतिभक्त

आचार्य पूज्यपाद जी ने भक्ति की
शृंखला में शांतिभक्ति को एक विशेष स्थान दिया है इस भक्ति के दो विभाग किये गये हैं प्रथम विभाग में शांति अष्टक है और दूसरे विभाग में शांतीनाथ भगवान को लक्ष्य बनाकर अरिहंत की उपासना तथा विश्व शांति की कामना राष्ट्र धर्म की अपेक्षा एवं महत्व प्रकट करते हुए भक्ति को सम्पन्न किया है।

भक्ति की आवश्यकता और प्रयोजन बताते हुए कहा है भगवान के दोनों चरणों की उपासना एवं उनकी शरण में स्नेह से नहीं आते हैं अपितु विविध प्रकार के संसारिक दुखों से पीड़ित होकर कोई भी साधक भगवान की भक्ति करने आता है जिस तरह से अत्यंत उग्र सूर्य की किरणों से जब संपूर्ण पृथ्वी तप जाती है तब कोई भी व्यक्ति उस गर्मी को मिटाने के लिये छाया या चन्द्रमा से शीतल हुए जल के प्रति अनुराग करता है अर्थात् प्रभु परमात्मा की शरण में आने का एक मात्र हेतु संसार के दुखों को मिटाना है।

आगे आचार्य कहते हैं कि प्रभु परमात्मा की भक्ति पापों के शमन करने के लिये होती है प्रभु की चरण कमलों की स्तुति करने वाले का पाप का शमन उस प्रकार होता है जिस प्रकार काला कुपित सांप किसी को डस लेता है तो उसके सारे शरीर में विष फैल जाता है और वह मंत्र विद्या औषधि से एक क्षण में प्रभाव शून्य हो जाता है। इसी तरीके से

जिनेन्द्र स्तुति से पाप शमन होता है।

स्वर्ण मेरु के समान अथवा तपे हुए सोने की छवि वाले भगवान जिनेन्द्र देव के चरणों में नमन करने जाते हैं जिस तरह से प्रातः काल में उदार हृदय वाला सूर्य उदित होते ही बहुत मनुष्यों के नेत्र ज्योति का सघन अंधकार हर लेता है इन्द्र देवेन्द्र नरेन्द्र आदि पर विजय प्राप्त करने वाला उग्र रूप धारण करके दावा बनने वाला काल को भी वह जीत लेता है जो जिनेन्द्र देव के चरणों में नमस्कार करते हुए स्तुति करके जीत लेता है।

जो लोक अलोक को आलोकित करने वाले ज्ञान की मूर्ति हैं जिनके ऊपर बहुत प्रकार की मणियों से जड़े हुए तीन छत्र सिर पर शोभा देते हैं ऐसे जिनेन्द्र देव की स्तुति करने वाला उसी तरह से होता है जिस तरह से दहाड़ने वाला शेर हाथियों के दांतों को उखाड़ देता है इसी तरह से जिनेन्द्र देव की भक्ति करने वाले तन मन के सभी रोग भक्ति उखाड़ फेंकती है। जिनेन्द्र देव की भक्ति से अचित्य निराबाध अनुपम अटल सुख निश्चित ही प्राप्त होता है। हे जिनेन्द्र देव आपको देवियाँ अथक रूप से देखती हैं और आपके वैभव रूपी मेरु पर आपकी गाथा गाती हैं आपके चारों ओर बाल दिवाकर के समान चमक तेज रखने वाला भामण्डल सभी प्राणियों को अच्छा लगता है।

जिस प्रकार सूर्य के उदय के बिना सरोवरों में कमल का समूह खिलता नहीं है

उसी प्रकार मानस रूपी सरोवर में जब तक जिनेन्द्र देव का पद रूपी पंकज नहीं खिलता है तब तक पाप रूपी भार को वहन करने वाला भव भ्रमण टलता नहीं है। इस शांति अष्टक के अंत में एक सुन्दर सा काव्य लिखते हुए कहा है कि जिसे शांति की प्यास लगी हो वह आपके चरण कमलों का गुणगान करता है और शांतीनाथ भगवान का शांतीभाव से परम शांती का पान करता है हे करुणा-कर आप करुणा करके मुझको प्रसन्नता में निहित करें एवं आपकी भक्ति में निमग्न में भक्त आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप दृष्टि दोष से रहित करें।

शांति-अष्टक के उपरांत शांतीनाथ जिनेन्द्र भगवान का चेहरा निर्मल चन्द्रमा के समान बताया है तथा शील व्रत संयम का पात्र माना है तथा 108 लक्षणों से युक्त औदारिक तन तथा नयन कमल जिनके हैं ऐसे शांतिनाथ भगवान की वंदना करते हुए पंचक चक्रवर्ती के गुणों से युक्त सोलहवें तीर्थकर जिनेन्द्र देव जो सुरपति नरपति से वंदित हैं वे विश्व शांती को प्रदान करें तथा भ्रांति को दूर करते हुए कांति को भरें और हमारा प्रणाम स्वीकार करें। दुन्दिभि छत्र चमर भामण्डल अशोकवृक्ष पुष्पवृष्टि सिंहासन दिव्यध्वनि आदि अष्ट प्रातिहार्यों से युक्त समवशरण वैभव जिनके पास है ऐसे शांतिनाथ भगवान को मैं मस्तिष्क झुकाकर नमन करता हूँ।

जगत पूज्य शांतिनाथ जिनेन्द्र का मैं सिर से झुक झुककर वन्दना करता हूँ वे हमें परम शांति का दान दें एवं परम तत्त्व का ज्ञान

भरें जो कुण्डल मुकुट हार पहने हुए हैं देवों और देवगणों के पालक हैं ऐसे इन्द्रों के द्वारा जो रात दिन पूजित हैं भव समुद्र के तारक हैं विश्व प्रकाशक दीपक हैं तथा विमलवंश के दर्पण हैं ऐसे शांति विधायक तीर्थकर के शांति प्रदान करें यही मैं भावना अर्पित करता हूँ।

भक्तों के भक्त पालनहारे, यक्ष, यति और यतियों के प्रमुख यतीन्द्र देशराष्ट्र पुरग्राम नगर में सभी विघ्नों का विनाश कर शांति प्रदान करें विश्व शांति की पवित्र भावना से यह भावना भायी गई है कि प्रजा का सदैव कल्याण हो राजा शक्ति शाली और धार्मिक हो समय समय पर मेघों के द्वारा वर्षा हो व्याधियों का नाश हो अकाल हो दुर्दिन चोरी रोग आदि कभी न हो धर्म चक्र का सदैव प्रवर्तन हो और मोक्ष मार्ग सभी को प्राप्त हो शुक्ल ध्यान की अग्नि से जिन्होंने घातिया कर्म को नष्ट कर दिया हो जिन्हें पूर्ण केवलज्ञान प्राप्त हो गया हो ऐसे वृषभ देव से लेकर वर्धमान तक चौबीसों तीर्थकर जगत में शांति की वर्षा करें और क्षेमंकर बने।

प्रस्तुत शांति भक्ति में निदान शून्य भोग आकांक्षा से रहित संपूर्ण जगत की शांति की भावना की गई है इस भक्ति की अंचलिका में चौबीस तीर्थकर भक्ति के समान तीर्थकर की समस्त विशेषताओं को स्मरण में लाया गया है। एवं दुख का क्षय हो बोधि की प्राप्ति हो कर्मों का क्षय हो सुगति में गमन हो समाधिमरण हो जिनेन्द्र के गुणों की संपत्ति की प्राप्ति हो इन्हीं सदभावनाओं के साथ शांति भक्ति रूप आराधना की गई है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

जून 2019

मैं अलबेला रहा अकेला

प्रथम-

मैं अलबेला रहा अकेला
झूठे है रिस्ते सब जग के
झूठा प्यार सभी का
अपने अपने कामों में सब
कोई नहीं लकी का
मोबाईल में व्यस्त सभी है
घर का टूटा मेला
बात कोई नहीं करता मुझसे
मैं अलबेला रहा अकेला
श्रीमति शशि जैन (इन्दौर)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
मई 2019 के विजेता

प्रथम : श्रीमति कान्ता जैन (मदनगंज किशनगढ़)
द्वितीय : श्रीमति रजनी सेठ (सागर)
तृतीय : श्रीमति मिलापचन्द्र (कोटा)

द्वितीय-

रिस्ते नाते स्वार्थ के सब
झूठा जग का मेला
बिछड़ गये सब परिजन मेरे
मैं अलबेला रहा अकेला
श्रीमति रूचि जैन (सागर)
तृतीय-
नन्हा मुन्ना मैं हूँ बालक
छोड़ गये है मेरे पालक
मेरे पास नहीं है धेला
मैं अलबेला रहा अकेला
श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

वर्ग पहेली क्र. 240
मई 2019 के विजेता

प्रथम : श्रीमति शकुन्तला जैन (देवास)
द्वितीय : श्रीमति रजनी विमल जटाले (मलकापुर)
तृतीय : श्रीमति इन्दू बड़जात्या (बाकानेर)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : जून 2019 का हल

- | | | |
|------------------|--------------|---------------------------------|
| 01. ध्यान | 18. सल्लेखना | 35. सूखता |
| 02. ज्ञान | 19. निर्भीक | 36. ज्ञानी |
| 03. नियंत्रण | 20. भीतर | 37. दिव्यता |
| 04. समितियों | 21. तन्त्र | 38. अनुगामी |
| 05. कण्डीशन | 22. योग | 39. आसक्ति |
| 06. दुःख | 23. कारण | 40. फूलमालाओं |
| 07. ज्ञान | 24. मुक्ति | 41. 735 |
| 08. संसारी | 25. आकुलता | 42. 972 |
| 09. ध्यान | 26. चिंतन | 43. 351 |
| 10. निरंजन | 27. चित्त | 44. 653 |
| 11. शिव | 28. ध्यान | 45. 1018 |
| 12. ज्ञान | 29. वास्तविक | 46. नंदीश्वर भक्ति |
| 13. समाधि | 30. मुक्ति | 47. चौदह |
| 14. सल्लेखना | 31. समता | 48. सात |
| 15. वैय्यावृत्ति | 32. सुख | 49. चार |
| 16. शल्यवान | 33. समता | 50. श्री सम्पेदशिखर में मई 2019 |
| 17. उपाधि | 34. विपत्ति | |



पुराण प्रेरणा

पाप से पतन

पातकात्पतनं ध्रुवम्।

इतना कहते ही वसु का स्फटिक मणिमय
आसन पृथ्वी में धंस गया और वह
पाताल में जा गिरा सो ठीक ही है क्योंकि
पाप से पतन होता ही है।

का वा कठिन चित्तस्य जिनशासन
भक्तता॥

जो सम्यग्दर्शन की शुद्धता से सहधर्मी की
भक्ति नहीं करता है वह झूठ-मूठ का
विनयी बना फिरता है उसके सम्यग्दर्शन
की शुद्धि क्या है।

पुनर्बोधिपरिप्राप्तिदुर्लभा भवसंकटे।
यन्त्रोपयुज्यते यस्य धनं वा वपुरेव
वा॥

यदि बोधि की प्राप्ति में निमित्त भूत दर्शन
विशुद्धि में बाधा पहुँचायी जाती है तो
फिर इस संसार के संकट में पुनः बोधि की
प्राप्ति दुर्लभ ही समझनी चाहिये।

स्वशासनजने तेन तस्य कि
बन्धुहेतुना।

जिसका धन अथवा शरीर सहधर्मी जनों
के उपयोग में नहीं आता उसका वह धन
अथवा शरीर किस काम का ? वह तो
केवल कर्मबन्ध का कारण है।

(आदि पुराण से)

माथा
पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर
रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. र आ स् क् अ अ ग् आ स् अ र्

2. र आ स् क् अ आ अ प् र् च् र् अ

3. र आ स् क् अ आ अ म् न् ज् ऊ ष्

4. र आ स् क् अ अ य् उ ग्

5. र आ स् क् अ आ ष् र् अ व् ह् भ

परिणाम :

जून 2019: (1) आर्थिका श्री गुणमति माताजी (2) आर्थिका श्री शुभ्रमति माताजी
(3) आर्थिका श्री सुनयमति माता जी (4) आर्थिका श्री भावनामति माताजी (5) आर्थिका श्री अनंतमति माताजी

अल्टरनेटिव मेडिसन

करियर



हाल के वर्षों में वैकल्पिक चिकित्सा यानी आयुष के प्रति लोगों का रुझान तेजी से बढ़ा है एक अनुमान के मुताबिक अगले तीन वर्षों में आयुष सेक्टर में करीब 2 करोड़ 60 लाख नई नौकरियों के अवसर सामने आयेंगे। आइये जानते हैं आयुष की फील्ड में कहा-कहा हैं चमत्कार करियर के मौके।

लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के चलते देश में आयुर्वेद होम्योपैथी, योग, नेचुरोपैथी जैसे प्राकृतिक उपचार में लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। यह बात कई वैज्ञानिक शोधों से भी साबित हो चुकी है कि योग मेडिटेशन और जड़ी बूटियों का इस्तेमाल भी बेहतर सेहत के लिये उपयोगी होता है यही वजह है कि एलैपैथिक दवाईयों के साथ-साथ लोगों का भरोसा आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक यूनानी जैसी वैकल्पित चिकित्सा पद्धति पर भी बढ़ा है विश्व स्वास्थ्य संगठन के आकलन के मुताबिक करीब 60 प्रतिशत आबादी स्वास्थ्य देखभाल के रूप में वैकल्पित उपचार पर भरोसा करती है। ये एलोपैथी की तुलना में किफायती भी सिद्ध होती है।

बढ़ रही संभावनायें- आयुष का घरेलू और अंतराष्ट्रीय बाजार लगातार बढ़ रहा है। हर्बल प्रोडक्ट नियति के मामले में भारत अभी विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। घरेलू बाजार भी करीब 500 करोड़ रुपये होने का अनुमान है यही वजह है कि इस क्षेत्र में नौकरी की संभावनायें लगातार बढ़ रही है एक अनुमान के मुताबिक अगले तीन वर्षों में यानी 2020 तक आयुष इंडस्ट्री में 2.60 करोड़ नई नौकरियों के अवसर सामने आयेंगे।

केन्द्र सरकार 2022 तक इस इंडस्ट्री की ग्रोथ को तीन गुना करने पर जोर दे रही है। जिसके तहत आयुष फील्ड में (एफ डी आई) विदेशी निवेश की सीमा को बढ़ाकर 100 फीसद कर दिया है। हमारी सरकार ने भी आयुष के ऊपर अब ज्यादा ध्यान देना शुरू कर दिया है। और अच्छे हॉस्पिटल खोल रही है जैसे हाल में ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद को खोला गया है जहाँ काफी अच्छी संख्या में लोग जा रहे हैं इसके अलावा आयुर्वेद होम्योपैथी में कुशल चिकित्सक भी अब मार्केट में आ रहे हैं। जाहिर है इससे नौकरियां भी बढ़ेंगी। युवाओं के लिये इसमें फ्यूचर भी बहुत अच्छा है। क्योंकि पब्लिक में इसकी स्वीकार्यता बढ़ रही है।

जॉब्स के मौके- देश के प्राकृतिक चिकित्सा को एक स्वतंत्र चिकित्सा पद्धति के रूप में मान्यता मिली हुई है आयुर्वेद और होम्योपैथी के डाक्टरों की अलग से सरकारी अस्पतालों में नियुक्ति की जा रही है। निजी अस्पतालों में भी ऐसे ही प्रोफेशनल्स की डिमांड है। इसके अलावा हर छोटे बड़े शहरों में प्राकृतिक चिकित्सा के क्लिनिक/हेल्थकेयर सेंटर भी खुलते जा रहे हैं। जहां प्रेक्टिस कर सकते हैं नेचुरोपैथी का कोर्स करके स्पा सेंटर खोल सकते हैं हर्बल प्रोडक्ट बनाने वाली मैनुफैक्चरिंग कंपनियों में नौकरी की तलाश की जा सकती है। शैक्षिक संस्थानों में टीचर बन सकते हैं स्वरोजगार के मौके भी उपलब्ध है।

आयुर्वेद चिकित्सा : इसमें बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडीसिन एण्ड सर्जरी (बी एम एस) कोर्स कई आयुर्वेदिक संस्थानों में संचालित हो रहे हैं।

यह कोर्स साढ़े पाँच साल की अवधि है। इसमें साढ़े चार साल का कोर्स और एक साल की इंटरशिप शामिल है इस कोर्स में एडमिशन लेने के लिये फिजिक्स केमिस्ट्री और बायोलोजी विषयों से 12वीं पास

होना जरूरी है इसके बाद एम डी/ एम एस इन आयुर्वेद जैसे कार्स भी कर सकते हैं।

होम्योपैथी : होम्योपैथी में रोगियों का इलाज प्राकृतिक तरीके से उनके शरीर के हीलिंग पावर को तेज करके किया जाता है देश की कई यूनिवर्सिटीज में बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (बी एच एम एस) कोर्स उपलब्ध है यह कोर्स करने के लिये साइंस में 12वीं पास होना जरूरी है।

यूनानी चिकित्सा पद्धति : यह विश्व की सबसे पुरानी उपचार पद्धतियों में से एक है जिसकी शुरुआत ग्रीस (यूनान) से हुई इसलिये इसे यूनानी पद्धति कहा जाता है यूनानी डॉक्टर बनने के लिये 12वीं के बाद (बी यू एम एस) यानी बैचलर ऑफ यूनानी मेडीसिन एण्ड सर्जरी कोर्स कर सकते हैं यह कोर्स भी साढ़े पाँच साल की अवधि का है इस कोर्स में दाखिले के लिये जरूरी है कि आप 12वीं की बायोलॉजी से उत्तीर्ण हो।

प्रमुख संस्थान

1. श्री धन्वंतरि कॉलेज चंडीगढ़ - www.shridhanwantrigroup.com
2. राजीव गांधी आयुर्वेदिक महाविद्यालय पपरोला हिमाचल प्रदेश www.paprolaayurved.org
3. नेहरू होम्योपैथी मेडीकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल दिल्ली www.nhmc.delhigovt.nic.in
4. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ होम्योपैथी कोलकाता - www.nih.nic.in
5. जामिया हमदार्द, नई दिल्ली - www.jamiahamdard.edu
6. अजमल खान तिब्बी कॉलेज अलीगढ़ यूपी - www.amu.ac.in
7. देव संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार उत्तराखण्ड - www.dsvv.ac.in
8. मोरार जी देसाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ योग, दिल्ली - www.yogamdnny.nic.in
9. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नेचुरोपैथी पुणे - www.punenin.org

निन्दानल (कुण्डलिया)

✽ सुदेश जैन कोठिया (खुरई) ✽

उजले पन को बचाना, आज कठिनतम काम ।

हर मैला-ईर्ष्यालुजन, करे उसे बदनाम ॥

करे उसे बदनाम, रेख निज बड़ी दिखाने ।

पाँछे "पर" यश रेख, स्वयं को ऊपर लाने ॥

पुरुषारथ से हीन, आलसी-निदक-बगुले ।

फैंकेंकीचड़ रोज, मलिन दिख जायें उजले ॥

अयशकीर्ति का उदय तब, सद को निंदे लोय ।

धर्मी भी होते विमुख, तथ्य न जाने कोय ॥

तथ्य न जाने कोय, सप्तभय सब पर भारी ।

अष्ट अंग छिप जायें, भीत रत्नत्रय धारी ॥

जीव कर्मवश व्यथित, धर्म से करे अप्रीति ।

कंटक दे त बिछाय, सुपथ में अयश कीर्ति ॥

दुनिया भर की बातें



मई 2019

■ 1 मई

- हैदराबाद : ऐतिहासिक इमारत चार मीनार का एक हिस्सा टूटकर गिर गया।
- सूरत : मोदी सरनेम के लोगों के चोर कहने पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी को एक अदालत ने तलब किया
- थाईलैंड के वाजिरा लोंगकोर्न ने राजतिलक से एक दिन पहले अपने 26 वर्ष छोटी बॉडी गार्ड सुथिदा से विवाह रचाया।

■ 2 मई

- पेरिस सहित पूरे फ्रांस में 4000 प्रदर्शनकारियों ने सरकार का विरोध जताया।
- सी.बी.एस.ई. 12वीं के नतीजे सामने आये गाजियाबाद की हंसिका एवं मुजफ्फर नगर की करिश्मा अरोरा टॉपर रहीं।
- अहमदाबाद : इशरत जहाँ मुठभेड़ मामलों में पूर्व पुलिस अधिकारी डी.जी. बंजार बारी हुई।

■ 3 मई

- संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा अजहर मसूद को वैश्विक आतंकी घोषित होने के बाद पाक उसकी सम्पत्ति जब्त करने एवं विदेश यात्रा रोकने के आदेश जारी किये।
- फनी तूफान पश्चिम बंगाल पहुँचा

उड़ीसा में तबाही मचाई 7 मरे 160 घायल हुये।
- जम्मू कश्मीर में सुरक्षा बलों 3 आतंकी मार गिराये।

■ 4 मई

- तेलंगाना के प्रसिद्ध लेखक प्रोफेसर मारम राजू का निधन हुआ वे 85 वर्ष के थे।
- उत्तर कोरिया ने पाबंदी के बाद भी मिसाइल का परीक्षण किया इससे अमेरिका नाराज हुआ।
- थाईलैंड में 69 साल बाद बजीरा लॉग कार्न का राज्याभिषेक हुआ।

■ 5 मई

- पूर्व केन्द्रीय मंत्री शकील अहमद को 6 वर्ष के लिये कांग्रेस ने पार्टी से निकाला।
- गाजापट्टी के 70 ठिकानों पर इजरायल ने बम बरसाये।
- श्रीलंका सरकार ने 200 विदेशी मौलवियों को देश से बाहर किया।

■ 6 मई

- ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी की इमारत का नाम बदलकर भारतीय दम्पति डॉ. दुर्गा और श्रीमति सुशीला अग्रवाल नाम पर रखा गया।
- मुम्बई : मझगाँव में नौसेना ने प्रोजेक्ट 75 के अंतर्गत चौथी पनडुब्बी का जलावतरण किया।
- इन हाऊस कमेटी ने चीफ जस्टिस रंजन भोगड़ को यौन उत्पीड़न मामले में क्लीन चिट दी।

■ 7 मई

- श्रीलंका पुलिस ने नेशनल तौहीद जमात की 14 करोड़ डॉलर नकदी और 7 अरब की सम्पत्तियाँ जब्त की।
- लाहौर : पाकिस्तानी लड़कियों की तस्करी कर चीन ले जाने वाले 10 चीनी नागरिक गिरफ्तार।

- गंगोत्री : यमुनोत्री के कपाट खुले चार धाम की यात्रा शुरू हुई। 15 वर्ष बाद मई में बर्फ जमी हुई हैं।

■ 8 मई

- लाहौर : आतंकियों ने पाक में सूफी दाता दरगाह के बाहर आत्मघाती हमला किया 10 लोग मारे गये।
- इतालवी पत्रकार फ्रांचेस्का मरिनो ने 26 फरवरी के एयर स्ट्राइक में बालाकोट में 170 आतंकी मरने का दावा किया।
- चौकीदार चोर कहने पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी सुप्रीम कोर्ट में बिना शर्त माफी माँगी।

■ 9 मई

- सिंगापुर संसद ने फेक न्यूज रोकने कानून बनाया दोषी पर 10 साल की सजा और 3.77 करोड़ रुपये का जुर्माना।
- आई एम एम नागपुर में सवर्ण गरीबों के लिये आरक्षण शुरू।
- छत्तीसगढ़ में महिला कमांडो ने दो नक्सलियों को ढेर किया।

■ 10 मई

- सहकारिता आंदोलन के नेता बामविंदर सिंह नफई इफको के अध्यक्ष चुने गये।
- टाइम पत्रिका ने कवर पेज नरेन्द्र मोदी को जगह दी।
- इंदौर : सफाई कर्मी नूतन घावरी की बेटी रोहणी को म.प्र. सरकार ने 1 करोड़ रुपये स्कॉलरशिप दी।

■ 11 मई

- आई टी सी के गैर कार्यकारी अध्यक्ष बाई सी देवेश्वर का निधन हुआ।
- अमेरिका ने अपाचे हेलीकॉप्टर की

पहली खेप भारत को सौंपी
- हांगकांग की संसद में चीन समर्थक और लौकतांत्रिक समर्थकों के बीच मारपीट चली 11 सांसद घायल हुये।

■ 12 मई

- गंगटोक : 300 याक भूख से उत्तरी सिक्किम में मरे।
- विरहा सम्राट पद्म श्री हीरालाल यादव का निधन हुआ वे 83 वर्ष के थे।
- जम्मू कश्मीर के शोपियाँ जिले में सुरक्षा बल ने मुठभेड़ में 2 आतंकी मारे जिनमें एक भगोड़ा का स्टबिल था।

■ 13 मई

- दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश पद हेतु डी.एन. पटेल का चयन हुआ
- लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण का समय बदलने की याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज किया यह याचिका मुस्लिम समाज ने रोजा के कारण लगाई थी।
- चीन ने गाइटेड मिसाइल नष्ट करने वाला पोत लाँच किया।

■ 14 मई

- कोलकाता : अमित शाह के रोड़ में बबाल हुआ भाजपा और टी.एम.सी. कार्यकर्ता भिड़े पथराव आगजनी हुई।
- जेट एयरवेज के सी.ई.ओ. विनय दुबे ने इस्तीफा दिया।
- कान : (फ्रांस) 72वाँ कान फिल्म समारोह शुरू हुआ।

■ 15 मई

- चुनाव आयोग ने पहली बार धारा 324 का उपयोग कर पश्चिम बंगाल में एक दिन पहले प्रचार समाप्त किया और गृह सचिव व ए.डी.जी को हटाया।

- मेजर ए.के.हींगरा आर्म्ड फोर्सेज स्पेशल ऑपरेशन डिवीजन के पहले चीफ बने।
- पाकिस्तान सरकार की आलोचना करने पर हाफिज सईद के निकट संबंधी अब्दुल रहमान मक्की को गिरफ्तार किया गया।
- **16 मई**
 - ईरान के इस फरूहान प्रांत में महिलाओं के साइकिल चलाने पर प्रतिबंध लगा।
 - श्रीनगर : पुलवामा में जैश कमांडर खालिद भाई सहित छः आतंकी ढेर हुए जवान संदीप शहीद हुए।
 - नेपाल के कंचनजंगा से पर्वतारोहण कर रहे दो भारतीय विप्लव वैद्य ओर कुंतलकरार की मौत हुई।
- **17 मई**
 - खूटी (झारखंड) फादर अल्फोंस सहित छः को उम्रकैद की सजा दुष्कर्म मामले में हुई।
 - सुप्रीम कोर्ट ने शारदा चिट फंड घोटाले मामले में पूर्व पुलिस कमिश्नर राजीव कुमार पर गिरफ्तारी की लगी रोक हटाई।
 - 5 साल में पहली बार प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस की।
- **18 मई**
 - पी.एम. नरेन्द्र मोदी ने बाबा केदारनाथ के दर्शन किये।
 - चुनाव आयुक्त अशोक लवासा ने चुनाव आयोग की मीटिंग में शामिल होने से साफ मना किया।
 - सात सौ करोड़ रुपये की मालकिन गुपी बिल्ली की मौत हो गई।
- **19 मई**
 - काहिश : मिस्र में गीजा पिरामिड के पास बम विस्फोट हुआ 16 लोग घायल हुए।

- कर्नाटक के विधायक मुनिरत्ना नायडू के निवास पर विस्फोट हुआ 9 की मौत हुई।
- लोकसभा चुनाव का अंतिम चरण हुआ मतदान 60.81% हुआ।
- **20 मई**
 - राँची : झारखंड के खरसावा में नक्सली हमला हुआ 3 जवान घायल हुये।
 - पाकिस्तान के जेल में दंगा हुआ जिसमें 24 आतंकी आई एस सहित 7 अन्य मारे गये।
 - भोपाल : प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने प्रायश्चित्त स्वरूप 63 घंटे का मौन रखा।
- **21 मई**
 - जोकोविडाडो इंडोनेशिया के पुनः राष्ट्रपति चुने गये।
 - अजहर मसूद को वैश्विक आतंकी घोषित करने पर सुरक्षा परिषद के सदस्यों ने इसका स्वागत किया।
 - ई.वी.एम. के मुद्दे पर 22 विपक्षी दल चुनाव आयोग पहुंचे।
- **22 मई**
 - चुनाव आयोग विपक्ष की माँग को खारिज किया और कहा कि पर्ची का मिलान आखरी में ही होगा।
 - वायुसेना की पहली महिला फाइटर पायलट फ्लाइट लेफ्टिनेंट भावनाकांत युद्ध के लिये तैयार हुई।
 - इंडोनेशिया में विपक्षी प्रत्याशी प्रबोलो ने हार नहीं स्वीकारी हिंसा भड़की 6 की मौत हुई 200 से ज्यादा घायल हुए।
- **23 मई**
 - श्रीनगर 12 लाख का इनामी आतंकी जाकिर मूस मुठभेड़ में मारा गया।
 - लोकसभा 2019 के चुनाव परिणाम आये 353 एन.डी.ए के पक्ष में सीटें गईं

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी महानायक बने कांग्रेस को मात्र 52 सीटें मिली महागठबंधन भी फुस्स हुआ।
- **24 मई**
 - सूरत : तक्षशिला काम्प्लेक्स में शार्ट सर्किट से आग लगने के कारण कोचिंग के 20 छात्र मरे।
 - नई दिल्ली : सुखोई विमान से गाइडेड बम का सफल परीक्षण किया।
 - काठमांडू : एवरेस्ट चोटी पर चढ़ने वालों संख्या 200 हुई ट्राफिक जाम के बाद दम फूलने से 8 लोगों की मौत हुई।
- **25 मई**
 - संसद के सेंट्रल हाल में नरेन्द्रमोदी को 353 सदस्यों ने अपना नेता चुना।
 - अमेरिका सऊदी अरब को 56 हजार करोड़ रुपये के हथियार बेचने की मंजूरी डोनाल्ड ट्रम्प ने दी।
 - जेट के पूर्व अध्यक्ष नरेश गोयल को एयरपोर्ट पर विदेश जाने से रोका।
- **26 मई**
 - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी माँ हिरा बेन के पैर छूकर आशीर्वाद लिया।
 - चुनाव आयोग ने 10 मार्च से लागू आचार संहिता हो हटाया।
 - अमेठी : बरोलिया गाँव के सुरेन्द्र सिंह पूर्व प्रधान एवं स्मृति ईरानी के निकट साथी की हत्या हुई।
- **27 मई**
 - एक्शन डायरेक्टर वीरू देवगन का निधन हुआ वे अजय देवगन के पिता थे।
 - हार के बाद कांग्रेस 13 प्रदेशाध्यक्षों ने इस्तीफा दिये।
 - लाहौर : गुरु नानक महल में तोड़फोड़ हुई

- पाक प्रशासन ने कीमती सामान बिकवा दिया।
- **28 मई**
 - खरसावाँ (झारखंड) : नक्सलियों ने आई. ई. डी. विस्फोट किया 26 जवान घायल हुए।
 - बाराबंकी : जहरीली शराब पीने से 17 लोग मरे।
 - टी. एम. सी. के 2 विधायक भाजपा में शामिल हुए।
- **29 मई**
 - वित्त मंत्री अरूण जेटली ने पत्र खिलकर मंत्री मंडल में शामिल होने से मना किया।
 - राँची : चारा घोटाला मामले में 16 दोषियों को 3-4 साल तक सजा सुनाई गई।
 - जामनेर (गुना) : जामनेर थाना के पचकुंडिया में बहु की बिदा को लेकर हुए झगड़े में प्रभुलाल बंजारे की मौत हुई।
- **30 मई**
 - नरेन्द्र दामोदार दास मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली उनके साथ 57 मंत्रियों ने भी शपथ ली मेनका गाँधी राजवर्धन सहित 36 मंत्री बाहर किये गये 26 नये , 31 पुराने 53 भाजपा के एवं 5 अन्य दल के मंत्री शामिल किये गये।
 - गिरिडीह : मदरसा के इमाम जाकिर हुसैन को दुष्कर्म में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।
- **31 मई**
 - ममता बनर्जी के सामने जय श्री राम के नारे लगाने पर 10 लोग गिरफ्तार हुए।
 - एडमिरल करमवीर सिंह नौ सेना प्रमुख बने।
 - अनिता भाटिया संयुक्त राष्ट्र की यू.एन. वी मेन की उप कार्यकारी निदेशक बनी।

इसे भी जानिये शारीरिक बीमारियाँ

शरीर के अंग	संबंधित बीमारी	शरीर के अंग	संबंधित बीमारी
जोड़ों की सूजन	आर्थराइटिस	आँखें	केटेरेक्ट ग्लाइ
गला, श्वास नली	डिप्थीरिया		कोमा, ट्रेकोमा
चमड़ी	एग्जीमा	पैंक्रियाज	डायबिटिज
यकृत	(पीलिया) जोन्डिस	थाइराइड ग्रंथि	(गोइटर) गण्डमाला
छाती	प्लूरिसी	स्पाइनल कॉर्ड	
दाँत तथा मसूड़े	पायरिया	(रीढ़ की हड्डी)	
जोड़ों में	गठिया या रयुमैटिज्म	तथा मस्तिष्क फेफड़े	मैनिन्जाइटिस निमोनिया
तंत्रिका तंत्र माँशपेशी	टिटनस		ट्यूबरकुलोसिस
त्वाचा, तंत्रिकाएँ	कुष्ठ	समस्त अंग आंते	टाइफाइड
आँत आहारनली	हैजा	हड्डियाँ	रिकेट्स
श्वसन तंत्र	काली खाँसी	जनन अंग	सिफलिस
फेफड़े, लाल		बड़ी आँत	दस्त
रक्त कणिकाएँ	प्लेग मूत्र मार्ग रूधिर प्लीहा	आँत का अग्रभाग सुजाक, श्वेत प्रदर	अतिसार

कविता

अचानक ही वहाँ का मंजर बदल गया

* संस्कार फीचर्स *

अचानक ही वहाँ का मंजर बदल गया ।
तीरगी से बच गया उजाले से छल गया ॥
मौत जोहती रही बाट उग्र भर ।
उसके करीब आते ही वापिस निकल गया ॥
दीपक की रोशनी में रोशन हुए मगर ।
दीप के नेह में मगर पतंगा जल गया ॥
किशती चली भक्तधार तक झुमती हुई ।
तूफ़ों से प्रेम कर समुन्दर मचल गया ॥
जिन्दगी के सफर में किस-किस से करूँ शिकायतें ।
अहसास रोशनी का तीरगी में ढल गया ॥



दिशा बोध

मूक बधिर कौन



प्रश्न 1. बहरा कौन है ?

उत्तर जो आत्म हित की बात नहीं सुनता है ।

प्रश्न 2. गूँगा कौन है ?

उत्तर जो समय पर प्रिय बोलना नहीं जानता है ।

प्रश्न 3. मृत्यु क्या है ?

उत्तर मूर्खता ही मृत्यु है ।

प्रश्न 4. बहुमूल्य क्या है ?

उत्तर जो अवसर पर दिया जाये वह बहुमूल्य ?

प्रश्न 5. मरण समय तक चलने वाली शल्य क्या है ?

उत्तर गुप्त रीति से किया गया अयोग्य कार्य ।

प्रश्न 6. प्रयत्न कहाँ करना चाहिये ?

उत्तर सदैव विद्या के अभ्यास के लिये प्रयत्न औषधिवान के लिये करना चाहिये ।

प्रश्न 7. अनादरणीय कौन है ?

उत्तर दुष्ट जन, पर धन, पर दारा में अनादर करना चाहिये ।

प्रश्न 8. रात दिन किसका चिंतन करना चाहिये ?

उत्तर संसार की असारता का चिंतन करना चाहिये ।

आचार्य श्री विद्यासागर जी का संस्कृत और प्राकृत भाषा में योगदान

✽ ब्र. जयन्ती दीदी (जबलपुर) ✽

आचिनोति हि यच्छास्त्रं आचारे-स्थापत्युत स्वयंमाचरते यस्तु स आचार्य प्रचक्षते जो शास्त्रों का मन्थन करके उसके सार को लोगों के आचरण के लिये प्रतिपादित करता है, और स्वयं उसके अनुसार आचरण करता है, वह आचार्य कहलाता है। (बिनोवा जी)

भारतीय संस्कृति में भाषागत सौष्ठव से संस्कारित/परिमार्जित संस्कृत भाषा, प्रधान भाषा मानी जाती है। आचार्य श्री विद्यासागर जी बीसवीं शताब्दी के उत्तरकाल के लब्ध प्रतिष्ठ और लोक विश्रुत संस्कृत महाकवि हैं। उनका कृतित्व अत्यन्त गहन एवं बहुआयामी है। उनकी मातृभाषा कन्नड़ है फिर भी संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली, उड़िया आदि प्रान्तीय भाषाओं के अतिरिक्त आंग्लभाषा के भी जानकार हैं। आचार्य श्री के संस्कृत-साहित्य को पाकर संस्कृत-साहित्य जगत ऋणी है। लोकमंगल की भावना से ओतप्रोत पावन उपदेशमयी वाङ्मयों में सतत् अवगाहन करने से परम मुक्ति का पात्रता प्राप्त होती है।

आचार्य श्री विद्यासागर जी के संस्कृत में वे सभी गुण विशद् रूप से मुखरित हैं, जो एक उच्चकोटि के संस्कृत-साहित्य में आवश्यक होते हैं। उनके संस्कृत साहित्य में, संस्कृत काव्यों में नीतितत्त्व, नैतिक, धार्मिक, सुभाषितोपदेश एवं गुरुभक्ति की प्रशस्त-प्रशस्ति के दर्शन उपलब्ध होते हैं। उनके साहित्य की महिमा सोने में सुगन्ध की भांति विलक्षण और अनिर्वचनीय है।

संस्कृत काव्यों में लक्षित शब्द गुम्फन, पद लालिव्य गुम्फन एवं ललित पदावली का समावेश है। उनके काव्यों में विभिन्न कल्पनायें बड़ी ही ललित और मनोरम हैं। उनका यह संस्कृत-साहित्य विद्वज्जन बोध्य है। उनके साहित्य में महाकवि कालीदास, महाकवि भारवि, महाकवि माघ, महाकवि विद्यासागर जी स्वयं संस्कृत काव्य जगत में अमरत्व को प्राप्त हैं। इसके सभी काव्य शान्त रस से मण्डित हैं। शान्त रस की रसरज के रूप में प्रतिष्ठा करने वाले आचार्य श्री विद्यासागर जी इसके प्रवर्तक कहे जा सकते हैं। उनका समस्त संस्कृत काव्य आकर्षक और मनो मुग्धकारी है। इनके काव्यों का अध्ययन अलौकिक और अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करता है। इनका साहित्य मुक्ताहार में नायकमणि की तरह वैशिष्ट्य रखता है।

जैन परम्परा में अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर के बाद की लिखित वाङ्मय आचार्य श्री पुष्पदंत जी, भूतबलि जी, आचार्य श्री कुन्दकुन्द जी आचार्य श्री उमास्वामी जी, आचार्य अकलंक देव, आचार्य श्री समन्तभद्र आदि अनेक आचार्य हुए, जिन्होंने अपनी कृतियों से असंख्यात भव्यों को मोक्ष का राही बना दिया। बीसवीं शताब्दी के महान् संस्कृत, विद्वान् ऋषि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज जैसे साधक साहित्यकार हुए, जिन्होंने जयोजय, वीरोदय, सुदर्शनोदय, दयोदय जैसे संस्कृत में महाकाव्य लिखे, वहीं हिन्दी में प्रचुर साहित्य का निर्माण किया। आचार्य श्री ज्ञानसागर के प्रधान पट्टशिष्य, मेघावी होनहार शिष्य इक्कीसवीं शताब्दी में प्रतिभाशाली प्रभावक श्रमण, संस्कृति के तिलक, महान तपस्वी आचार्य श्री विद्यासागर जी ने भी अनेक संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी काव्य-कृतियों को लिखकर उस परम्परा को जीवित ही नहीं रखा अपितु नव-नूतन रूप देकर उसे अग्रणी किया।

भारत वसुधा धर्म-प्रधान है। भारत की संस्कृति अध्यात्म प्रधान है। इस भूमि पर मात्र जीवन

जीने की कला ही नहीं सिखाई जाती, अपितु आत्म-कल्याण की शाश्वत विद्या भी सिखाई जाती है, जिसके माध्यम से प्राणी भौतिक सुख के साथ आत्मिक/ आध्यात्मिक सुख को प्राप्त कर आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होकर, अलौकिक सुख की अनुपम, अद्भुत-अनुभूति भी करता है। इस शाश्वत विद्या का ज्ञान महान् आत्माओं के मार्ग दर्शन के बिना सम्भव नहीं है।

इन्हीं महान् आत्माओं की श्रृंखला में वर्तमान में इस धरा पर एक अनूठा नाम है आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज का जो दिगम्बर परम्परा के सर्वश्रेष्ठ, महान् तपस्वी ज्ञान के भण्डार, सरस्वती के पुत्र, युग प्रवर्तक, जन-जन के पथ प्रदर्शन, समाज एवं देश हर पहलू पर सुधारात्मक, गम्भीरता से विचारक एवं चिन्तक हैं। जिन्होंने अपनी तपस्या, व्यक्तित्व एवं कृतित्व से पाश्चात्य संस्कृति के अन्धकार में डूबते हुये भारतीय समाज को वह सब दिया है, जिसकी आज भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को महती आवश्यकता है। आपके साहित्य में दार्शनिक पुट, धार्मिक चेतना, नैतिक जागरण, मानवीय गुण एवं गम्भीर चिन्तन परिलक्षित होता है, इतने ग्रन्थों का विशाल अध्ययन एवं लेखन किसी अदम्य शक्ति, सरस्वती के वरद् पुत्र को ही सम्भव है। इस शक्ति को दैवीशक्ति कहें या परिश्रम प्राप्त विचक्षणता। धन्य है आचार्य श्री जी को जिन्होंने अपने विशाल, निरन्तर अध्ययन से सरस्वती के भण्डार को और भी अधिक प्रदीप्त किया है। प्रतीत होता है, आचार्य श्री जी स्वेच्छानुसार लेखनी को स्वरूप देते हैं, अब लेखनी इतनी आज्ञानुसार चलती है और इनकी इच्छा को पूर्ण रूप से अङ्गीकार करती है। आचार्य श्री जी कुशाग्रबुद्धि, बहुभाषाधिकारी (रसानाग-नर्तनीविद्या) विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं। पूज्यवर आचार्य श्री जी द्वारा निम्न संस्कृत साहित्य सृजित किया है।

1. शारदानुति- प्रस्तुत स्तुति में आचार्य श्री जी के द्वारा द्रुतविलम्बित छन्द के 12 पदों में जिन सरस्वती माता के गुणों का सालंकारिक चित्रण करते हुए स्वकीय संसार-ताप-शाप को शमित करने की कामना की गई है। आचार्य श्री जी की प्रथम संस्कृत रचना है, जो मदनगंज (किशनगढ़) राजस्थान चातुर्मास 1971 में लिखी गई है। स्तुति में रचना काल एवं स्थान का उल्लेख नहीं मिलता है।

संस्कृत साहित्य में षट्शती का स्थान :

1. श्रमण शतकम् - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की शतक के रूप में प्रथम संस्कृत रचना है, श्रमण शतकम्। दिगम्बर श्रमणों के सम्बोधनार्थ लिखा है, जिसमें कहा है कि श्रमण को बाहरी प्रवृत्तियों से हटकर आभ्यन्तर चेतना को अपनी अनुभूति का विषय बनाना ही साध्य होना चाहिये। आत्मा और परमात्मा के अलावा समस्त विकल्पो को त्यागकर, इन्द्रिय एवं परिषह विजयी बनना चाहिये रत्नत्रय की सिद्धि कर निर्विकल्प बन, अपने आत्म स्वरूप में रम कर अपनी आत्मा को भगवान जैसी आत्मा बनाना चाहिये। यह शतक आर्या छन्द में निबद्ध है। उक्त शतक का काल वी.नि.सं. 2501 और अजमेर (राजस्थान) में लिखा गया।

यस्य हृदि समाजातः प्रशमभावः श्रमणो यथाजातः।

दूरोऽस्तु निर्जरातः कदापि मा शुद्धात्मजातः ॥36॥

दिगम्बर मुद्रा को धारण करने वाले दिगम्बर साधु शुद्धात्म भाव एवं प्रशमभाव का त्याग न करें क्योंकि प्रशमभाव से ही जन्म-मृत्यु का क्षय होता है।

न निश्चयेन नयेन किन्त्वलङ्कृतस्तद्विषयेण येन।

यस्तं ब्रजेनयेन मुक्तिसंयमिनस्तान् येन ॥ 48॥

परिग्रहवान मुनि हो या गृहस्थ किसी को भी शुद्धात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती निश्चय नय से रहित साधु भी यदि विषयों को त्यागकर संयमाचरण से अलंकृत होता है तो भी परम्परा से मोक्षमोर्गी हो सकता है लेकिन किसी भी स्थिति में गृहस्थ एवं असंयमी को मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

उक्त शतक में पद लालित्य ध्वनि तथा अर्थगौरव पदे-पदे विद्यमान है। पांच श्लोकों में मंगलाचरण, जिसमें वर्धमान स्वामी, भद्रबाहु, आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य ज्ञानसागर जी एवं सरस्वती का स्तवन किया है। 94 श्लोकों में कवि ने श्रमण को आध्यात्मिक दृष्टि से हेय-उपादेय का उपदेश दिया है। अन्त में 100वें श्लोक में अपनी लघुता एवं 101वें श्लोक में गुरु ज्ञानसागर जी एवं स्वयं का नाम श्लेषात्मक ढंग से निबद्ध किया है। 6 श्लोकों में प्रशस्ति दी है, जिसमें कहा है कि ज्ञानसागर के शिष्य विद्यासागर ने विक्रम संवत् 2031 वैशाख शुक्ला पूर्णिमा को यह काव्य पूर्ण किया कुल 107 छन्द हैं। यह अनुवाद-शब्दानुवाद न होकर भावानुवाद है।

2. भावना शतकम् - इस काव्य ग्रन्थ में संसार का बीभत्स चित्रण करते हुए जनमानस को संसार से निकलने के उपायों पर विचार किया गया है। लघुकाय रूप में या कहो खण्डकाय रूप में रचित अत्यन्त अर्थगाम्भीर्य पूर्ण है, जिससे गागर में सागर उक्ति चरितार्थ होती है। इस शतक काव्य में आचार्य महाराज ने 84 आर्याछन्द तथा 16 मुरजबन्धों में अनुष्टुप छन्द का प्रयोग किया है। मुरजबन्ध का प्रयोग 10, 16, 22, 28, 34, 40, 46, 52, 58, 64, 70, 82, 88, 94 एवं 100वें नम्बर के छन्दों में किया है? चारों गतियों में मनुष्यगति ही सर्वश्रेष्ठ है, इससे ही निर्वाणपद की प्राप्ति होती, तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध सोलह कारण भावना के भाने से मनुष्यगति वाला प्रारंभ करता है। तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध कर्म भूमि के मनुष्य सम्यग्दृष्टि केवली, श्रुत केवली के पादमूल में करते हैं।

सोलहकारण भावनाओं के नाम 1. निर्मलदृष्टि 2. विनयावनति: 3. सुशीलता: 4. निरन्तर ज्ञानोपयोग: 5. संवेग: 6. त्यागवृत्ति: 7. सत्तप 8. साधुसमाधि-सुधासाधनम् 9. वैयावृत्यम् 10. अर्हतभक्ति: 11. आचार्य स्तुति: 12. शिक्षगुरो: स्तुति: 13. भगवद् भारती भक्ति: 14. विमलावश्यकानि 15. धर्म प्रभावना: 16. प्रवचनवत्सलता:। आचार्य श्री जी आध्यात्मिक कथ्य का आश्रय लेकर भी इतनी सरसता और कमनीयता को साथ षोडश कारण भावनाओं का चित्रण किया है कि सहृदय पाठक इसके आस्वादन से रस विभोर हो उठता है। यह शतक यमक काव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। आचार्य श्री जी की शैली अत्यन्त सशक्त विकसित/विलसित एवं परिष्कृत है। जिस स्थान पर जैसा भाव या प्रसंग है, उसी के अनुसार पदावली का प्रयोग है। वर्ण की विलोम शक्ति में आपका अपूर्व अधिकार है। विचक्षण बुद्धि के धनी संसार से विरक्त महानयोगी विद्यासागर जी एक साक्षात् जीवित सरस्वती देवी के पुत्र (वरद) हैं। कृतज्ञता प्रकाशन में पूज्य गुरुदेव ज्ञानसागर जी को ही कारण मानते हैं। उनके ही आशीर्वाद से वे विद्यासागर कहलाते हैं।

श्री ज्ञानसागर कृपा परिपाक एव, यद् भावनाशतक काव्य मद्यारिहन्तु।

अध्यास्य सुश्रयमतोऽस्य सुशस्य कस्य, विद्यादि सागर तनुर्लघुना भवामि॥101॥

यह श्री ज्ञानसागर जी गुरुदेव की कृपा, करुणा का परिपाक, फल ही है कि मेरे द्वारा पापरूप शत्रुओं को नष्ट करने वाला भावनाशतकम् नाम का काव्य बन सका। अतः अतिशय प्रशंसनीय आत्मा वाले इन गुरु का आश्रय प्राप्त कर मैं एक साधारण मनुष्य शीघ्र ही विद्यासागर हो रहा हूँ।

मंगलकामना - भारतः सर्वदेशेषु भातु भेषु शशिप्रभा।

वनेऽप्यत्र सन्तः, सन्ति मृगेन्द्रा विभया इव॥5॥

उनकी राष्ट्र के प्रति महती मंगल कामना है कि भारतवर्ष सब देशों में उस तरह सुशोभित हो

जिस तरह नक्षत्रों में चन्द्रमा की प्रभा। जिस प्रकार वन में सिंह निर्भय रहते हैं, उसी प्रकार इस देश में सत्पुरुष वन में भी निर्भय रहे। यह शतक फिरोजाबाद (सुहागनगरी) उ.प्र. से शुरू होकर श्री महावीर जी (राजस्थान) ईसवी सन् 11-05-1975 को पूर्ण हुआ।

3. निरञ्जन शतकम् - आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा रचित निरञ्जन शतकम् अत्यन्त मनोहारी स्तुति काव्य है। उक्त शतक द्रुतविलम्बित वृत्त में निबद्ध है। निरञ्जन का अर्थ-वह आत्मा जो सभी प्रकार के अञ्जन (विकारों) से पूर्णतः मुक्त है, चेतना की विशुद्धावस्था ही निरञ्जनत्व है। निरञ्जन शब्द व्यक्ति वाचक न होकर गुण है, अतः प्रस्तुत शतक में अतीत, अनागत तथा वर्तमान की जितनी भी निरञ्जन आत्मायें हैं, उन सभी की स्तुति की गई है। कवि ने अपने आराध्य को किसी सम्प्रदाय एवं वाद की सीमा में नहीं बांधा, इससे उनके उदार दृष्टिकोण का परिचय मिलता है। कवि का आराध्य मुक्तात्मा या मुक्त चेतना है जो स्थान और काल की सीमा से निर्बन्ध ओर निर्द्वन्द्व है। निरञ्जन के उपासक तथा साधक के मुखारविन्द से निरञ्जन की आराधना हेतु जो वाग्वैखरी प्रस्फुटित हुई है, अपने निरञ्जन शतकम् का रूप धारण कर लिया है।

ममभतिः स्तवनेत्र सरोवरे, किमु तदा विफलो न सरोवरे।

अमृतनीर निधौ जिन निष्क्रिय ! विषकणास्तु तथापि स निष्क्रियः॥68॥

हे प्रभो ! आपके स्तवन रूपी सरोवर में यदि मेरी मति रहेगी तो स्वल्प मद का अस्तित्व, उसी प्रकार हानिकारक नहीं होगा, जिस प्रकार पिप्लु सिन्धु में विषबिन्दु का अस्तित्व प्रभावशाली नहीं होता।

त्वयिरतोऽहि शठो भव वैभव, समुपलब्धय ईश्वर वैभव।

कृषिमतः कुरुते विधिहा वनौ, सकनकेन हलेन स हा ! वनौ॥80॥

कितनी मनोहारी ! भावाभि व्यक्ति है, जो व्यक्ति सांसारिक वैभव को प्राप्त करने के लिये आपकी स्तुति करता है, वह मानो स्वर्णमय हल से वन में कृषि का प्रयास करता है। जिस प्रकार पारसमणि का स्पर्श लोहकों को स्वर्ण में परिवर्तित कर देता है, उसी प्रकार उक्त शतक भक्त को भी भगवान बनाने में समर्थ है। यह शतक वीर नि.सं. 2503 ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को अंतिम श्रुतकेवली (श्रीधर) की निर्वाणभूमि कुण्डलपुर (म.प्र.) में पूर्ण हुआ।

सभी प्रकार के अञ्जनों के प्रक्षालन के लिये यह शतक प्रक्षालन फेन (साबुन) के सहस्र कार्यकारी है। अतः निरञ्जन पद के लिप्सु, मुमुक्षु, साधकों के लिये यह शतक आरोग्य बर्द्धिनी औषधी के समान है जिसका निरन्तर सेवन कर मोक्षमार्ग के पथिक, नवीन, स्फूर्ति एवं चेतना प्राप्त कर स्वगन्तव्य की ओर उन्मुख होते हैं। भावनाशतकम् / तीर्थंकर कैसे बनें।

4. परिषह जय शतकम् - वीर नि.सं. 2508 (कोनी जी) - संस्कृत साहित्य के इतिहास के साक्ष्यानुसार शतक काव्य के रचनाकारों में दक्षिण भारतीय कवियों का विशेष-इतिहास प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत के इन्हीं शतक प्रणेता कवियों की परम्परा में प्रसिद्ध दक्षिण कर्नाटक प्रान्त के मूल निवासी महाकवि आचार्य श्री विद्यासागर जी का नाम है। इतिहास में भारतवर्ष की सम्पूर्ण भारतीय साहित्य परम्परा में अनेक मनीषी हुए हैं, जिनके द्वारा एक से अधिक शतकों का निर्माण हुआ है, फिर भी पाँच से अधिक शतकों के निर्माता, विद्वान, कवि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। भारतीय साहित्य परंपरा में मूककवि के द्वारा अधिकतम पांच शतक लिखे गये हैं। 1. आर्या शतकम् 2. कटाक्ष शतकम् 3. मन्दस्मित शतकम् 4. स्तुति शतकम् 5. पादारविन्द शतकम्।

दिगम्बर जैन परम्परा में परम पूज्य गुरुदेव श्री विद्यासागर जी महाराज का यह अनुदान हमें गौरव प्रदान कर रहा है कि जिन्होंने षट्- शतकों की रचना की है। दिगम्बर परम्परा में मान्य श्रमणों

के 22 परिषदों तथा उन पर विजय प्राप्त करके आध्यात्मिक उपायों का काव्यात्मक वर्णन है। यद्यपि शतक का कथ्य अत्यन्त दुरुह तथा नीरस है लेकिन साधक कवि की माधुर्य मंडित लेखनी के संस्पर्श से यह शतक अतिशय रूप से मधुर हो गया है। माधुर्य और प्रसाद का प्रसार इस शतक की विशेषता है। परिषद सहन करने वाले मुनियों को अनेकशः सत् शब्दों द्वारा सम्बोधन किया है। जैसे सत्कार-पुरस्कार में कहा है- कि हे श्रमण ! तुझे जब गणधर परमेष्ठी आदि नमस्कार करते हैं तो फिर अन्य के नमस्कार से क्या प्रयोजन ? यथा-

गणधरैः प्रणतोस्ति यदा सवयं- समिति पूरतः सुखदः स्वयम्।

किमु तदाप्य सतां प्रणतेर्नु रिति वदन्ति बुधः सुमते नु ते ॥82॥

5. सुनीति शतकम् - वीर नि. सं. 2509 ईशरी (महावीर जयन्ती पर पूर्ण हुआ) धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, चेतना को जागृत करने के लिये आचार्य गुरुदेव ने सुनीति शतकम् की रचना की। आचार्य महाराज ने भव्य जीवों को धर्ममार्ग की और प्रेरित किया शास्त्रों से आजीविका चलाने वाले विद्वानों को सावचेत किया- जैसे

मूल्येन पुष्टं च मलेन तुष्टं नवीन वस्त्रं न हि नीर पायि।

गुरुपदेशामृतरागहीनः शास्त्रोपजीवी खलु धीधरोऽपि ॥2॥

सामाजिक चेतना को झकझोरने वाली नीति-

शरीर-सम्बन्धि-कुलादियोगा-न्मुने मुनित्वं न मलत्व मेतु।

वर्णेन कृष्णास्तु भवन्तु गावः कदापि कृष्णं न तु तत्पयोस्तु ॥3॥

जैसे- काली गाय का दूध धवल ही होता है, वैसे शरीराश्रित कुल, जाति परिवार आदि के प्रभाव से प्रभावित न होकर मुनि का मुनित्व मलिनता को प्राप्त नहीं होता। धार्मिक-चेतना के झूठे दम्भीजनों को फटकारने वाली नीति/सुनीति

असंयते श्रीमति धीमतीह, विना प्रयत्नेन मदस्य भावः।

दृष्टेरभावात् किल तापसेऽपि, निद्रा निशायां समुदेति प्रायः ॥19॥

सम्यक्त्व रहित, श्रीमन्तों, धीमन्तों और उग्रतपस्या करने वाले तापसों में, असंयमियों में मद वैसे ही आ जाता है, जैसे निशा के आगमन पर निद्रा। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने वाली सुनीति-

पापं बपुर्ज त्वणुक प्रमाणं वाक् कायजं यच्च ततोऽधिकं वा।

चित्तस्य कार्यं तु सुमेरूमानं पापान्मनोऽतोस्तु सदा सुदूरम् ॥48॥

देहाश्रित पाप के आश्रम से वचनाश्रित आस्रव अधिक है, इन दोनों से अधिक मनाश्रित, पापाश्रव होता है, अतः मन से सदैव सावधान रहो।

6. चैतन्य चन्द्रोदय शतकम्- (वी.नि.सं. 2520 ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी कुण्डलपुर पूर्ण) चैतन्य चन्द्रमा की समस्त कलाओं का प्रकट होना सौ चैतन्य-चन्द्रोदय है। उक्त शतक में वर्णित विषय-अशुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग और उसका फल। इस शतक में चारों अनुयोग समाहित हैं। चक्रवर्ती भरत के उदाहरण से प्रथमानुयोग। गुणस्थानों में तीनों उपयोगों का वर्णन होने से करणानुयोग। अणुव्रत महाव्रतों का उल्लेख होने से चरणानुयोग। न्याय का विषय होने से द्रव्यानुयोग। फिर भी मुख्य रूप से यह ग्रन्थ द्रव्यानुयोग विषयक है, क्योंकि अध्यात्म और न्याय का विषय इसमें बहुलता से विद्यमान है। सभी सारों में एक चैतन्य ही सार है। उक्त शतक की कारिका में वीतराग भगवान सशक्त निमित्त बताया -

जिनस्य बिम्बं तु निरायघं तन, नाशाग्रदृष्टिं विदधद्विवस्त्रम्।

यद्दर्शनाद्वा क्षयमेति कर्म, निघतिनामादि निकाचिताख्यम् ॥30॥

दिगम्बर आयुध अस्त्र-शास्त्रों से रहित, नासाग्र दृष्टि ऐसे जिन बिम्ब दर्शन से निघति-निकाचित जैसे भारी कर्म क्षपित होते हैं। इससे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है।

उपसंहार में चैतन्य चन्द्रोदय का स्वरूप-

आगो न रागो न तथा परागो, भोगोपभोगौ न हि यत्र योगः।

जरा न जातिस्तनुजा तु जातु, सिद्धान् मुदेऽहं मनसा नमामि ॥11॥

येषां न चायुर्मरणं कुतः स्यान् मृत्योरभावे किमु तत्र भीतिः।

गतिम्रति नास्ति यतिः समस्ति सिद्धान् मुदेऽहं मनसां नमामि ॥112॥

जहाँ न आग है (न पाप) न राग है न गन्ध है न ही भोग और उपभोग के साधन हैं, न योग है, न बुढ़ापा है, शरीर से उत्पत्ति नहीं है, न कभी जन्म है, ऐसे उन सिद्धों को मैं प्रसन्नता के लिये मन से नमस्कार करता हूँ। जिनकी आयु नहीं है, उनका मरण भी कैसे होगा ? मृत्यु के अभाव होने पर वहाँ सिद्धों में भय क्यों होगा ? वहाँ गमन, मनन, यतन भी नहीं है। ऐसे सिद्धों को प्रसन्नता के लिये मैं मन से नमस्कार करता हूँ।

चम्पूकाय में आचार्य श्री जी ने द्वावर की द्वा के उपलक्षण से जैन दर्शन की नींव अहिंसा दया करुणा का हृदयकारक चित्रण किया जो कि अप्राप्य है। अन्य भी संस्कृत ग्रन्थों के पद्यानुवाद-

इष्टोपदेश- इसका दो बार पद्यानुवाद किया एक बसन्ततिलका छन्द एवं ज्ञानोदय छन्द वी.नि. सं. 2507

समाधि शतक (समाधि सुधा शतक) 1971 मे मदनगंज किशनगढ़ (राजस्थान)

नौ भक्तियाँ (भक्ति पाठ)

- | | | |
|----------------|----------------------|------------------|
| 1. सिद्ध भक्ति | 2. पंच महागुरु भक्ति | 3. आचार्य भक्ति |
| 4. योगि भक्ति | 5. चैत्य भक्ति | 6. निर्वाण भक्ति |
| 7. शांति भक्ति | 8. नंदीश्वर भक्ति | 9. चारित्र भक्ति |

स्वयंभू स्तोत्र (समन्तभद्र की भद्रता) वी.नि. सं. 2506 महावीर जयन्ती सागर

रत्करण्डक श्रावकाचार (रयणमंजूषा) वी.नि. सं. 2507 कोनीजी

आप्तमीमांसा (देवागम स्तोत्र) वी. नि. सं. 2507 ईसरी सुगन्ध दशमी।

आप्त परीक्षा- वी. नि. सं. 2407 में यह कृति पूर्ण होने के पहले खो गई अतः अप्राप्य।

कल्याण मंदिर स्तोत्र - वी. नि. सं. 2506 मुक्तागिरी, किशनगढ़ मदनगंज (राज.) दोबार

पात्र केशरी (जिनेन्द्र स्तुति) वी. नि. सं. 2508 नैनागिरी (म.प्र.)

आत्मानुशासन- (गुणोदय)- वी.नि. सं. 2506 (मुक्तागिरि)

स्वरूप सम्बोधन-

द्वारशानुप्रेक्षा- 51 गाथा का पद्यानुवाद बसन्ततिलका छन्द सन् 1979 थूवौन जी

एकीभाव स्तोत्र-

आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा प्राकृत ग्रन्थों की गाथाओं का पद्यानुवाद समणसुत्तं (जैन गीता)

इसमें राष्ट्रीय आदर्श, समभाव, सर्वोदय और सर्वधर्म की प्रवृत्ति का समावेश है-उक्त सूत्र चार खंडों में विभाजित हैं- प्र.खं.-ज्योतिर्मुख 151 पद्य, द्वि एवं मोक्षमार्ग 396 पद्य तृ. खं.

तत्त्वदर्शन 72 पद्य, च.खं. स्यादवाद 97 पद्य से बसन्ततिलका छन्द में लिखे गये। वि. सं. 2042 भाद्र शु. तीज स्थान-कुण्डलपुर क्षेत्र।

गोमटेश थुदि (गोमटेश अष्टक)

ग्रन्थराज समयसार जी (कुन्दकुन्द का कुन्दन) भूल ग्रन्थ के 443 छन्द एवं 12 छन्दों में प्रशस्ति दी गई है। यह वी. नि. सं. 2503 शरद पूर्णिमा कुण्डलपुर।

अध्यात्म अमृत कलश (निजामृत पान) यह 278 पद्यों में 23 दोहे और 1 बसन्तति का छन्द कुल 302 छन्दों का पद्यानुवाद वी.नि. सं. 2504 महावीर जयन्ती कुण्डलपुर क्षेत्र।

अष्ट पाहुड- 529 पद्यों को किया वी. नि. सं. 2505 दीपावली नैनागिरि

नियमसार- 187 पद्य वी.नि. सं. 2507 धूवौन जी (म.प्र.)

योगसार- सन् 1971 किशनगढ़ मदनगंज अपभ्रंश भाषा का यह इसका 109 पद्यानुवाद बसन्ततिलका छन्द में

बारसअणुवेक्खा- आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी द्वारा 51 गाथाओं में 12 अनुप्रेक्षाओं में बसन्ततिलका छन्द में पद्यानुवाद किया।

पञ्चास्तिकाय- 181 गाथाओं का पद्यानुवाद किया कुण्डलपुर से किशनगढ़ मदनगंज के पंचकल्याण में जाते समय विहार काल में रास्ते में जयपुर में 1 माह तक अस्वस्थ होने से पांडुलिपि खो गई, आज वह अप्राप्य है।

प्रवचनसार- अप्राप्य है।

द्रव्यसंग्रह- यह शौरसेनी प्राकृत भाषा में 1 हजार वर्ष पूर्व आचार्य नेमिचन्द्र जी महाराज ने 58 गाथाओं में गागर में सागर के रूप में रचा था। इसका कवि ने दो बार पद्यानुवाद किया, बसन्ततिलका छन्द में अभाना में वीर नि. सं. 2504 ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को। दूसरी बार ज्ञानोदय छन्द में वीर नि. सं. 2517 वैशाख शुक्ल तृतीया मुक्तागिरि जी।

आचार्य पूज्यपाद जी, भक्तियों की अंचलिका- हिन्दी पद्यानुवाद किया

विज्जाणुवेक्खा- यह महाकवि द्वारा रचित आठ गाथाओं में- तीर्थंकरों के गुणों का गुणगान किया है। यह रचना परमगति के स्वरूप को व्यक्त करती है। दूसरी गाथा में श्री सर्वज्ञ देव को प्रणाम किया। नैनों को नयात्मक कहा। संसार की असारता से मुक्त श्रमणों को स्मरण किया। भावनासार के समयसार तथा अन्तिम परिणति कहा। चिन्तन का महत्व। दृष्टान्त के माध्यम से आत्मा के सम्यक् स्वरूप को दर्शाया और इसी के अन्त में साधुजनों के वचनों को संसार सागर से पार करने वाला कहा है।

अन्त में बड़ी उपलब्धि- दुर्लभता से जिन महान् ग्रन्थों के दूर से ही दर्शन होते थे, जिनके दर्शन करने के लिये सभी यात्री इकट्ठे होकर द्रव्य (रु) को देते थे ऐसे श्री धवला जी महाधवला जी, महाबन्धादि ग्रन्थों की वाचना पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महारा द्वारा ही शुरुआत हुई। सर्वप्रथम वाचना का लाभ सागर दिगम्बर जैन समाज को 1980 में हुआ। फिर जबलपुर मढ़िया जी, खुरई, ललितपुर (उ.प्र.) आदि स्थानों पर लाभ प्राप्त हुआ। ये उपलब्धि साधु-समाज को बहुत ही बड़ी उपलब्धि है, और प्राकृत, भाषा का ज्ञान संस्कृत भाषा का ज्ञान सभी साधुवर्ग त्यागी वर्ग को कराया, इसका श्रेय पूज्य आचार्य गुरुदेव को ही जाता है। हमेशा आचार्य श्री जी कहते हिन्दी नहीं देखना, गाथा से अर्थ सीखो, सूत्र से सीखो टीका से मूल से अर्थ सीखो। निकालो।

बहभाषा में निष्णात कैसे हुए- आचार्य जी कहा करते थे कि न हम सामान्य हिन्दी

समझते, न मारवाड़ी समझते, न संस्कृत ही जानते हमें तो गुरुदेव से तीन भाषायें रत्नत्रय के रूप में मिली। साहित्यिक हिन्दी सीखने के पूर्व से ही संस्कृत और प्राकृत भाषा का अध्ययन गुरुदेव के पास ही चल रहा था। आचार्य ज्ञानसागर जी पूज्य गुरुदेव का जैनैन्द्र व्याकरण से व्याकरण का अध्ययन कराया, ब्रह्मचारी अवस्था में 2 माह तक व्याकरण का अध्ययन कराया। दीखा के बाद तो बिल्कुल बाजू में बिठाकर के संस्कृत का अध्ययन कराते थे। गुरु और शिष्य की वार्तालाप की भाषा मुख्यतः संस्कृत थी।

आचार्य श्री द्वारा प्राकृत संस्कृत भाषा में साहित्य रचकर जी भाषा जगत को महनीय योगदान मिला है वह कालजयी है क्योंकि-

इतिहास में गुप्तकाल को स्वर्णिम युग कहा गया है, क्योंकि इस काल में संस्कृति, साहित्य आदि का चहुंमुखी विकास हुआ है, तो आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने आधुनिक युग की इक्कीसवीं शताब्दी को स्वर्णिम युग बना दिया है ऐसे गुरुवर है चरणों में शत् शत् नमन।

कविता

वंशवाद की फसल

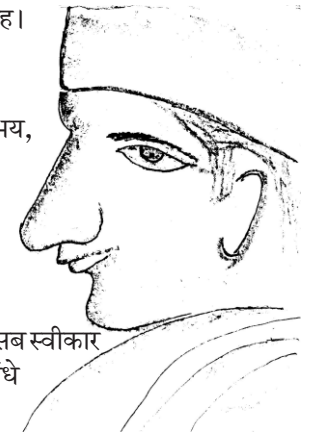
✽ सुभाषचन्द्र सरल (अशोकनगर) ✽

भारतीय लोकतंत्र में अधिसंख्य राजनैतिक दलों से,
आन्तरिक लोकतंत्र, विदा हो गया है
अधिसंख्य नेता राष्ट्र हितैषी नहीं, लोकहितैषी नहीं,
स्वार्थी और जीहजूर होने लगे हैं नेतृत्व की बफादारी के कशीदे गढ़ते हुये,
राजतंत्र के दरबारियों की तरह।

लोकतंत्र की पालना कानून का सम्मान, किया जाता है, दिखाने के लिये,
जनता को भ्रमाने के लिये या ताजपोशी का जश्न मनाने के लिये प्रत्याशियों की भीड़,
जहाँ संसद, विधानसभा नगरपालिका और पंचायतों तक, बेशुमार दिखाई देती है
हर जगह महत्वाकांक्षा और साहस की, भ्रमर दिखाई देती है विलुप्त हो जाती है,
राजनैतिक दलों के आन्तरिक निर्वाचन में, गधे के सिर से सींगों की तरह।

वंशवाद की फसल, राजनैतिक दलों की दलदल में,
आन्तरिक निर्वाचन की हलचल में, लहलहाती नजर आती है,
महत्वाकांक्षा और साहस, काफूर नजर आता है सदाशयता कहे या भय,
निर्वाचन निर्विरोध, सम्पन्न होने लगे हैं प्रमुख का बेटा प्रमुख
या उपप्रमुख बनता दिखाई देता है,
योग्यता और अनुभव को लाँधकर, राजशाही की तरह।

नेता नाम के जीव आदाब बजाते हुये,
जयकार लगाते हुये वंशवाद के पक्ष में सिंचनकर,
फसल उगाते हुये, लामबंद दिखाई देते हैं हार के बाद हार, फिर हार, सब स्वीकार
नेतृत्व परिवर्तन पर नहीं विचार स्वार्थ, भय और लालच के खूंटों से बँधे
गुलाम मानुष की तरह।



आओ सीखें : जैन न्याय

अभाव प्रमाण की श्रेणी में पृथक् से क्यों नहीं

मीमांसक दर्शन अभाव नामक स्वतंत्र प्रमाण मानता है जबकि अभाव प्रमाण का अंतर्भाव प्रत्यक्ष प्रमाण में हो जाता है। मीमांसक मत के तर्क अभाव प्रमाण सिद्ध करने हेतु निम्न है -

1. इस भूतल पर घट नहीं हैं इस कथन से निषेध्य घट के आधार भूत वस्तु भूतल के ग्रहण आदि सामग्री से अभाव प्रमाण की उत्पत्ति होती है।
2. अभाव प्रमाण की दूसरी सामग्री प्रतियोगी का स्मरण है।
3. यदि अभाव को अर्थान्तर नहीं माना जाता है अभाव मूलक व्यवहार कैसे बन सकता है ?
4. यदि भूतल से घटाभाव अर्थान्तर नहीं हैं वो घट से युक्त भूतल में घट भी नहीं हैं ऐसा बोध होना चाहिये। किन्तु ऐसा बोध नहीं होता है। अतः जैसे भूतल में घट अर्थान्तर है वैसे ही घट अभाव में अर्थान्तर है।

मीमांसक मत के द्वारा अभाव प्रमाण को स्वतंत्र सिद्ध करने के लिये जो तर्क दिये गये उनके खंडन करने के लिए जैनाचार्य अपने कुछ तर्क देते हैं वे निम्न हैं -

तर्क - 1 - (विकल्पात्मक तर्क) - निषेध्य घट का आधार भूत भूतल प्रतियोगी घट से कैसे प्रतीत है ? (अ) संसृष्ट प्रतीत है अथवा (ब) असंसृष्ट प्रतीत है।

संसृष्ट प्रतीत मानने पर बाधा -

1. यदि प्रत्यक्ष से प्रतियोगी घट से संसृष्ट भूतल की प्रतीति होती है तो घट का अभाव ग्रहण करने के लिये अभाव प्रमाण की प्रवृत्ति नहीं हो सकती है।
2. यदि अभाव प्रमाण की प्रवृत्ति मानते हैं तो वह प्रमाण नहीं होगा क्योंकि घट के रहते हुये भी वह उसके अभाव को जानने में प्रवृत्त हो रहा है।

असंसृष्ट पक्ष में आपत्ति -

1. अभाव प्रमाण ही व्यर्थ होता है। क्योंकि प्रत्यक्ष से घट से असंसृष्ट रहित भूतल की प्रतीति हो जाती है। यदि भूतल प्रतियोगी घट से रहित है। इस प्रकार का ज्ञान अभाव प्रमाण से माना जाये तो अनवस्था दोष आयेगा क्योंकि अभाव प्रमाण भी प्रतियोगी से असंसृष्ट अन्य वस्तु का ग्रहण होने पर प्रवृत्त होगा। और प्रतियोगी की असंसृष्टता का ज्ञान अभाव प्रमाण के द्वारा ही होगा।

तर्क - 2 का स्पष्टीकरण -

तर्क 2 में विकल्पात्मक तर्क उत्पन्न होता है कि (अ.) तो वस्त्वन्तर भूतल से संसृष्ट प्रतियोगी का स्मरण होता है अथवा (ब) पक्ष) असंसृष्ट प्रतियोगी का स्मरण होता है।

(अ) पक्ष मानने पर आपत्ति (1) भूतल से संसृष्ट रूप प्रतियोगी का स्मरण मानने पर अभाव प्रमाण की प्रवृत्ति नहीं हो सकती है क्योंकि प्रत्यक्ष से भूतल युक्त प्रतीत होता है।

(ब) असंसृष्ट (रहित) प्रतियोगी का ग्रहण होने पर ही उस घट रूप में स्मरण हो सकता है अन्यथा नहीं तो ऐसा मानने पर अभाव प्रमाण ही व्यर्थ हो जाता है। क्योंकि प्रत्यक्ष से भूतल से संबद्ध प्रतियोगी के सद्भाव का ग्रहण हो रहा है। और वस्तु मात्र का प्रत्यक्ष से ग्रहण मानने पर प्रतियोगी और अप्रतियोगी का व्यवहार ही नहीं बनता है। यदि अनुभूत वस्तु में प्रतियोगी के स्मरण के बिना अभाव की प्रतिपत्ति नहीं होती है तो अनुभूत प्रतियोगी का स्मरण होना चाहिये। और

उसका अनुभव अन्य असंसृष्ट रूप से मानना चाहिए तथा उसकी भी अन्य असंसृष्ट रूप से प्रतिपत्ति होगी उससे अन्यत्र प्रतियोगी के स्मरण पूर्वक होगी इस तरह से अनवस्था दोष आता है। यदि कहा जाये कि प्रतियोगी भूतल के स्मरण से घट की अन्य असंसृष्टता की प्रतीति होती है और उसके स्मरण से भूतल की अन्य असंसृष्टता की तो परस्पर श्रय दोष आता है।

अतः प्रत्यक्ष से भावांश की तरह अभावांश भी मानना चाहिये अभाव प्रत्यक्ष का विषय है और अभाव को स्वतंत्र प्रमाण नहीं माना जा सकता है। तथा अभाव प्रमाण की उत्पत्ति सामग्री तथा विषय का अभाव होने से उस अभाव को अलग से प्रमाण मानना उचित नहीं है।

विशेष - पदार्थ से भिन्न कोई अभावांश नहीं होता है यदि हो तो वह अभावांश पृथक् मानना पड़ेगा और पर अपर रूप अभाव की परिकल्पना करने से अनवस्था दोष आता है। अतः अभाव भाव से पृथक् कोई पदार्थ नहीं है।

अभाव मूलक व्यवहार की समस्या - मीमांसक अर्थान्तर रूप अभाव पदार्थ नहीं मानने पर अभाव मूलक व्यवहार कैसे चलेगा ? अब प्रश्न यह होता है कि घट सहित भूतल को घटाभाव कहा जायेगा फिर घट रहित भूतल को घटाभाव कहा जाये। प्रथम पक्ष में प्रत्यक्ष से विरोध आता है और दूसरे पक्ष में नाममात्र का भेद है।

इस प्रकार मीमांसक द्वारा उठाई गयी समस्या को जैनाचार्य एक गुत्थी उलझाना कहते हुये तर्क देते हैं क्या भूतल घटाकार है कि जिसमें घट नहीं है ऐसा कहने पर प्रत्यक्ष विरोध होता है क्योंकि भूतल घटाकार रहित होने से घट नहीं यह सत्य है।

एक और मीमांसक तर्क - यदि भूतल से घट अभाव अर्थान्तर नहीं है तो घट से युक्त भूतल में भी घट नहीं है ऐसा बोध होना चाहिये किन्तु ऐसा नहीं होता है।

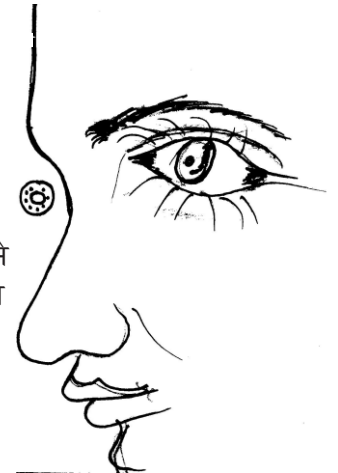
प्रस्तुत तर्क के खंडन में जैनाचार्य कहते हैं कि मीमांसक का यह कथन उचित नहीं है क्योंकि घट में कभी न पाये जाने वाले भूतलगत असाधारण धर्मों से युक्त भूतल को घटाभाव कहा जाता है किन्तु घटयुक्त भूतल घट है। और भूतल के संयोगरूप, साधारण धर्म से विशिष्ट होने से घटयुक्त रूप से परिणमित है अतः भूतल घट रहित है ऐसा उस समय नहीं कहा जा सकता है।

कविता

सी.सी. कैमरा और आदमी

✽ वीरेन्द्र भूपत ✽

मैं अखबार पढ़ रहा था विषय था सी.सी. कैमरा
पढ़कर लगा आदमी शून्य है कारण सी.सी. कैमरा
हालांकि सी.सी. कैमरा बनाया आदमी ने चलाया आदमी ने
लेकिन फिर भी आदमी का अस्तित्व शून्य बड़ा गजब लगा
देखे आदमी भगवान की नजर से नहीं डरता
मगर डर रहा है सी.सी. कैमरे से गजब है यार आदमी
डरना था भगवान से व बुरे कर्मों से मगर
डर रहा है बस आदमी सी.सी. कैमरे से गजब है रे इंसान



कहानी

मेरी वन्दना हुई

सूर्यमुठ में सूर्य ऊपर उठता आ रहा था लाल लाल आग का गोला सा अपनी प्रचंडता और व्यापकता का परिचय सबको करा रहा था सुनसान गलियों में धीरे-धीरे चहल-पहल बढ़ रही थी जन चर्चा जोर पकड़ती जा रही थी मधुवन के इतिहास में यह एक पहली घटना थी 26 अप्रैल 2019 सबके लिये आँखे गीली करने का दिन बन गया था बिना चाहे भी जब हाल में कोई भी दृष्टि डालता तो उसके नयन आद्र अवश्य हो जाते थे धीरे-धीरे जन समूह बड़ी संख्या में एकत्रित हो गया सूरज की किरणों ने मुनि श्री पुष्पदन्त सागर के पंचतत्वीय चरणों का स्पर्श किया यह कहा नहीं जा सकता कि सूरजने कैसा अनुभव किया परन्तु दुखी जनों को मूक सम्बोधन अवश्य दिया तुम जिस निस्पृही आत्मा पर आंसू बहा रहे हो उनकी आत्मा देह परिवर्तन कर देहली बदल चुकी है वह मेरी ऊँचाईयों से भी सब दूर जा चुकी है उनकी चेतना सदैव अमर रही है चेतना को तुम सब नहीं देख पाये उस चेतना ने तुम सबको जरूर देखा जिसकी तुमने कैमरे से फोटो खींची जिसको तुमने मोबाइल में कैद किया। जिसकी वन्दना तुम अधूरी कह रहे हो उसने तो वन्दना शुरू ही कहां की थी जो वन्दना करा रही थी वह शक्ति वह चेना अधूरी वन्दना छोड़ नहीं



सकती है तुम विश्वास करो अफसोस नहीं। सूरज आसमान से कह रहा था तुम और हम समय के साथ सदियों से मधुवन में दस्तक दे रहे हैं अजितनाथ से लेकर पार्श्वनाथ तक बीस तीर्थकर की आत्माओं ने देह परिवर्तन नहीं किया अपितु वे देहातीत हो गये उनकी छाया तक भी यहाँ नहीं छूटी उनके स्वरूप को हर भक्त याद करके अपनी आत्मा को सिद्ध

भगवान के समान अनुभूत कर सके इसलिये इन्द्र ने हर तीर्थ कर के चरण चिन्हों को श्री सम्मोद शिखर के प्रत्येक कूट पर स्थापित किये हैं मुझसे मत पूछो कि किसने कितनी तपस्या यहाँ की है सागरों की लम्बी काल यात्रा साधना के साथ व्यतीत करने वाले अनंत साधकों ने मेरे देखते-देखते अपनी शरीर की वर्गणाओं को लोक में व्याप्त कर दिया।

भौतिक आँखों से नहीं दिखने वाला चेतन तत्त्व ऊर्ध्वगति को प्राप्त हो गया वे इतने ऊँचे उठे कि लोक के शीर्ष भाग पर विराजमान हो गये। सच्चिदानंद में लीन परमात्मा के चरण चिन्हों को इस तीर्थ पर मेरे समक्ष इन्द्र ने स्थापित किये। नग्न दिगम्बर भेष धारण करने वाले तीर्थकर महापुरुष भी साधक अवस्था में यहाँ पर आये। और वे भी ध्यान योग से अपनी आत्मा को निर्मल बनाकर सिद्ध हो गये।

हम जब सेवायतन की छत पर बैठे थे तब

सूरज की किरणें हवा के झोंकों के माध्यम से हमें कुछ हिलाया और पूछा, ये डबडबाती आँखें क्या आप लोगों के अधीरता का प्रतीक नहीं है? छोड़ो! यह शोक का समय नहीं है, चिन्तन का समय है। यह बुढ़ा का राजकुमार सचमुच में राजकुमार था। ये भालचंद्र का पुत्र गिरिजादेवी का लाड़ला अभयकुमार.....

रमेशचन्द्र और दिलीप कुमार का कोई मेरे ही सामने तो वैराग्य के रंग में रंगा था। मुझे वो दिन याद है जब यह युवावस्था में था, स्कुटर लेकर व्यापार के कार्य से गया था। कॉलेज कॉलनी के पास से जब गुजर रहा था तभी एक ट्रक की चपेट में आ गया। ट्रक पूरा गुजर गया। स्कुटर भी चकनाचुर हो गयी। सारे लोगों ने समझा था कि राजकुमार हमसे विदा हो जाएगा लेकिन नहीं। संयम के पथ पर उन्हें चलना था। लोग उन्हें अस्पताल ले गये। लेकिन राजकुमार का एक नियम था। रात में मैं कुछ खाऊँगा पिऊँगा नहीं। जो कुछ होगा सुबह होगा। दवा भी सुबह लूँगा। मैंने वह सब चर्चा सूनी। मैं भी अवाक् रह गया कि इस दृढ़-संकल्पी के सामने मौत भी ठिठक गई। काल ने अपने हथियार डाल दिये। कुछ दिन बाद राजकुमार ने जिनेन्द्र देव के दर्शन किये। पार्श्वनाथ भगवान के सामने फिर एक संकल्प लिया। क्षणभंगुर जीवन का कोई भरोसा नहीं है। क्यों न इस जीवन को गुरु चरणों में समर्पित कर दिया जाय। जन्म के साथ मृत्यु, यौवन के साथ बुढ़ापा और लक्ष्मी के साथ नाश सदैव पीछा करता रहता है। जीवन पखेरू के पंख कब बिखर जाये कोई पता नहीं है। जब स्वर्ग के इंद्र को भी कोई मृत्यु से नहीं बचा पाया तब मैं कहाँ उनके सामने टिक पाऊँगा? इस नश्वर संसार में कोई भी शरण नहीं है।

राजकुमार का चिन्तन निरन्तर अन्तर्मुखी

होता गया और राजकुमार एक दिन अपने घर के पिंजड़े से बाहर निकल गया। राजकुमार का गन्तव्य अमरकंटक बना।

मैंने अमरकण्टक में देखा जब सन् 1994 था कड़केकी ठंड, सुविधाशून्य तीर्थ, प्रकृति के मनोरम दृश्यों से भरपूर, हर दिशायेँ सुखद, भूमी का प्रत्येक कण धार्मिक। मेरी किरणें जब ओंस के मोती बटोर रही थी तभी एक लम्बी कदकाठी का युवा हाथ में श्रीफल लिये धवल कुर्ता-पैजामा में, गौरववर्णधारी युवा युगान्तकारी सन्त यतिराज आचार्य विद्यासागर जी के चरणों में श्रीफल लिये घुटनों के बल बैठा था। गुरु के सम्मुख नमोऽस्तु नमोऽस्तु निवेदित कर रहा था। गुरुवार आपके विशाल वटवृक्ष के नीचे संसार की तपती दोपहरी में मैं त्रस्त हो चुका हूँ। मुझे छाँव दो, पाँव दो, शरण दो। पहली बार यतिराज के अधरों पर दुर्लभ मुस्कान देखी। हाथ उपर किया। मैंने कब तुम्हें मना किया। मैंने तो सिद्धांतसागर के माध्यम से मुक्तागिरि में 12 मई को पुछवाया था कि क्या तुम्हारा मन दीक्षा लेने का है। पर तुम्हारा कोई सही उत्तर नहीं आया इसलिये मैं चुपचाप रह गया। और एक दीक्षा का सुअवसर झल्लु भैया तुम्हारे हाथ से गुजर गया। तब राजकुमार झल्लु भैया ने गुरुदेव के चरणों में सिर रखकर आँसुओं से चरणों को प्रक्षालित करते हुए कहा गुरुदेव हम अज्ञानी है। हम आपकी भाषा और भावना नहीं समझ पाते। आप संकेत में बोलते हैं। हम उसकी व्याख्या नहीं समझ पाते। क्षमा करें, शरण दें अन्यथा शरण नाऽस्ति त्वमेव शरणं मम्। हे गुरुदेव! इस पंचमकाल में आप जैसा धीर, वीर, ज्ञान-ध्यान, तप से युक्त कोई संत मुझे नहीं मिला है। मैं तो अब आपके चरण छोड़कर कहीं और जाने वाला नहीं हूँ। शायद तुम वहाँ नहीं थे। कहाँ थे? अच्छा, पिण्डरई में

थे। वहाँ से विहार करके छपारा पहुँचे थे। छपारा से पनागर पहुँचे। गुरुदेव अमरकण्टक में ही रहें। तब झल्लू भैया ने मेरे सामने देखते कर एक मुनि, ऐलक, क्षुल्लक की जो तन-मन से वैयावृत्ति की इसके फलस्वरूप हर साधु के मुँह से राजकुमार उर्फ झल्लू भैया की अतीव प्रशंसा निकलती थी। कभी कभी उनसे गलतियाँ भी हो जाती थी। तब ऐलक अभयसागर जी एक ही बात कहा करते थे- झल्लू भैया, अफसोस मत करों। जो चलता है वहीं गिरता है। जो काम करता है, गलतियाँ उसी से होती है।

साधना के शिखर पर एक-एक कदम बढ़ाना राजकुमार ने प्रारम्भ कर दिया था। अकेली चटाई पर सोना, ठंड में भी मात्र चटाई ओढ़ना, तसी दोपहरी में भी नंगे पैर चलना, एक बार भोजन करना, दिनभर साधुओं की वैयावृत्ति करना, तीन बार सामायिक करना, सब तरह से साधना के साँचे में शरीर को ढालते चले जा रहें थे। गुरु आज्ञानुसार संतों के साथ विहार करने लगे थे। उनकी सभी व्यवस्थाओं करते थे जैसे राम की सेवा लक्ष्मण हर तरह से करते थे। इसी तरह से राजकुमार भी सभी साधुओं की सेवा करने का व्रत धारण कर चुके थे। इसी अवस्था में आपने तीर्थयात्रा का भी अभियान पूर्ण कर लिया था। सम्मेल शिखर की यात्रा आपने अपनी ब्रह्मचारी अवस्था में की थी।

मैं वह दिन भी याद कर रहा हूँ। जब मैंने इंदौर में उदासीन आश्रम में कई वर्षों तक साधना करते हुए देखा। मैं सूरज विश्वव्यापी हूँ। मेरी किरणें सब जगह फैलती रहती हैं और मेरे स्क्रीन पर सभी घटनाओं का चित्रण होता है। एक वह चित्रण भी आज मेरे स्मृति पटल पर आ रहा है जब 22 अप्रैल, सन् 1999 का दिन था, नर्मदा नदी कलकल प्रवाह से बह रही थी। उसके अथाह जल में मेरा प्रतिबिम्ब मनोहर हो

रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं माँ नर्मदा के आड़ने में अपना मुखड़ा निहार रहा हूँ। मैंने जब नेमावर की रेत को तपा दिया तभी धवल वस्त्रों में सिर पर मुकुट लगाये वैरागियों का टोला एक ऊँचे मन्च चल जा रहा था। उनमें राजकुमार झल्लू भैया भी थे। केशलोंच हो जाने पर भी चेहर पर किसी प्रकार का मालिन्य नहीं था। आज आहार पानी कुछ नहीं लिया था, क्योंकि आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरण सान्निध्य में उनकी प्रतिमुद्रा बननी थी और देखते ही राजकुमार झल्लू भैया मुनि पुष्पदंत सागर बन गये। नेमावर सिद्धोदय तीर्थ की सबसे बड़ी उपलब्धि राजकुमार झल्लू भैया को मिली, जिन्होंने जीवन के एक लक्ष्य को पूरा कर लिया। सात वर्ष गुरु चरण सान्निध्य में रहने के बाद मुनि कुन्धुसागर के साथ गुरु आज्ञा से धर्म प्रभावना करने के लिये पृथक् विहार कर गये। देखते देखते मुनि श्री इंदौर गोम्मटगिरि, अमरकंटक, तिलवारा घाट, नेमावर, पूनः अमरकंटक, तिलवारा घाट, बीनाबारहा, तारादेही, राहतगढ़, बेगमगंज, बरगी, खुरई, आरोन, महरोनी, जरूआ खेड़ा, छतरपूर, जैसी नगर, पिण्डरई, वर्षायोग व्यतीत करके दिगम्बर 2018 में आपका और कुन्धुसागर जी का पुनः मिलन हुआ। तब आपने मुनि श्री कुन्धुसागर जी से एक बात कही कि आप और हम मिलकर सम्मेल शिखर की वन्दना करें और अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी का ध्यान करके अपनी शुद्धात्मा की अनुभूति करें। मुनि श्री कुन्धुसागर ने कहा, हे मुनिश्वर ! इतना बड़ा काम करने के लिये गुरुदेव के आशीष लिये हम इतने बड़े कार्य में सफल नहीं हो सकते। मुनि श्री पुष्पदंत सागर जी की वह बात मुझे याद हो चुकी है। इस देह के सम्बन्ध का कोई भरोसा नहीं है। आप तो चलो, मेरा साथ दो। मेरी इच्छा तो यही है अनंत सिद्ध परमेष्ठियों के

मोक्षधाम, बीस तीर्थकरों की पुण्य भूमि सम्मेल शिखर में समाधि की जाय।

मुनि श्री कुन्धुसागर और पुष्पदंतसागर ने करेली से विहार कर दिया और विहार करते करते भाग्योदय तीर्थसागर में गुरुचरण सान्निध्य में पहुँच गये। गुरुदेव ने आशीष दिया और ये भी कहा जल्दी करो, नहीं तो सूर्य तम तमाएगा। गुरुदेव को पुष्पदंत सागर जी ने विनम्र नमोऽस्तु किया और यात्रा प्रारम्भ कर दी। पटनागंज में सहस्रफणी पार्श्वनाथ के दर्शन किये। गढ़कोटा में पटेरिया अतिशय क्षेत्र के दर्शन करने के उपरान्त सीधे कुण्डलपुर की ओर बढ़ गये। बड़े बाबा के दर्शन कर उनका भी आशीर्वाद लिया और 25 फरवरी को आगे बढ़ गये। 4 मार्च को कटनी से शिखर जी की ओर सतत विहार हो गया। उनके साथ में भी बादलों के साथ छिपता-छिपाता चल रहा था। उनके साथ मुनि कुन्धुसागर और ऐलक सिद्धांतसागर भी चले रहें थे। काफिला आगे बढ़ता गया। 52वें दिन मुनि श्री का प्रवेश मधुवन में हो गया। गाजे बाजे के साथ मधुवन के श्रावकों ने गुणायतन परिवार ने मुनिसंघ की अगवानी की।

गुणायतन के मध्य प्रदेश भवन में जब मुनि श्री चर्चा हो रही थी तब वे आहार में मात्र छाँछ और रोटी ले रहें थे और उनका सबसे पहले आहार समाप्त हो गया। सामायिक के पहले उन्होंने वन्दना करने की घोषणा कर दी। और पूर्णरूपेण वे तैयार हो गये। सामायिक पूर्ण होने के बाद मौसम ने करवट बदली। मैंने भी बादलों में अपना मुँह छुपाना शुरू कर दिया। मेरा तेवर कम हुआ और मुनि श्री लगभग ढाई बजे ही तीर्थवन्दना के लिये तैयार हो रहे थे। परंतु ऐलक सिद्धांतसागर जी की सहमति नहीं हुई और यात्रा एक घंटे टल गई। मुनि श्री के पुनः पुनः आग्रह पर 3.45 पर फिर यात्रा शुरू

हुई। चढ़ाई चढ़ना शुरू हुआ। मुनि श्री पगडंडियों का आलम्बन लेकर उत्साह पूर्वक अग्र चढ़ते चले जा रहें थे। धीरे-धीरे कलिकुण्ड पार्श्वनाथ से आगे बढ़े। मौसमी अनुकूलता देखकर लगभग 5 बजे भाता घर पहुँच गये। वहाँ पहुँचने के बाद मुनि श्री पीछे चलने लगे। साथ के लोग, गृहस्थ श्रावक समय समय पर मुनि संघ का चित्रांकन अपने मोबाईल में कैद करते चले जा रहें थे। मनोविनोद का दौर भी चल रहा था। अल्प कौतुहल के साथ सीढ़ियाँ चढ़ते चले जा रहे थे। जैसे ही सीता नाल के समीप पहुँचने वाले ही थे कि मुनिसंघ थककर एक शीला पर बैठ गया। जब घड़ी में 5.11 हो गये थे तब ब्र. राजेश टंडा ने मुनिसंघ के साथ अपनी सेल्फी ली और पुनः मुनिसंघ उठा। मुनि श्री पुष्पदंत सागर जी पीछे चलने लगे। वे मात्र चार सीढ़िया चढ़े और बैठ गये। उन्होंने अपना चश्मा उतारा और लेट गये। मुनि कुन्धुसागर जी ने पीछे मुड़कर देखा और कहा, महाराज जी ! थक गये, बैठ गये, अरे ! लेट गये ! अरे ! क्या हो गया। इनको तो करेली जैसा हो गया। णमो अरिहंताण... णमो सिद्धाण... णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं... णमो लोय सव्व साहूणं अरे ! पुष्पदन्त सागर महाराज जी कहकर उनका सिर अपने जंघा पर रख लिया। ऐलक सिद्धांत सागर जी ने कहा महाराज जी अभी तो वन्दना पूरी करना है। पर वहाँ से कोई उत्तर नहीं आया। अनन्त मौन वे धारण कर चुके थे। शरीर से नाता तोड़ चुके थे। उनकी चेतना किसी दूसरी देह की ओर चली गयी थी। मैंने तब कहा था, वे मेरे से ऊपर चले गये। उनकी वन्दना देव अवस्था में पूरी हो गई और वे मेरे हँसकर कह रहे हैं, हे सूरज ! इनसे कह दो मेरी वन्दना पूरी हो गई।

वर्तमान समय में प्राकृतिक चिकित्सा की आवश्यकता

✱ नरेन्द्र कुमार जैन (महरौनी) ✱

प्राकृतिक उपचार क्यों आवश्यक है ?

आज विश्व के प्रत्येक देश और समाज में निरन्तर रोगों की और रोगियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। नित-नयी-नयी औषधियों के विज्ञापनों से समाचार पत्र और दूर-दर्शन व्यस्त हैं। चिकित्सा-व्यवसाय इतना अधिक उन्नति कर रहा है कि बाजार में असली और नकली दवाओं के बीच भेद कर पाना कठिन होता जा रहा है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि अधिकांश मामलों में रोगों का कारण दवाओं के पार्श्ववर्ती दुष्परिणाम ही होते हैं।

वर्तमान में जो परम्परागत ढंग से चिकित्सा प्रणाली प्रचलन में है- वह औषधि के प्रयोग पर जोर देती है। बच्चे में प्रारम्भ से ही यह संस्कार पड़ जाते हैं कि मात्र औषधि का प्रयोग ही हमें रोग मुक्त व स्वस्थ कर सकता है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं। रोगी होने में मरीज का कोई दोष नहीं है। रोगों का कारण तो वायरस, वेक्टीरिया व अन्य जीवाणु होते हैं- उन्हें समाप्त करने से रोग समाप्त हो जावेंगे। चिकित्सा जब मरीज का उपचार करता है तो वह मरीज को कभी नहीं बताता कि रोगी होने में व्यक्ति स्वयं दोषी है। उसे अपनी जीवन शैली व आहार, भोजन सामग्री की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिये। ऐसा न कहकर डॉक्टर सिर्फ दवा खाने की सलाह देता है। एन्टी वायोटिक्स, दर्दनाशक ट्रेक्विलाइजर्स, हारमोन्स को उत्तेजित करने वाली दवायें व विटामिन, मिनरल्स व एनजाइम्स की आपूर्ति के लिये सप्लीमेन्ट्स लेने की सलाह देता है। वास्तविकता यह है कि आज का चिकित्सक दवा कम्पनियों का एजेन्ट बनकर उपचार करता है। विभिन्न प्रकार की जाँचे कराने के नाम पर पैथालोजिस्ट से उसका कान्ट्रैक्ट होता है। हमारे मेडीकल कॉलेज, और उनमें पढ़ाये जाने वाले कोर्स ये सभी इन दवा कम्पनियों के प्रभाव में रहते हैं- यह सब दवा कम्पनियों का एक फण्डा व धोखा धंधा है- इसके पीछे दवा व्यवसाय की वृद्धि व मरीज का आर्थिक शोषण है। इतना ही नहीं, बल्कि मरीज को निरन्तर भयभीत रखना कि वातावरण में असंख्य वेक्टीरिया व वायरस भरे पड़े हैं जिन्हें नष्ट करने के लिये एन्टीवायोटिक्स का प्रयोग करके ही रोग मुक्त हो सकते हैं। अतः मरीज भयभीत पराश्रित होकर डॉक्टर की शरण लेता है और एन्टीवायोटिक्स और अन्य उत्तेजक दवाओं का प्रयोग करने को मजबूर रहता है। जरा सा कष्ट आने पर औषधि लेने के लिये डॉक्टर के पास भागता है यहाँ, वही कहावत चरितार्थ होती है- मूर्ख मरीज और ठग डॉक्टर - इन्हीं से यह चिकित्सा व्यवसाय फल-फूल रहा है। एक बार दवा लेने के चंगुल में फंसने पर आजीवन दवा लेते रहने की सलाह दी जाती है। दवा लेने का आदी व अभ्यस्त बनाकर व्यक्ति दो स्थायी मरीज बना दिया जाता है। हमारी अज्ञानता ही हमारे रोगों का कारण है।

हमारा चिकित्सकीय अंध विश्वास-

जिस प्रकार प्राचीन काल से प्रत्येक समाज में ऐसे पाखण्डी व धूर्त लोग होते आये हैं जो व्यक्ति को अनेक प्रकार से भयभीत रखकर उसका आर्थिक शोषण करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते

रहें हैं। भूत प्रेत, व्यन्तर, राक्षस, ग्रह, नक्षत्र आदि अदृश्य शक्तियों को व्यक्तियों पर होने पर प्रकोपों के लिये कारण बताकर वे इनके एजेन्ट बनकर मूर्ख जनता को ठगा करते थे। आज वहीं काम बेक्टीरिया, वायरस आदि के विशेषज्ञ बनकर हमारे मेडीकल कालेजेज में दवा व्यवसाय को बढ़ाने वाली शिक्षा दी जाती है। मेडीकल-शिक्षा इतनी महंगी किये जाने के पीछे यही कारण है कि यह रूपया कमाने का व्यवसाय बन रहा है। बचपन से ही दवा ग्रहण करने के संस्कार मरीज में डाले जाते हैं। परिणाम स्वरूप दवा के साथ जीना व्यक्ति की जीवन शैली का अनिवार्य अंग बनता जा रहा है। प्राचीन काल के अंध-विश्वास धर्म और धार्मिक क्रिया काण्डों के आड़ में भक्तों को भयभीत करके, पंडों पुजारी भविष्य वक्ताओं के द्वारा प्रचारित किये जाते हैं। आधुनिक समय में विज्ञान की खोजों और प्रयोग शालाओं में किये गये परीक्षणों के निष्कर्षों की आड़ लेकर वैज्ञानिक रूप देकर आधुनिक दवाओं के प्रयोग की दुहाई दी जाती है। प्रायः निम्न प्रकार की खोजों व परीक्षणों को दवा कम्पनियों द्वारा दवा दिया जाता है।

अमेरिका के न्यूरोवैज्ञानिक तथा दक्षिण फ्लोरिडा के विश्वविद्यालय से सम्बद्ध प्रोफेसर डॉ. डेविड डायमण्ड ने कुछ निष्कर्ष पेश किये हैं। वे कहते हैं अच्छी समझी जाने वाली दवा भी अन्ततः स्वास्थ्य के लिये घातक होती है। भारत और विदेशों के चिकित्सकगण विभिन्न मेडीकल एसोसियेशन्स एवं व्यावसायिक समितियों की सिफारिश पर विश्वास कर दवायें लिखते हैं। यह सर्व विदित है इन एसोसियेशन्स तथा समितियों में जो विशेषज्ञ होते हैं-उन्हें बड़ी दवा कम्पनियों से, भारी भरकम राशि मिलती है- जिनके द्वारा वे कम्पनियों के उत्पादों की बिक्री बढ़ाने के लिये तथ्यों को जानबूझ कर तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं। आगे डॉ. डायमण्ड बताते हैं कि अपने बड़े हुए वजन और कोलेस्ट्रॉल की अधिकता के लिये उनके कार्डियोलॉजिस्ट ने स्टेटिन पर आधारित दवा निर्धारित की। डॉ. डायमण्ड एक चिकित्सक हैं ही, एक वैज्ञानिक भी हैं। अतः उन्होंने निर्धारित दवा का सेवन शुरू करने से पहले तथ्य का पता लगाने के लिये कुछ अनुसंधान करना शुरू किया। अन्त में उन्होंने जो कुछ पाया वह भयावह था।

यू तो कॉलेस्ट्रॉल को कम करने के लिये दुनियाभर के डॉक्टर्स स्टेटिन आधारित दवा की सिफारिश करते हैं। यह दवा अरबों डॉलर वाले उद्योग का अंग है।

यह उल्लेखनीय है जहाँ स्टेटिन कॉलेस्ट्रॉल को कम करता है, वहीं वह अनेक प्रतिकूल प्रभाव भी पैदा करता है- जैसे ऐंठन, मस्कूल डिस्ट्रॉफी, मस्तिष्क सम्बन्धी गड़बड़ी, स्मरण शक्ति का हास आदि।

डॉ. डायमण्ड का कहना है कि अब तक इसका कोई विश्वसनीय साक्ष्य नहीं मिल सका जो यह प्रमाणित कर सके कि स्टेटिन से घटाया हुआ कॉलेस्ट्रॉल दिल के दौरों का खतरा कम करता ही है, खासकर उम्रदराज लोगों में। फिर भी चिकित्सकगण स्टेटिन की सलाह देते हैं, और मरीज भी इस दवा के लिये आग्रही बने रहते हैं।

डॉ. डायमण्ड की सलाह है कि जिनका कॉलेस्ट्रॉल का मान 300 तक पहुँच गया, जबकि इसका स्वीकार्य स्तर 220 है, उन्हें कॉलेस्ट्रॉल का बढ़ा हुआ स्तर कम करने के लिये आहार और

व्यायाम को ही उसका साधन बनाना चाहिये। वैसे तो लोगों को स्टैटिन का प्रयोग तत्काल बन्द कर देना चाहिये, क्योंकि यह कॉलेस्ट्रॉल से ज्यादा हानिकारक है।

केवल स्टैटिन की बात ही नहीं है- बल्कि आमघरों में वैसी अनेकों दवायें हो सकती हैं जिनमें लाभ पहुँचाने के गुण तो नदारत हैं ही, यदि उनका सेवन जारी रखा गया तो वे स्वास्थ्य के लिये गम्भीर खतरे पैदा कर सकती हैं। वैसी दवाओं में विटामिनो के सप्लीमेन्ट, टॉनिक आदि बाजारों में अटे-पड़े हैं, जो अधिक समय तक उपयोग किये जाने पर बेकार और हानिकारक साबित हो सकते हैं। लेकिन, यदि सन्तुलित आहार का सेवन किया जाये तो विटामिनो ने सप्लीमेन्ट की कोई जरूरत नहीं है। ये सप्लीमेन्ट तो केवल दवा कम्पनियों को ही मुनाफा मुहैया कराते हैं।

प्रस्तुत लेख माला में हमारा उद्देश्य जनमानस में औषधि विहीन-स्वाश्रित दवापद्धति का परिचय कराकर वर्तमान व आगामी पीढ़ी को रोगोंपचार के सम्बन्ध में आत्मनिर्भर बनाना है और दवाओं की आश्रिता दूर करना है। आगे हम क्रमशः प्राकृतिक चिकित्सा पर विस्तार से चर्चा करेंगे जो कि औषधि विहीन चिकित्सा प्रणाली है। **क्रमशः**

कविता बदलाव

* अपूर्वा अमित जैन (झाँसी) *

दिन बदले रात बदली जीवन चक्र ही बदल गया।
फूलों की क्यारी में लगे गुलाब को
काँटों की बीच पलना ही पड़ गया।
आज क्यों एक बेटी को बहू बनना ही पड़ गया।
जिन्दगी से उलझते-उलझते खुद के
अस्तित्व को क्यों मिटाना पड़ गया
सुगंध की तरह फैलती थी तो इधर-उधर
आज क्यों उसे चूड़ियाँ पहनकर बैठना पड़ गया।
खुद को स्वाभिमान की आँच पर पकाना पड़ गया।
पकने के बाद भी जीवन के दस्तूर में कमी रह गई
हर बात पर सुनने की जैसे आदत सी हो गई
हमने तो सोचा था फूलों की बगिया में कोई सुमन खिलेगा
पता ना था पगडडियों से होकर हर बार नया रास्ता ढूँढ़ना पड़ेगा।
जीवन में कोई मंजिल मिले या ना मिले
लेकिन खुद का अस्तित्व तो खोजना ही पड़ेगा।



भगवान महावीर की दिव्य-देशना

* सुबोध मलैया (सागर) *

महावीर और उनकी वाणी आज भी प्रासंगिक है इस पर आधा से कुछ आधा भी पालन हो तो संपूर्ण विश्व का कल्याण हो जाए। महावीर का यह दर्शन पूरे जीवन को बदल सकता है साथ ही भौतिकता की अग्नि में दग्ध विश्व को शाश्वत शांति का दिग्दर्शन कराने में सक्षम है। श्रमण संस्कृति के अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी हुए उन्होंने रूढ़ियों और पाखण्डों का विरोध किया, सर्वोच्च मूल्यों की विरासत जो श्रमण संस्कृति ने हमें दी है ऐसी महावीर वाणी का हम सदैव स्मरण करेंगे। भगवान महावीर के उपदेश समग्र विश्व शांति की विचार धारा में समाहित हैं, महावीर और उनके पूर्ववर्ती तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित विचार धारा श्रमण संस्कृति की मुख्य धरा है। विश्व शांति में भारतीय चिन्तन और संस्कृति के इतिहास में बिहार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है महावीर और बुद्ध जैसे आत्म-दर्शन ने उन्नायकों का इस क्षेत्र से घनिष्ठ संबंध रहा है। राज घराना से संबंधित महावीर से यह आशा की जाती थी कि वे लौकिक सुख-समृद्धि का उपभोग करते हुए पिता के राज्य का सम्यक् संचालन करेंगे किन्तु ऐसा नहीं हुआ, 30 वर्ष की युवा अवस्था में सारे राजसी भोग-विलासों को तिलांजलि दे वैराग्य धारण कर सच्चे आत्मिक शुद्धि एवं शांति की दशा में मोह एवं परिग्रह, महावीर ने सबको त्याग दिया, लौकिक सुख स्वयं में पूर्ण नहीं है, यह सोचकर वह निर्ग्रन्थ हो गये, 12 वर्ष की कठिन तपश्चर्या के पश्चात् महावीर ने इन भौतिक दुर्बलताओं पर विजय पा केवल ज्ञान प्राप्त किया। महावीर अपने समकालीन विचार धाराओं के प्रति अधिक सहिष्णु और उदार थे जिससे सामायिक परिस्थितियों के अनुरूप कुछ न कुछ परिवर्तन होता रहा। महावीर स्वामी ने भारतीय दर्शन की विचार धारा पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ा। जैन ग्रन्थ नैतिक एवं धार्मिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते जो न केवल पच्चीस सौ वर्षों से अधिक समय की कसौटी पर खरे उतरे वरन् आज भी मानव समाज की अनेक समस्याओं के समाधान की कुंजी हैं। महावीर स्वामी ने जीवन के सिद्धांतों के प्रति आदर-भाव एवं मानवीय चरित्र को परखने की उनकी सबसे बड़ी कसौटी थी इसमें हिंसा के लिये कोई स्थान नहीं था फिर चाहे वह वैचारिकी हिंसा हो अथवा क्रियात्मक हिंसा। यही अहिंसा का सिद्धान्त है उन्होंने अपरिग्रह का केवल उपदेश ही नहीं दिया बल्कि स्वयं अपने जीवन में उतारा। श्रमण संस्कृति की ही महिमा का सुफल है कि आक्रान्ताओं के आक्रमण और सैकड़ों वर्षों की गुलामी के बाद भी हम अपनी परम्परा और संस्कृति के अवशेष के साथ बचे हुए हैं। महावीर स्वामी समूचे विश्व के लिये सामाजिक प्रतिष्ठा का सर्वोच्च मापदंड है। इसलिये हम भगवान महावीर को रोम-रोम में कण-कण और क्षण-क्षण में बसाने की कामना करते हैं। यदि महावीर के उस चरित्र का अंश मात्र भी ग्रहण कर ले तो मानव परम पद पर पहुँच जाये। महावीर के चरित्र पर जितना लिखा-पढ़ा जितना चिन्तन-मनन किया गया संभवतः विश्व में कोई अन्य विभूति ऐसी नहीं होगी, भले ही कोई धर्मावलंबी, मतावलंबी, पंथानुयायी हो सभी में महावीर के संस्कार व्याप्त हैं, जैन धर्म में तीर्थंकर हमारी श्रमण संस्कृति की धरोहर हैं।

महातमा गाँधी ने इसलिये महावीर की अहिंसा का अनुशरण अंतिम समय तक किया। महावीर के मर्म को गाँधी से ज्यादा कौन जान सकता है इसी अहिंसा ने गाँधी जी को विश्व में सर्व

पूज्य बनाये रखा है। महावीर स्वामी के प्रथम गणधर गौतम ने उनके उपदेश की विषद व्याख्या की। भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में प्राणीमात्र के उद्धार का मार्ग सुझाया। हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकता यह बात समझाई। धर्म के नाम पर चलने वाले आडम्बर का विरोध कर, सच्चे धर्म का स्वरूप समझाया। धर्म पालन का अधिकार सबको है- यह समझाया। स्त्रियां भी समाज का महत्वपूर्ण अंग हैं वे पुरुष से हीन नहीं हैं यह प्रतिपादित करते हुए स्त्रियों को विशेष अधिकार प्रदान किये, महावीर ने आर्थिक असमानता के बीच की खाई पाटने के लिये अपरिग्रह और समानता के धर्म का संदेश देकर सामाजिक, आर्थिक वर्ग विग्रह को समाप्त करने का मंत्र दिया। चारित्रिक शुद्धि के लिये ब्रह्मचर्य व्रत पालन की महत्ता समझाई वहीं उन्होंने जन सामान्य को उन्हीं की भाषा में उपदेश दिया।

अहिंसा के पुजारी वीतराग प्रभु ने एक नई इबारत लिख नया इतिहास गढ़ दिया। श्रमण संस्कृति जो जैनत्व की अमूल्य धरोहर है इसका संरक्षण, संवर्धन करना हमारा नैतिक दायित्व है। जिस दिन से इनकी प्रतिष्ठा धुंधली होना शुरू होगी उसी दिन से हमारे जैनत्व के विनाश की गिनती शुरू हो जायेगी। जिन भगवान की हम आज पूजा अर्चना, आराधना कर रहे हैं, वस्तुतः भगवान महावीर की जयंती मनाना तभी सार्थक होगा जब हम भगवान के आदर्शों का अपने जीवन में कुछ अंशों में ही सही, आत्मसात करेंगे। भगवान महावीर ने जो संदेश दिया हम उसका अनुसरण करें, हम उस दिशा में पुरुषार्थ करना शुरू करें, अपने जीवन को आगे बढ़ाएँ निश्चयतः हम अपने जीवन को एक सार्थक उपलब्धि देंगे। हमारी कोशिश होनी चाहिये कि हम अपने विचारों की शुद्धि करें, विकारों का शमन करें, जीवन में मर्यादाओं की सुरक्षा करें यदि हम यह कर सकें तब भगवान महावीर के इस दर्शन को हम जन-जन का दर्शन बनाने में समर्थ हो सकते हैं। हमारी यही कोशिश होनी चाहिये। श्रमण संस्कृति की विशिष्ट पहचान है उसे कायम रखें जिससे दिगम्बरत्व सुरक्षित रहे जैनत्व के प्रति हम समर्पित हैं.....और रहेंगे।

चातुर्मास विशेषांक सूचना

आपके नगर में किसी भी आचार्य/उपाध्याय/साधु/आर्यिका माता जी/एलक जी/क्षुल्लक जी/ क्षुल्लिका माताजी का चातुर्मास होना तय हो गया हो तो उसकी जानकारी संस्कार सागर कार्यालय तथा व्हाट्स नम्बर 8989505108 ईमेल आई डी sanskarsagar@yahoo.com पर शीघ्र अतिशीघ्र दें ताकि आगामी अंक चातुर्मास विशेषांक रहता है। इसमें सभी साधु चातुर्मास कहा करें रहें कितने साधु हैं किसी एक या दो व्यक्तियों का सम्पर्क सूत्र पिनकोड सहित दिया जाता है। अतः उपरोक्त जानकारी देकर अनुग्रहीत करें। इस वर्ष में चातुर्मास के बाद हुई दीक्षाएँ एवं समाधि का विवरण भी शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

ब्र. जिनेश मलैया प्रधान सम्पादक संस्कार सागर

हमारे गौरव

सम्राट अमोघवर्ष प्रथम

नृपतुंग शर्ववर्म, अतिशय धवल, महाराज शण्ड वीरनारायण, श्री वल्लभ, वल्लभराय आदि विरूद्धधारी इस राष्ट्रकूट सम्राट का जैनधर्म के परम पोषक एवं भक्त महान सम्राटों में उल्लेखनीय स्थान है। इसमें भी सन्देह नहीं है कि राज्य विस्तार शक्ति समृद्धि, वैभव आदि की दृष्टि से वह अपने समय का भारत का प्रायः सर्वमहान सम्राट था। उसका राज्यकाल भी सुदीर्घ था- साठ वर्ष से अधिक उसने राज्य का उपभोग किया उसका जन्म 804 ई. में उस समय हुआ था जब उसका पिता गोविन्द तृतीय उत्तरापथ की अपनी एक विजययात्रा से लौटते हुए नर्मदा के किनारे श्रीभक्त नामक स्थान में छावनी डाले पड़ा था। अतएव 815 ई. में जब उसे पिता की मृत्यु पर राज्य का उत्तराधिकार मिला तो वह दस ग्यारह वर्ष का बालक मात्र था। किन्तु उसके पिता ने राष्ट्र की नींव पर्याप्त सुदृढ़ कर दी थी। और कई स्वामी भक्त एवं विश्वास पात्र राजपुरुष पैदा कर दिये थे। इनमें सर्वोपरि अमोघवर्ष के चाचा और गुर्जर देश के शासक इन्द्र का पुत्र एवं उत्तराधिकारी कर्कराज था जो बाल राजा का सुयोग्य एवं सक्षम अभिभावक और संरक्षक हुआ। स्थिति का लाभ उठाकर जो विद्रोह आदि हुए उन सबका दमन करके 821 ई. में नवीन राजधानी मान्यखेट में कर्कराज ने अमोघवर्ष का प्रथम विधिवत राज्याभिषेक किया कर्कराज की ही भाँति साम्राज्य का महासेनापति जैन वीर वंकेयरस पूर्णतया स्वामिभक्त और सर्वथा सुयोग्य था। इन दोनों राजपुरुषों ने मिलकर साम्राज्य को स्वचक्र और परचक्र के समस्त उपद्रवों से सुरक्षित रखने का सफल प्रयत्न किया। उधर स्वयं सम्राट ने राजधानी को सुन्दर प्रसादों राजपंथों, सरोवरों उद्यानों आदि से उलंकृत करने में कुछ वर्ष मन लगाया। वह स्वयं वस्तुतः एक शान्तिप्रिय विद्यारसिक एवं धर्मात्मा नरेश था। साम्राज्य में युद्ध चलते रहे विद्रोह और विग्रह भी होते रहे किन्तु उसके सुदक्ष एवं स्वामिभक्त अनुचरों एवं सामन्त सरदारों की तत्परता के कारण साम्राज्य की समृद्धि और शान्ति में कोई उल्लेखनीय विघ्न नहीं पड़ा उसकी शक्ति वैभव एवं प्रताप में उत्तरोत्तर वृद्धि ही हुई। तत्कालीन अरब यात्री सुलेमान सौदागर (851 ई.) के अनुसार उस काल में संसार भर में सर्व महावन सम्राट भारत का दीर्घायु बलहरा (वल्लभराय अमोघवर्ष) चीन का सम्राट बगदाद का खलीफा और रूम, (तुर्की) का सुल्तान यह चार ही थे। अलइद्रिसि अबुजैद मसूदी इन्बहौकल आदि अन्य अरब सौदागरों ने भी अमोघवर्ष के प्रताप एवं वैभव की तथा उसके साम्राज्य की समृद्धि एवं शक्ति की भरपूर प्रशंसा की है।

सुलेमान यह भी लिखता है कि भारतवर्ष का प्रत्येक नृपति स्वयं अपने राज्य में रहता हुआ भी (अमोघवर्ष) का आधिपत्य स्वीकार करता था। उसके पास हाथी और पुष्कल धन संपत्ति थी। वह शराब को छूता भी नहीं था और अपने सैनिकों तथा कर्मचारियों को नियमित वेतन देता था। उसके राज्य में पूजा की सम्पत्ति सुरक्षित थी चोरी और ठगी को कोई जानता भी नहीं था। और व्यापार व्यवसाय को प्रभूत प्रोत्साहन था तथा विदेशियों के प्रति आदरपूर्ण अच्छा व्यवहार होता था अलइद्रिसि लिखता है कि राष्ट्रकूट राज्य अतिविस्तृत घना बसा हुआ बड़े चढ़े व्यापार वाला और बहुत उपजाऊ था। जनता अधिकांशतः शाकाहारी थी चावल (धान) मटर फलियाँ दालें

साग सब्जी फल आदि उनके नित्य भोज्यपदार्थ थे। ये भारतीय स्वभावतः न्यायप्रिय हैं अपने व्यवहार में भी सदा न्याय पूर्ण ही रहते हैं, सच्चाई, ईमानदारी किये गये अनुबन्धों में अपने वचन का दृढ़ता पूर्वक पालन इत्यादि गुणों के लिये ये लोग सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। इसी से अजनबी विदेशी इनके देश में बड़ी संख्या में दौड़-दौड़कर आते हैं। फलस्वरूप इस देश की समृद्धि में बढ़ोतरी ही होती है। अबुजैद भी लिखता है कि बलहरा सम्पूर्ण भारत वर्ष का सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं प्रतापी नरेश है। और अन्य सब राजे यद्यपि उनमें से प्रत्येक अपने-अपने राज्य में स्वतंत्र है, और उसका पूर्णतया स्वामी हैं, इसकी महत्ता स्वीकार करते हैं, और उसे सर्वोपरि मानते हैं, इसके अतिरिक्त नरेन्द्र गुणियों और विद्वानों का प्रेमी तो था ही, स्वयं भी अच्छा विद्वान और कवि था। संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश कन्नड़ी और तमिल भाषाओं में विविध विषयक साहित्य सृजन को उसने प्रभूत प्रोत्साहन दिया। इसकी राज्यसभा विद्वानों से भरी रहती थी।

इस विषय में भी प्रायः कोई मतभेद नहीं है। कि सम्राट अमोघवर्ष प्रथम जैन धर्म का अनुयायी, जैन गुरुओं का भक्त और एक उत्तम श्रावक था प्रो. रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर के मतानुसार राष्ट्रकूट नरेशों में अमोघवर्ष जैन धर्म का सर्व महान संरक्षक था। यह बात सत्य प्रतीत होती है कि उसने स्वयं जैन धर्म धारण किया था। वीरसेन स्वामी के प्रिय पट्टशिष्य और उनके वाटनगर केन्द्र के तत्कालीन अधिष्ठाता सेनसंघी आचार्य जिनसेन स्वामी सम्राट के धर्मगुरु एवं राजगुरु थे। वह विभिन्न भाषाविज्ञ एवं विविध-विषय-निष्णात दिग्गत विद्वान और महाकवि थे बालपन से ही उनके साथ अमोघवर्ष का सम्पर्क रहा था। और वह उनकी बड़ी विनय करता था।

इन आचार्य के सम्मुख सर्वप्रमुख कार्य स्वगुरु द्वारा अधूरे छोड़े गये कार्य को पूरा करना था अतएव 837 ई. में उन्होंने सम्राट अमोघवर्ष के प्रश्रय में और उसके प्रधानामात्य गुर्जराधिप कर्कराज के संरक्षण में गुरु द्वारा स्थापित वाटनगर के अधिष्ठान में ही 60,000 श्लोक प्रमाणयुक्त महाग्रन्थ जयधवल को पूर्ण किया और उसे श्रीपाल गुरु द्वारा सम्पादित कराके संतोष प्राप्त किया तदनन्तर सम्राट के आग्रह पर वह राजधानी मान्यखेट में ही प्रायः रहने लगे। वहाँ उन्होंने महाकवि कालिदास के सुप्रसिद्ध मेघदूत की समस्या पूर्ति के रूप में अपने पार्श्वभ्युदय काव्य की रचना की जो अपनी काव्यगत विशेषताओं के लिये समग्र संस्कृत साहित्य की श्रेष्ठतम काव्य निधियों में परिगणित है। उक्त काव्य में अमोघवर्ष का भी सांकेतिक उल्लेख है इसके उपरान्त आचार्य ने महापुराण की रचना प्रारंभ की किन्तु आदि तीर्थंकर का चरित्र भी पूरा निबद्ध न कर पाये कि दिवंगत हो गये। जिस विशाल योजना के साथ उन्होंने यह महापुराण रचना प्रारंभ किया था यदि पूरा कर पाते तो वह अद्वितीय होता उनके पट्टशिष्य गुणभद्राचार्य ने गुरु द्वारा अधूरे छोड़े गये आदिपुराण को पूरा किया तथा उत्तरपुराण के रूप में संक्षेप में शेष तेईस तीर्थंकर का चरित्र निबद्ध करके महापुराण का समापन किया। गुणभद्राचार्य ने उत्तरपुराण में लिखा है कि स्वगुरु भगवज्जिन सेनाचार्य के चरण कमलों में प्रणाम करके अमोघवर्ष नृपति स्वयं को धन्य हुआ था। आचार्य गुणभद्र ने आत्मानुशासन जिनदत्तचरित्र आदि ग्रन्थ भी रचे हैं अमोघवर्ष और उसका पुत्र कृष्ण द्वितीय दोनों ही इन आचार्य का सम्मान करते थे। सम्राट ने इन्हें युवराज कृष्ण का शिक्षक भी नियुक्त किया था, ऐसा प्रतीत होता है।

आचार्य उग्रादित्य ने सम्राट के आग्रह पर उनकी राज्यसभा में आकर अनेक आयुर्वेदज्ञों एवं अन्य विविध विद्वानों के समक्ष मद्य मांस निषेध का वैज्ञानिक विवेचन किया था और इस

ऐतिहासिक व्याख्यान को हिताहित अध्याय शीर्षक से अपने पूर्वलिखित (लगभग 800 ई. में) प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ कल्याण कारक में परिशिष्ट के रूप में सम्मिलित किया था। प्रसिद्ध जैन गणितज्ञ महावीराचार्य ने अपना सुविदित गणितसार संग्रह उसी सम्राट के आश्रय में लिखा था- उसकी प्रशस्ति में आचार्य ने लिखा है कि जिस नृपतुंगदेव के शासन में स्याद्वाद न्याय के पक्षधरों ने समस्त एकान्त पक्षों को विध्वस्त कर दिया था उस नृपति का वह शासन वर्द्धमान हो। यापनीय संघ के जैनाचार्य शाकटायन पाल्यकीर्ति ने अपने सुविख्यात शब्दानुशासन नामक व्याकरण शास्त्र की तथा उसकी स्वोपज्ञ अमोघवृत्ति नाम्नी टीका की रचना भी इसी नृपति के आश्रय में की थी। स्वयं सम्राट अमोघवर्ष ने कन्नड़ी भाषा में कविराजमार्ग नामक छंद अलंकार शास्त्र रचा तथा संस्कृत में प्रश्नोत्तर रत्नमालिका नाम का नीतिशास्त्र रचा जिसके प्रारंभ में उसने तीर्थंकर महावीर की वन्दना की है कि विवेक का उदय होने पर उस राजर्षि अमोघवर्ष ने राज्य का परित्याग कर दिया था और सुधीजनों को विभूषित करने वाली इस रत्नमालिका को रचा था। उसने कोन्नूर आदि अभिलेखों से प्रकट है कि इस नरेश ने जैनगुरुओं, जैन मंदिरों और संस्थाओं को अनेक दान भी दिये थे।

इस प्रकार यह न्याय- नीति परायण सद्बिचारपूर्ण विवेकवान, धर्मनिष्ठ राजर्षि बीच-बीच में बहुधा राज्यकार्य से अवकाश लेकर गुरुचरणों में सम्भवतया वाटग्राम के मठ में जाकर अकिंचन हो अल्पाधिक अवधि के लिये निराकुलता पूर्वक धर्म सेवन किया करता था। उसके संजन ताम्रशासन से भी ऐसा ही भाव झलकता है। स्याद्वाद में उसकी निष्ठा थी तत्त्वचर्चा विद्वानों के व्याख्यानों और शास्त्रार्थों में वह रस लेता था। खानपान तो उसका जैनोचित शुद्ध था ही संयमी जीवन बिताने का भी अभ्यस्त था। अपने जीवन के अंतिम भाग में 876 ई. के लगभग राज्यकर्ता का भार युवराज कृष्ण को सौंपकर उसने स्थायी अवकाश ले लिया था। और एक आदर्श त्यागी श्रावक के रूप में समय व्यतीत किया था। सन् 878 और 880 ई. के मध्य किसी समय इस राजर्षि का निधन हुआ। स्वयं सम्राट के अतिरिक्त उसकी माता महारानी गामुण्डब्बे, पट्टमहिषी उमादेवी, युवराज कृष्ण, राजकुमारियाँ शंखादेवी और चन्द्रबेलब्बे, चचेरा भाई कर्कराज इत्यादि। राजपरिवार के अधिकतर सदस्य जिनभक्त थे। सामन्त सरदारों में लाट-गुजरात के राष्ट्रकूटों और सेनापति बंकेय के अतिरिक्त नोलम्बवाड़ी के नोलम्ब सौदन्ति के रट्ट हुम्मच के सांतर, गंगावाडी के गंग, बेंगि के पूर्वी चालुक्य आदि अनेक जैन धर्मावलम्बी थे। गुर्जराधिप कर्कराज ने तो 821 ई. के अपने सूरत दानपत्र द्वारा जैनाचार्य परवादिमल्ल के प्रशिष्य को नवसारी (नवसारिका) के जैन विद्यापीठ के लिये भूमि दान की थी। सन् 859 के एक शिलालेख में एक जैन बसदिके लिये राज्य द्वारा सिंहवरगण के आचार्य नागनन्दि को दान देने का उल्लेख है।

सम्राट का व्यक्तिगत विश्वास जैनधर्म में था। तथापि वह परधर्म सहिष्णु और समदर्शी था। कुलाचार के अनुसार अपनी कुलदेवी महालक्ष्मी में भी उसकी आस्था रही प्रतीत होती है, क्योंकि एक बार इस प्रजावत्सल नृपति ने अपनी प्रजा को महामारी के प्रकोप से बचाने के लिये उक्त देवी के चरणों में अपनी उंगली काटकर चढ़ा दी थी यह उसके राज्यकाल की घटना रही प्रतीत होती है। वैसे इस राष्ट्रकूट चक्रवर्ती अमोघवर्ष नृपतुंग के साम्राज्य में जैन धर्म ही प्रायः राष्ट्रधर्म हो रहा था।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति



जैन व्यक्तित्व डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी (जैन)



उच्च कोटि के विद्वान जिन्हें सरस्वती पुत्र भी कहा जाता है, डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी का जन्म, जोधपुर के एक सम्पन्न जैन घराने में प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं वकील श्री दशरथ मल सिंधवी के घर 9 नवम्बर 1931 को हुआ था।

योग्यता

बचपन से ही लक्ष्मीमल की बड़ी तीक्ष्ण बुद्धि थी, मेधावी छात्र के रूप में छठी कक्षा से लेकर पी.एच.डी करने तक लगातार ये छात्रवृत्ति प्राप्त करते रहे तथा 18 वर्ष की छोटी सी आयु में इन्होंने साहित्य वाचस्पति की उपाधि प्राप्त कर ली। इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा बी.ए. में इन्हें स्वर्ण पदक दिया गया। इसके बाद जयपुर विश्वविद्यालय से एल.एल.बी और एम.ए की उपाधि प्राप्त कर एल.एल.एम के लिये हार्वर्ड विश्वविद्यालय में राजस्थान के प्रथम रोटरी स्कॉलर बने। इन्होंने अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय से रिकॉर्ड दो वर्षों में पी.एच.डी की और इन्हें बर्कले केलिफोर्निया के शिक्षण विभाग में नियुक्त किया गया, 1957 में अपने पिता के कहने पर अपने शानदार शिक्षण कैरियर को छोड़कर भारत आ गये। डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी ने राजस्थान, दिल्ली, इलाहाबाद, कोलकाता, उसमानिया, आंध्र और जबलपुर विश्वविद्यालयों से अवैतनिक डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त की। डॉ. सिंधवी संस्कृत भाषा में निपुण थे, वे संस्कृत में बात कर सकते थे। उन्हें भारत के प्राचीन साहित्य की गहरी जानकारी थी। वे हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मंत्रमुग्ध करने वाले वक्ता थे। वे एक अत्यधिक सम्मानित बुद्धिजीवी, प्रकाशक, भाषाविद्, साहित्यकार तथा विचारवान व्यक्ति थे।

न्यायविद्

डॉ. सिंधवी भारत के उच्चतम न्यायालय के अग्रणी वरिष्ठ एडवोकेट थे तथा चार बार शीर्षस्थ न्यायालय बार एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे। इनकी लिखी गई न्याय की स्वतंत्रता पर रिपोर्ट तथा इसी विषय पर संयुक्त राष्ट्र संघ की विशेष रिपोर्ट के रूप में लिखी गई इनकी प्रारूप घोषणा (1987) की विश्व भर में सराहना की गई। इनके न्यायपालिका की स्वतंत्रता संबंधी दिशा-निर्देशों की दुनिया भर में सरकारी तौर पर सिंधवी सिद्धांतों के रूप में जाना जाता है। 26 नवम्बर को देश भर में मनाये जाने वाले कानून दिवस की इन्होंने अवधारणा की तथा इसकी नींव रखी। इन्हें 1973 में विधि के क्षेत्र में सबसे पुराने और सर्वाधिक सम्मानित पीठों में से एक कोलकाता विश्वविद्यालय से ऑनरेरी टैगोर कानून प्रोफेसर के रूप में चुना गया, वे बंगलादेश, नेपाल और दक्षिण अफ्रीका के संविधानों के निर्माण से जुड़े रहे और अपना परामर्श दिया। वे एक प्रसिद्ध न्यायविद् जाने माने संविधान विशेषज्ञ, मानवाधिकारों के एक प्रसिद्ध जानकार के

रूप में जाने जाते हैं।

राजदूत

डॉ. सिंधवी का इंग्लैण्ड में भारत के उच्चायुक्त के रूप में सबसे लम्बा कार्यकाल (1991-1997) रहा, इस अवधि को भारत-इंग्लैण्ड संबंधों का स्वर्णकाल माना गया है। इन्होंने लंडन में नेहरू केन्द्र की स्थापना की जिसे अब भारतीय सांस्कृतिक राजनीति का केन्द्र माना जाता है। हुल एडिनबर्ग, वेल्स लंडन और लीस्टर समेत विभिन्न ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में डॉ. सिंधवी के नाम पर अनेक शैक्षणिक पाठ्यक्रमों, पीठों एवं व्याख्यानों की स्थापना की गई। हुल विश्वविद्यालय में डॉ. एल.एम. सिंधवी भारतीय अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गई।

राजनयिक

डॉ. सिंधवी को तीसरी लोकसभा (1962-1967) के लिये जोधपुर से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुना गया और उन्हें उत्कृष्ट सांसद के रूप में जाना गया। इन्होंने विशेष योग्यता के साथ अनेक महत्वपूर्ण पद संभाले। भारत सरकार की एक समिति पंचायती राज संस्थानों का पुनरुज्जीवन के अध्यक्ष के रूप में इनकी सिफारिशों और प्रारूप संशोधनों को 73वें संविधान संशोधन के द्वारा संविधान में शामिल कर लिया गया है। वे लोकपाल और लोकायुक्त जैसे शब्दों के निर्माता थे। डॉ. सिंधवी बी.जे.पी. के मेम्बर के तौर पर (1998-2004) के लिये राज्यसभा के मेम्बर भी चुने गये। वे एक मशहूर राजनयिक, विशिष्ट सांसद, राजनेता तथा बहुआयामी, व्यक्तित्व वाले एक शानदार व्यक्ति रूप में जाने गये।

अंतराष्ट्रीय जिम्मेवारियाँ

डॉ. सिंधवी 1993 में वियाना में आयोजित संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के अध्यक्ष थे। फरवरी-मार्च 1998 में स्टॉकहोम में संस्कृति और विकास विषय पर आयोजित सम्मेलन में वे भारतीय प्रतिनिधि मंडल के नेता थे। वे अंतरधर्म आन्दोलन के जाने-माने विद्वान थे और 1993 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद के शताब्दी समारोह में चुने गये अध्यक्षों में से एक थे जिसमें इन्होंने प्रसिद्ध भाषण दिया। इन्होंने युनेस्को के कार्य पालक बोर्ड (2002-2005) के सदस्य के रूप में भी कार्य किया।

परिवार

डॉ. सिंधवी की शादी हिन्दी की विशेषज्ञ एवं लेखिका श्रीमति कमला से हुई थी। इनका एक पुत्र अभिषेक मनु सिंधवी चोटी का वकील तथा राजनीतिज्ञ है व बेटी अभिलाषा एक गुणी योग्यता प्राप्त वकील हैं तथा परोपकार एवं सेवा करने वाली संस्था मानव सेवा सन्निधि की मैनेजिंग ट्रस्टी है।

कवि तथा लेखक

डॉ. सिंधवी एक कवि तथा लेखक भी थे इन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखी जिनमें A TALE OF THREE CITIES, FREEDOM IN TRIAL, DEMOCRACY & RULE OF LAW, THE EVENING SUN तथा भारत और हमारा समय बड़ी प्रसिद्ध रचनायें हैं।

वे जैन इतिहास तथा संस्कृति के भी जाने-माने विद्वान थे। इनकी ई. सन् 2002 में लिखी

हुई पुस्तक JAIN TEMPLE IN INDIA AND AROUND THE WORLD भारत तथा विश्व में जैन मंदिर की बड़ी प्रशंसा हुई। डॉ. सिंधवी वर्ल्ड जैन कनफेडरेशन व वात्सल निधि के प्रधान तथा वीरायतन-राजगिरि के संरक्षक रहे हैं।

पुरस्कार तथा सम्मान

डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी को बहुत से राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय सम्मान तथा पुरस्कार मिले, जनवरी 1998 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया, 1994 में ईसाईयों और यहूदियों की अंतराष्ट्रीय परिषद् की ओर से अंतरधर्म स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। लंडन में डॉ. एल.एल.एम सिंधवी फाउंडेशन की स्थापना की गई, इंग्लैण्ड में रोटी इंटरनेशनल के उत्कृष्ट पुरस्कार के प्रथम एम्बेसेडर का सम्मान और यू थांट शांति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इन्हें 1993 में यूनिवर्सिटी ऑफ बर्मिंघम द्वारा एल.एल.डी की मानद उपाधि दी गई, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी में SCHOOL OF CONSTITUTION LAW का नाम डॉ. एल.एम. सिंधवी के नाम पर रखा गया। 1992 में इनको कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में 500 से भी अधिक वर्ष पुराने अत्यधिक प्रतिष्ठित पद रिडे चेरर के रूप में चुना गया।

अंतिम समय

देश के महान् सपूत श्री लक्ष्मीमल सिंधवी की 76 वर्ष की आयु में थोड़ी सी बीमारी के बाद 6 अक्टूबर 2007 को नई दिल्ली अस्पताल में हार्ट अटैक से मृत्यु हो गई। वे अपने पीछे अपनी धर्मपत्नी कमला सिंधवी तथा एक बेटा व एक बेटी छोड़ गये हैं।

डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी का व्यक्तित्व एवं डाक टिकट

डॉ. सिंधवी की मित्रता की सम्पदा ही उनकी धरोहर है। ऊर्जावान व्यक्तित्व, प्रकृति से शांत, आदतों में परिपक्वता, व्यवहार में विनम्रता, निर्णय में तार्किकता, कार्य में तत्परता, पहनावे में सादापन, और व्यवहार में प्रभावशीलता यह उनके व्यक्तित्व की पहचान है। वे प्राचीन भारतीय चिंतन, संस्कृति और सभ्यता के सनातन प्रतीक और चमकदार निशानी हैं। डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी के चित्र वाली एक बहुरंगी डाक टिकट इनकी मृत्यु के 17 महीने बाद ही 8 दिसम्बर 2008 को सिक्कोरिटी प्रिंटिंग प्रेस हैदराबाद से बिना जल चिन्ह वाले कागज पर 4 लाख संख्या में छपवा कर जारी की गई थी जिसका मूल्य 500 (पैसे) हैं। इसका डिजाइन भारतीय मीरचन्दानी ने ऐसा बनाया है कि टिकट पर तरंगे झंडे का आभास होता है। सिर के ऊपर केसरी रंग की पृष्ठ भूमि है, बीच में चेहरा का रंग सफेद तथा नीचे कोट का रंग हरा दिया गया है। सेन्टर में चेहरा ऐसे गोल डिजाइन में है कि चक्र प्रतीत हो। टिकट के नीचे हिन्दी तथा इंग्लिश में डॉ. लक्ष्मीमल सिंधवी लिखा है। इस डाक टिकट का विवरण इंग्लैण्ड से छपने वाले स्टेनले गिब्सन केटालॉग में नम्बर 2421 पर, अमेरिका से छपने वाले सकाट केटालॉग में नम्बर 2128 पर दिया गया है।

पाइल्स नियंत्रण से रहें स्माइल

* जिनेन्द्र कुमार जैन (गोरीनगर इन्दौर)*

पाइल्स या बवासीर रोग में गुर्दा मार्ग के अंदर व बाहरी हिस्से में सूजन आती है और उसके अंदर व बाहरी हिस्से में एक तरह का मसा पैदा हो जाने को पाइल्स कहते हैं। पाइल्स से मल विसर्जन में दर्द व खून भी आने लगता है। प्रारंभिक अवस्था में गुर्दा में हल्की सी खुजली महसूस होती है, मल कड़ा हो जाने से मल त्याग में कठिनाई होती है। पेट साफ नहीं हो पाता है, ज्यादा जोर लगाने पर खून आ सकता है। गुर्दा के अंत में जो शिरायें हैं, उनके सूजने या बढ़ जाने के कारण होता है।

पाइल्स का मुख्य कारण 1. यकृत और धमनी में रक्त की अधिकता दोष मुख्य कारण है, जिससे शिराओं के अंदर खून जमता रहता है जिससे वे मोटी व फूल जाती हैं। 2. हृदय की कुछ बीमारियाँ 3. मुख्य समस्या बहुत दिनों तक कब्ज बने रहना है, करीब 40.45% लोग कब्ज से परेशान हैं। 4. मद्य, मांस, ज्यादा मिर्च मसालेदार भोजन करना, 5. असमय भोजन करना, तनाव, खराब जीवन शैली, रात्रि जागरण, अधिक खाना, 6. मूत्र नली की किसी बीमारी में पेशाब करते समय ज्यादा जोर लगाना, 7. कब्ज ठीक करने हेतु जुलाब की दवा का अधिक दिनों तक सेवन करना, 8. महिलाओं में गर्भावस्था में जरायु का दबाव पड़ना व प्रसव बाद कूलहे व आस पास की नसें कमजोर पड़ना आदि पाइल्स रोग के कारण हैं। पाइल्स रोग तीन प्रकार का होता है। 1. बाहरी मसे जब मलद्वार के बाहर मसा होता है उसे ब्लाइन्ड पाइल्स भी कहते हैं जिसमें मलद्वार में खुजली जलन होती है। चलने फिरने गाड़ी चलाने में तकलीफ होती है, मल विसर्जन में बड़ी तकलीफ होती है। 2. भीतरी मसे ये मलद्वार के अंदर होते हैं, खून निकलता है, खून की पिचकारी सी चलती है। मसे शुरू में कुछ दिनों तक मल विसर्जन के समय बाहर निकल आते हैं और अपने आप भीतर घुस जाते हैं परन्तु कुछ दिनों बाद बाहर निकले रहते हैं जिनसे हर समय चिकना स्राव निकलता रहता है व रोगी को एनिनिया, श्वास कष्ट, छाती धड़कना, चेहरा मलिन हो जाना, बेहोशी और माथे के दर्द संबंधी बीमारियाँ हो जाती हैं। 3. मिश्रित मसे - कभी मसा का कुछ हिस्सा म्युकस मेम्ब्रेन से कुछ हिस्सा चमड़ी से ढंका रहता है। मस्से एक, दो या अंगूर के गुच्छे के समान हो सकते हैं। लगातार पाइल्स बने रहने से फिस्टुला, कैंसर और आंतों की टी.वी का कारण भी हो सकते हैं।

पाइल्स यकृत धमनी पोर्टल सिस्टम में रक्ताधिक्य होने से यह रोग होता है जिसका मुख्य कारण कब्ज होने से दबाव पड़ता है इसलिये औषधि आदि का प्रयोग कर के सदैव पेट साफ रखना चाहिये। अभक्ष्य भोजन का त्याग अधिक चाय, काफी नहीं पीना, मादक द्रव्य व पदार्थ नहीं खाना, डिब्बा बंद चीजों से परहेज रखना, बीज युक्त फल व सब्जी नहीं खायें। हल्का भोजन व फाइबर व प्रोटीन युक्त चीजें ले। मौसमी हरी सब्जी, दालें, सोयाबीन, मैथीदाना, अलसी बीज पाउडर/आलू, बैंगन फूल गोभी, चाइनीस, नूडल्स, चायनीज, खाने से परहेज रखना। छाछ का सेवन करना, रात को गरम पानी पियें।

अक्सर समाज में भ्रांतियाँ, संकोच, शर्म के कारण सर्जरी के डर से समय पर सही उपचार से अपने जीवन को आनंदमय बनाकर चेहरे की खूबसूरती व मुस्कुराहट बनाये रख सकते हैं। पाइल्स संबंधी रोग होने पर रोगी अपने मन से विज्ञापन युक्त दवाइयों का सेवन करने लगते हैं। जिनसे कुछ समय तक फायदा होता है किन्तु बाद में पुनः समस्या बढ़ जाती आयुर्वेदिक, होम्योपैथी व बायोकेमिक पद्धति से समय पर अनुभवी चिकित्सक से इलाज का रोग पूर्णतः मुक्ति मिल जाती है। अध्याधिक कष्ट बढ़ने पर सर्जरी से इलाज संभव है किन्तु मलद्वार में कैंसर या स्ट्रक्चर होने से या जराजू, मूत्राशय और यकृत की कोई बीमारी, श्वास रोग होने पर सर्जरी के पूर्व चिकित्सक से सलाह लेकर सर्जरी करायें।



हास्य तरंग

1. एक महिला शराबी पति की आदत छुड़ाने के लिये योगासन शिक्षक के पास जाकर योग करने के तरीके सीखे। बहुत दिनों बाद योगासन शिक्षक ने योगासन के प्रयोग से आपके पति में शराब पीने की आदत में कुछ परिवर्तन आया। महिला-हाँ आया है तो, अब शीर्षासन करते पूरी बोतल गटक जाते हैं।
2. चौराहे पर एक बाबा जी उपदेश दे रहे थे बच्चों लोहे को लोहा काटता है, हीरे को हीरा काटता है। तभी पीछे से एक कुत्ता आया और बाबा को काट दिया तभी पास खड़े बच्चे ने कहा बाबा जी कुत्ता भी तो.....
3. नई नवेली पत्नी (पति से) जानते हो मैंने तुमसे शादी क्यों की ? पति- नहीं, पत्नी पति से ताकि मैं समझ सकूँ कि तुम कितने मूर्ख हो। पति- शादी की क्या जरूरत थी ये तो तुम ऐसे ही जान सकती थी, जब मैंने तुमसे शादी करने की हाँ कर दी थी।
4. शहर में दिमागी बुखार से 130 मोतों की खबर पढ़कर चिंतित नेता जी की पत्नी ने पति से कहा इस जानलेवा बुखार को रोकने का कोई इंतजाम किये हैं, नेता जी इसमें घबराने की कोई बात नहीं है यह बुखार तो केवल दिमाग वालों को ही होता है।
5. ट्रेफिक पुलिस चैंकिंग टीम ने एक संदिग्ध कार को रोका, अधिकारी बोला चालान बनाओ, कार की एक हेडलाइट नहीं जल रही, नम्बर प्लेट नहीं है, वाइपर नहीं लगा। देख लिया कार चलाने वाले व्यक्ति ने अपने बगल में बैठे साथी पर बरसा मैंने कई बार कहा था यह कार चुराने लायक नहीं है।

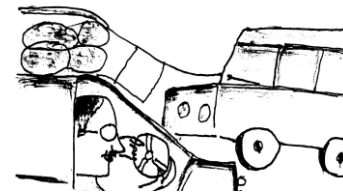
विदेशी विद्यार्थियों को जैन दर्शन, इतिहास व पुरातत्व की शिक्षा का शुभारंभ

नई दिल्ली - दिल्ली विश्वविद्यालय के इंटरनेशनल गेस्ट हाउस के सभागार में विदेशी विद्यार्थियों को जैन दर्शन, इतिहास व पुरातत्व की शिक्षा का शुभारंभ एक समारोह में 5 जून को किया गया। छह सप्ताह तक चलने वाले इस सत्र में श्रीलंका, इथोपिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया एवं ग्रीस से आये शोध विद्यार्थी भाग ले रहे हैं। सत्र का आयोजन श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ संरक्षणी महासभा एवं इंटरनेशनल सेंटर फार निगंथ ट्रिडिशन के संयुक्त तत्वाधान में किया जा रहा है।

सत्र के उद्घाटन के अवसर पर महासभाध्यक्ष निर्मल कुमार जैन सेठी ने कहा कि इन देशों में जैन धर्म प्राचीन काल से विद्यमान था, जिसका प्रमाण वहां का इतिहास व पुरातत्व बताता है, हमारा उद्देश्य विद्वानों के द्वारा प्रामाणिक रूप से उस ज्ञान की जानकारी देना है। पिछले दिनों वे भारत से कई पुरातत्ववेत्ताओं व इतिहासकारों से लेकर विदेशों में गये थे तो पता चला कि प्राचीनकाल में वहां निर्ग्रंथ परंपरा का बोलबाला था तथा अधिकांश लोग जैन धर्मावलंबी थे। इथोपिया में तो आज भी शाकाहार को ही आदर्श भोजन माना जाता है। प्रो. एम एल जैन ने विद्यार्थियों को महामंत्र णमोकार व तत्त्वार्थ सूत्र की व्याख्या कर उनका महत्व बताया। पुरातत्वविद् अरूण कुमार खन्ना ने कहा कि पुरातत्व खोजों से सिद्ध है कि प्राचीनकाल में जैन धर्म अनेक देशों में विद्यमान था। केन्द्र व राज्य सरकारों ने इस ओर रुचि नहीं ली। इसमें शोध की प्रयास संभावनायें हैं। सुश्री जोग श्री पंवार ने भी विचार व्यक्त किये। गौरव जैन ने विदेशी विद्यार्थियों का स्वागत किया और सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रेषक : रमेश जैन नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली

बाल कहानी आलू से मौत



गुना जिले के ऐतिहासिक नगर राघौगढ़ के समीप विजयपुर गेल कम्पनी के विशेष अधिकारी राजकुमार आदिवासिया और उनकी पत्नी शशिकला अपने पुत्र कपिल के लिये विशाखटनम की ट्रेन में बिठकार लौट रहे थे मार्ग की व्यस्तता थी परंतु मार्ग के पक्के होने से उनकी कार अपनी बाँयी पटरी पकड़े गेल की ओर चली जा रही थी वे दोनों आपस में अपने बेटे कपिल की चर्चा कर रहे थे कि अपना कपिल कितना योग्य है, कुछ दिन बाद देश के जाने माने इंजीनियरों में गिनती होगी राजकुमार अपनी हेकड़ी मारते हुए बोले ये तो मेरा चयन है जो मैंने विशाखापटनम का श्रेष्ठ कॉलेज अपने बेटे के लिये चुना उनकी पत्नी शशिकला बोली रहने दो जी आप तो हमेशा अपनी तारीफ किया करते हैं कॉलेज क्या खाक कर लेगी अगर मेरा बेटा पढ़े नहीं तो राजकुमार ने कहा देखो शशि तुम नहीं समझती हो शिक्षण संस्थान का किसी की योग्यता में बहुत बड़ा महत्व होता है मैंने अपने बेटे कपिल को सदैव उच्च श्रेणी के विद्यालयों में प्रवेश दिलाया है इसलिये वह आज यह ऊँचाई छूने को तत्पर है शशिकला ने कहा मैं ये नहीं मानती हूँ आप भी तो गांव के हिन्दी मीडियम विद्यालय में पढ़कर इस उच्च पद पर पहुँचे हैं यह दोनों के बीच में चर्चा चल रही थी तभी एक धड़ाक की आवाज आई और एक टुक कार की तरफ पलटते हुए नजर आया टुक में भरी आलू की बोरियां उनकी कार पर धड़ाधड़ गिरने लगी और कुछ टुक का हिस्सा कार पर गिरा जनता लपकी और पुलिस भी आ गई परन्तु शशिकला और ड्राइवर कृष्णगोपाल की श्वासें थम चुकी थी राजकुमार को पुलिस ने एक घण्टे की मेहनत के बाद से निकाल पाया दर्शक यही बोले आलू मौत बनकर आये।

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

- * **हिन्दु बनाओ** खिलाड़ियों की संख्या- 15-20 खेल वर्ग- स्पर्श के खेल
खेल विधि- दो स्वयं सेवक हाथ पकड़कर दौड़ें तथा किसी तीसरे को पकड़ें उसके प्रतिरोध के बावजूद बल पूर्वक उसे अपने हाथों के बीच से निकालकर कहेंगे हिन्दु। ऐसे ही ये एक और को भी हिन्दु बनायेंगे। ये दोनों मिलकर पहली टोली के साथ-साथ ही हिन्दु बनाने का काम शुरू कर देंगे। इस प्रकार हिन्दु बनाने वाली टोलियों की संख्या क्रमशः बढ़ती जायेगी तथा थोड़े समय में सब विद्यार्थी हिन्दु बन जायेंगे।
- * **मछली मछली कितना पानी** खिलाड़ियों की संख्या- 15-20 खेल वर्ग- स्पर्श के खेल
खेल विधि- पूर्व खेल की भांति खड़े होकर सब पूछेंगे मछली-मछली कितना पानी ? सामने वाला स्वयं सेवक क्रमशः घुटने कमर सीने पर हाथ रख कर कहेगा-इतना पानी। जब सिर से ऊपर हाथ ले जाकर कहेगा इतना पानी, तो सब दौड़ें तथा वह उन्हें पकड़ेगा।
- * **शैतान पकड़ो** खिलाड़ियों की संख्या- 15-20 खेल वर्ग- स्पर्श के खेल
खेल विधि- एक स्वयं सेवक (क) कुछ दूरी पर सब खिलाड़ियों की ओर पीठ करके खड़ा होगा। उसके हाथ में एक पत्थर (माखन) तथा हाथ कन्धे पर रहेगा। शेष स्वयंसेवक धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ेंगे। थोड़ी-थोड़ी देर (4-5 सेकण्ड) बाद पीछे मुड़कर देखेंगे तथा जो भी उस समय हिलता दिखाई देगा। उसका नाम पुकारकर उसे फिर से प्रारंभ रेखा पर भेज देगा। इस प्रकार धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए जो खिलाड़ी (क) के हाथ से माखन छीन लेगा वह विजयी होगा फिर वह ही (क) के स्थान पर खड़ा होकर खेल प्रारंभ करेगा।

संस्कार गीत

मोबाइल के खतरे



मोबाइल का खेल है ऐसा वाट्सएप का फेरा
सबकी चिंता छोड़ के मन छाया व्यसन अंधेरा

1.

गेम फेसबुक में व्यस्त सब
कोई किसी से न बोले
गुप चुप गुप चुप अंगुली चलाते
राज न कोई खोले
मोबाईल का चस्का ऐसा
इसके व्यसन ने घेरा

2.

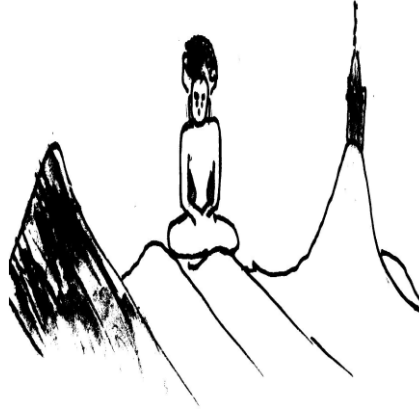
सह भोजन का क्रम अब टूट
सारे रिश्ते टूटे
दिनचर्या भी बिगड़ी सारी
स्वास्थ्य सूत्र भी छूटे
बच्चों के सुख दुख सब विसरे
घर परिवार बिखेरा

3.

काम वासना छल फरेव
सब फेंक न्यूज में मिलते
अपराधों की बढ़ती संख्या
सदगुण कहीं न मिलते
देर से सोना देर से जगना
मालूम नहीं कब होगा सबेरा

बाल कविता

पारस भक्ति



ताल मजीरा बाजे रे
पारस भक्ति गाओ रे
पारसनाथ सहायी सबके
शरण में इनकी आओ रे
सब दुख संकट इनसे मिटते
बिगड़े काम सदा ही बनते
वामा की नैनों के तारे
अश्वसेन के राजदुलारे
मोक्ष सप्तमी पर्व है आया
पार्श्वप्रभु ने मोक्ष को पाया
उपसर्गों के तीर्थकर हैं
वीतराग प्रभु हितंकर हैं
इनकी भक्ति जो भी करता
जनम जनम के पाप को हरता
सम्मेद शिखर है तीरथ धाम
पार्श्व प्रभु को करो प्रणाम

समाचार

मुनि दीक्षा सम्पन्न

कवठेसार (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज (दक्षिण) द्वारा श्री पवन जी कठरिया गुना, श्री सुभाषचन्द्र जी बीना, श्री अभय कुमार जी जैन विदिशा, श्री शांति पाटिल कुंभोज, इन चार सुधी श्रावकों मुनि दीक्षा 30 मई 2019 को कवठेसार तहसील सीरोल जिला कोल्हापुर महाराष्ट्र में प्रदान की गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री गुणसागर जी महाराज, मुनि श्री श्रुत सागर जी महाराज, मुनि श्री निर्भयसागर जी महाराज, मुनि श्री सुपार्श्वसागर जी महाराज रखा गया।

मुनि श्री विश्वनाथ सागर जी का
देवलोक गमन

दांतारामगढ़ (राज.)-आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री विश्वनाथ सागर जी महाराज का वाहन से टक्कर लगने पर देवलोक गमन दांतारामगढ़ जिला सीकर राजस्थान में हो गया।

साधर्मी वात्सल्य योजना

इन्दौर-उच्च शिक्षा एवं सेवा के उद्देश्य से इन्दौर नगर में आने वाले बेटे बेटियों को अपनापन मिलें एवं उन्हें समय-समय पर अपने साधर्मियों का संरक्षण निर्देशन मिलता रहे इसी पवित्र उद्देश्य से एक आदर्श योजना साधर्मी वात्सल्य योजना का शुभारंभ मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज जी द्वारा किया गया। इस योजना से पढ़ने वाले सभी भाई बहन जुड़ सकते हैं। यदि आपका बेटा या बेटी इन्दौर में रह रही है और वह इस योजना से नहीं जुड़ी है तो तुरंत ही इस योजना से जोड़कर लाभ लिया जा सकता है। इस योजना का फार्म www.vidhyasagarpathshal.com से डाउनलोड कर सकते हैं। सम्पर्क- नागेन्द्र जैन मो. 9425074782, सी.ए.

आशीष जैन मो. 9425312972, सी.एस. अभय जैन मो. 9039351139, मिली जैन मो. 9926058201, डॉ. शिवानी जैन मो. 6068836364, एम.के. जैन मो. 94258-04534, प्रो. विशाल जैन मो. 9893642096, अभिषेक जैन मो. 9827075715

श्रुत सम्बर्द्धन शिविरों का आयोजन

ललितपुर- आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज के समाधि हीरक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में सराकोद्धारक षष्ठमपट्टाचार्य आचार्य श्री 108 ज्ञानसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से श्रुत संवर्द्धन संस्थान मेरठ के तत्वाधान में दस दिवसीय श्रुत संवर्द्धन ज्ञान संस्कार शिविर बुंदेलखण्ड के ललितपुर, टीकमगढ़, सागर, छतरपुर जनपद के विभिन्न स्थानों पर भारी हर्षोल्लास के साथ लगाये गये। इन शिविरों में वाराणसी, सांगानेर, जयपुर, मथुरा, इंदौर आदि स्थानों की संस्थाओं में विद्वान ज्ञान संस्कारों का शंखनाद कर रहे हैं। शिविरों में सुबह, दोपहर शाम को कक्षाएं और रात्रि में विशेष व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं।

श्रुत पंचमी महोत्सव

इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में श्रुत पंचमी महोत्सव 7 से 9 जून 2019 को आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री प्रशांत सागर, मुनि श्री निर्वेग सागर जी, मुनि श्री विशद सागर जी, क्षुल्लक श्री देवानंद सागर जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जिसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी साधर्मियों बन्धुओं ने भाग लेकर पुण्यार्जित किया। श्रुत स्कंध विधान एवं आचार्य छत्तीसी महामंडल विधान के साथ-साथ स्वर्ण रथ सहित 51 रथों का रथ प्रवर्तन किया गया। श्रुत स्कंध

विधान में सौधर्म इन्द्र श्रीमति श्वेता दीपक जैन, महायज्ञनायक श्रीमति प्रभा रमेशचन्द्र जैन, कुबेर श्रीमति ममता अरविन्द जैन, यज्ञनायक श्रीमति गुणमाला विमल जैन, श्रीमति संध्या कमल जैन, ईशानेन्द्र श्रीमति अंशुल अंकित जैन, सानतकुमार इन्द्र श्रीमति माला डी.के. जैन, माहेन्द्र श्रीमति रश्मि अरविन्द जैन, ब्रह्मेन्द्र श्रीमति चन्दा देवी ज्ञानचन्द्र जैन, ब्रह्मप्रत्येन्द्र श्रीमति अनिता विमल जैन, लातंव इन्द्र श्रीमति अंजली प्रदीप जैन, लातंव प्रत्येन्द्र श्रीमति किरण आर.सी. जैन, शुक्र इन्द्र श्रीमति सुनिता महेन्द्र जैन, शुक्र प्रत्येन्द्र श्रीमति अनिता डॉ. संदीप जैन, शतार इन्द्र श्रीमति इन्द्रा प्रदीप जैन, शतार प्रत्येन्द्र श्रीमति आंकाक्षा विवेक जैन, आणतेन्द्र श्रीमति विनिता अनिल जैन, अच्युतेन्द्र श्रीमति प्रीति राजकुमार जैन, आचार्य छत्तीसी विधान के सौधर्म इन्द्र श्रीमति सुनीता विरेन्द्र जैन, महायज्ञनायक श्रीमति कमलेश नरेन्द्र जैन, यज्ञनायक श्रीमति सुचि गौरव जैन, श्रीमति राजश्री मनीष जैन, ईशानेन्द्र श्रीमति मोना नवीन जैन, ब्रह्म प्रत्येन्द्र श्रीमति ममता भागचन्द्र मलैया, लातंव इन्द्र श्रीमति निधि आशीष जैन, लातंव प्रत्येन्द्र श्रीमति सुनीता मनोज जैन, शुक्र इन्द्र श्रीमति सुलोचना सतीश जैन, शुक्र प्रत्येन्द्र श्रीमति कमलेश एम.सी. चौधरी, शतार इन्द्र श्रीमति समता राजकुमार जैन, शतार प्रत्येन्द्र श्रीमति विद्या राजेन्द्र जैन, आणतेन्द्र श्रीमति ज्योति राजीव कंठाली के साथ-साथ श्रीमति करुणा जितेन्द्र जैन, श्रीमति सीमा कमलेश जैन, श्रीमति सुनीता जिनेन्द्र जैन, श्रीमति पद्मा सुरजमल जैन, श्रीमति प्रीति राजकुमार जैन, अच्युतेन्द्र श्रीमति रश्मि राजेश जैन, श्रीमति मुक्ता नरेन्द्र जैन, श्रीमति निधि सचिन जैन, श्रीमति सुधा अनिल जैन, श्रीमति सुन्दर प्रकाश जैन, श्रीमति संचिता कमलेश जैन, शरद शास्त्री, श्रीमति सुधा सुरेश जैन, श्रीमति साधना अशोक जैन, श्रीमति रचना

निलेश जैन, श्रीमति ज्योति प्रभा सुरेश जैन, श्रीमति निधि सचिन जैन, श्रीमति रेशू निशांत जैन, श्रीमति गुणमाला राकेश जैन, श्रीमति रितेश राजेश जैन, श्रीमति अंजू अनिल जैन, श्रीमति भारती पवन जैन, श्रीमति सुनीता राजकुमार जैन, श्रीमति अनिता सुरेन्द्र जैन, श्रीमति संगीता उत्तमचन्द्र जैन, श्रीमति संगीता राजकुमार जैन, श्रीमति सुशीला श्रीपाल जैन, श्रीमति सुधा सुभाष जैन, श्रीमति किरण सुधीर जैन, श्रीमति सुलोचना सुरेश जैन, श्रीमति आरती प्रणय जैन, श्रीमति राजुल राजीव जैन, श्रीमति मेघा आशीष जैन आदि ने प्रत्येन्द्र बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।

श्रुत संवर्द्धन ज्ञान संस्कार शिविरों में उमड़ रहे शिविरार्थी

ललितपुर- आचार्य श्री शांतिसागर जी छाणी महाराज के समाधि हीरक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में सराकोद्वारक षष्ठमपट्टाचार्य आचार्य श्री 108 ज्ञान सागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से श्रुत संवर्द्धन संस्थान मेरठ के तत्वावधान में दस दिवसीय श्रुत संवर्द्धन ज्ञान संस्कार शिविर बुंदेलखंड के ललितपुर, टीकमगढ़, सागर, छतरपुर, जनपद के विभिन्न स्थानों पर भारी उत्साह और उमंग के साथ चल रहे हैं। इन शिविरों में वाराणसी, सांगानेर जयपुर, मथुरा, इंदौर आदि स्थानों की संस्थाओं के विद्वान प्रशिक्षण देकर संस्कारों का शंखनाद कर नैतिक और धार्मिक बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। शिविरों में सुबह, दोपहर, शाम को कक्षाएँ और रात्रि में विशेष व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। इस बीच केन्द्रीय शिविर समिति के पदाधिकारीगण शिविर स्थानों पर जाकर निरीक्षण, अवलोकन कर रहे हैं। शिविर संयोजक मनीष शास्त्री और चेतन शास्त्री ने बताया कि सभी शिविरों का स्थानीय स्तर पर 19 जून को समापन किया गया। जिसमें पढ़ाये गये विषयों की परीक्षा भी ली गई।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा माह : जुलाई 2019

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिये

01. अब के पास आने के लिये.....और कब का सम्बन्ध तोड़ना होगा ?
02. बाह्य पदार्थों को ओझल कर अपने आप में आने का नाम ही.....है ?
03. हे मन ! तू कहीं भी चला जा पर ध्यान रख, ...से बढ़कर दुनियाँ में कोई उत्कृष्ट वस्तु नहीं ?
04. जिसे.....से भीति नहीं और जन्म से प्रीति नहीं, वही अध्यात्म को पा सकता है ?
05. अध्यात्म जब गौण हो जाता है तब सारा का सारा ज्ञान मिट जाता है। वास्तव में त्यागी का अध्यात्म ही है ?
06. जो अध्यात्म के धरातल से नीचे खिसक जाता है उसे..... की आकुलता बढ़ जाती है ?
07. वस्तुतः अध्यात्म साधना यही है कि जो भी ज्ञान का विषय बने उसमें..... रखनी चाहिये ?
08. अध्यात्म प्रेमी कभी बाहर में किसी से नहीं और किसी को उलझाता भी नहीं ?
09. जिसने.....समयसार के कर्त्ता-कर्म अधिकार को समझ लिया वास्तव में वहीं अध्यात्म के रहस्य को समझ सकता है ?
10. स्वभाव की ओर आने के लिये यह जानना है कि कौन किस-किस का किस रूप में कर्त्ता है ?
11. भावना ही एकमात्र अध्यात्म का प्रवाह है अतः उस अध्यात्म तक पहुँचने के लिये आवश्यक है ?
12. इस युग में शास्त्रों का असर तो हुआ है पर लगता है सर तक की हुआ है ?
13. गुरुभक्ति करते-करते जिसका हृदय शुद्ध हो गया है, आस्था मजबूत हो गई है उसे ही अध्यात्म का रहस्य उद्घाटित करते हैं ?
14. अध्यात्म के बिना में कोई रस नहीं रह जाता। चौबीसों घंटे बहिर्मुखी दृष्टि के साथ ही जीवन चला जा रहा है। उसे छोड़कर अध्यात्म के साथ साधना करनी चाहिये ?
15. आध्यात्मिक साधना वही है, जिसमें एकमात्र आत्मा ही रह जाती है,..... भी गौण हो जाता है। इतना साहस जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व में आ जाता है, वही अकेला इस परम अध्यात्म को पा सकता है ?
16. सुख शान्ति बाहर नहीं अन्दर है। अन्दर आनन्द का लहरा रहा है उसमें कूद जाओ तो सारा जीवन शान्त हो जाये ?
17. जहाँ पर तेरा-मेरा, यह-वह, विराम पा जाता है, वस्तुतः वहीं है ?
18. लेखक, वक्ता और कवि होना दुर्लभ नहीं है, दुर्लभ तो है होना ?
19. मैं यथाकार बनना चाहता, हूँ व्यथाकार नहीं, और मैं बनना चाहता हूँ कथाकार नहीं ?
20. स्व की ओर मुड़ना ही सही..... है ?
21. पहले विश्व को भूलो और आत्मा को जानो। जब आत्मा को जान जाओगे तो स्वयं प्रगट हो जायेगा ?
22. सही रूप की प्राप्ति किसी को तब तक नहीं होती जब तक अपने..... की पहचान नहीं होती ?
23. शरीर के प्रति वैराग्य और जगत् के प्रति..... ये दोनों ही बातें आत्म-कल्याण के लिये अनिवार्य हैं ?
24. आत्मबोध के होने पर.....कभी बोझ नहीं लग सकता। जो उसे बोझ रूप महसूस करते हैं, उन्होंने अभी आत्म-वैभव को सही-सही नहीं समझा ?
25. वीतरागता को थोपा नहीं जाता, उसे तो अपने.....जागृत किया जा सकता है ?
26. दुनियाँ से क्या बचना ? कितना बचना ? क्या क्या बचा पाओगे ? अतः स्वयं का राग-द्वेष से

- बचाना ही परम है ?
27. अपने आपको जानो, अपने को पहिचानो, अपनी करो क्योंकि अपने में ही सब कुछ है ?
28. गुणों की अपेक्षा से बनो, श्वान मत बनो, क्योंकि श्वान मात्र प्रहार को पकड़ता है जबकि सिंह प्रहार करने वाले को ?
29. मिट्टी से बाँधे गये बाँध की तरह संसारी प्राणी का कमजोर उपयोग के तीव्र प्रवाह में शीघ्र ही ढूँह जाता है ?
30. सत्तर किलोमीटर स्पीड वाली गाड़ी को जैसे ब्रेक लगाकर एक किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से कर सकते हैं ठीक इसी तरह सत्तर कोड़ाकोड़ी स्थिति वाले मिथ्यात्व को स्वपुरुषार्थ के बल पर अन्तः कोड़ा-कोड़ी कर सकते हैं ?
31. आत्म तत्त्व की उपलब्धि के लिये गहराई में उतरना पड़ता है। जो केवल तट पर ही बैठे रहते हैं, उन्हें मात्र लहरें ही हाथ लगती हैं, ... केवल गहराई में ही मिल पाते हैं ?
32. चाहे हुये अपेक्षित कार्य के सफल न होने पर हमेशा अशान्ति होती है, अतः मात्र अपेक्षा न रखें, अपेक्षित कार्य हो ऐसा पुरुषार्थ भी करें ?
33. आम्नाय (परम्परा) आचार और की एकता से ही चलती है ?
34. आत्म विकास के लिये वीतराग की आवश्यकता है। स्वसंवेदन के माध्यम से हम उस तत्त्व को देख सकते हैं जिसे आज तक नहीं देखा ?
35. जिसके माध्यम से जीवन में क्रान्ति आती है और सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है वह है। उसी वीतरागता की प्राप्ति के लिये यह सारे के सारे प्रयास चल रहे हैं ?
36. यदि इस आत्मा को का योग मिल जाये तो मूर्त से अमूर्त हो सकती है ?
37. आज भविष्य के बारे में चिन्ता है और भूत के साथ उसकी तुलना हो रही है जबकि वर्तमान पुरुषार्थ जा रहा है ?
38. जो व्यक्ति भविष्य की चिन्ता कर रहा है तो निश्चित मानिये वह वर्तमान को रहा है, ध्यान रहे कार्य का होना भविष्य में नहीं वर्तमान में ही संभव है ?
39. कर्म निर्जरा करने वाला साधक महान् है। वह कुछ ही समय में आत्मा को सा शुद्ध कर देता है ?
40. प्रदर्शनों के चक्करों से अपने आपको पृथक् रखना चाहिये ?
41. ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को कौन सी पंचमी के रूप में मनाते हैं ?
42. मुनिराज की भूतजाति व्यन्तर देवों के द्वारा पूजा करने के कारण उनका नाम क्या रखा गया ?
43. मुनिराज के देवों के दन्त पंक्ति को ठीक करने के कारण उनका नाम क्या रखा गया ?
44. स्वाध्याय रूपी उपवन में किसके फूल खिलते हैं ?
45. आचार्य श्री विद्यासागर जी कुल कितनी दीक्षायेँ दे चुके हैं ?
46. आचार्य श्री विद्यासागर जी अभी तक कितनी आर्यिका दीक्षायेँ दी है ?
47. एक चाय बेचने वाला क्या बन सकता है ?
48. रिक्षा चलाने वाले का पुत्र क्या बन सकता है ?
49. ताले कहाँ के प्रसिद्धि को प्राप्त है ?
50. किस माह को किस तारीख को योग दिवस मनाया जाता है ?

10 प्रश्न संस्कार सागर अप्रैल 2019, 40 प्रश्न दिव्यवाणी सागर बूंद समाय,
साध्य/साधन से लिये गये हैं।

यह ग्रंथ आप मंगाना चाहते हैं तो सम्पर्क करें- फोन 0731-4003506

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा: जुलाई 2019

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम स्थान

उम्र सदस्यता क्र.

पूर्ण पता

पिन कोड फोन नं. (एस.टी.डी.)

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम हस्ताक्षर
नियम :- जब तक दूसरा प्रश्न-पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली 2 4 3

1	2			4		5	6
7			8		9		
		10			11		12
		13		14			
15					16	17	18
		19		20			
21	22			23	24		25
26				27		28	29
30			31		32		

ऊपर से नीचे

- आसरा, शरण्य -3
- रावण के नाना का नाम -2
- मित्र, साथ देने वाला -2
- दुःख, त्रास, पीड़ा -2
- गरमपना, गरम का भाव -2
- जुलमढाना, पीड़ा -2
- पख, परन्तु, किन्तु -2
- लोकसभा, विधानसभा में पेश होने वाली अर्थयोजना -3
- सब्जी, शाक -2
- सीधा, कुटिलता रहित -3
- मन वचन काय की क्रिया, समाधि -5
- नौका, बोट -2
- नवीन, नूतन -2
- झक्कीपन -3
- हाऊस, सदन निलय, आलय -3
- धमाका, झटका -3
- नेत्र आँख -3
- जन्म, पैदा होना -3

बाये से दाये

- आचार्य विद्यासागर एक भाई का मुनि अवस्था का नाम -6
- बिहार का एक शहर गुजारना -2
- बददुआ, दुर्भावना -2
- कार्ययोजना (अंग्रेजी) -2
- तह -3
- स्वीकृत, स्वीकार करना -2
- लम्बी चौचवाला पक्षी -3
- आचार्य विद्यासागर जी एक भाई का नाम जो अभी मुनि है -2
- एक दम स्वस्थ, तरोताजा -4
- टिड्डा, पतंगा -3
- उत्पत्ति का स्रोत, उपकरण -3
- जंगल अरण्य -2
- चलने वाला, गमन करने वाला -3
- ज्ञाता वक्ता के अभिप्राय का नाम -2
- सदन, सभ्यजनों का स्थान -2
- रसनेन्द्रिय का विषय -2
- मेरे लिये (संस्कृत) -1
- शिवपुरी जिले का एक ऐतिहासिक नगर -4

वर्ग पहेली 2 4 2 का हल

1	2			4		5	6
आ	चा	रां	ग		स	मा	न
7	धा	र		8	ज	ल	ज
11	र	ण		12	रा	व	न
		13	ता	ज		14	सः
16	सा	ग	र		आ	शा	अ
21	हि	त		22	सं	ग	म
ल		23	नि	य	म		पि
	25	प्री	त	म		26	पा
27				28			

.....सदस्यता क्र.

पता :

वर्ग पहेली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101 रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रु., तृतीय पुरस्कार 41 रु.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति
प्रतियोगिता

हम दोनों साथ-साथ



नियम

- आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकान्त कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
- समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
- पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार 999 रु., द्वितीय 49 रु., तृतीय 24 रु.
- पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की 95 तारीख है।

चातुर्मास कलश आकृषित डिजाइनों में सरस्ती एवं सुन्दर



श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008



गुणायतन शिखर जी में भव्य पावन

वर्षायोग 2019

परम पूज्य मुनि श्री 108
कुन्धुसागर जी महाराज

परम पूज्य एलक श्री 105
सिद्धांतसागर जी महाराज

आचार्य विद्यासागर जी यतिराज के आज्ञानुवर्ती प्रिय शिष्य परम पूज्य मुनि श्री 108 कुन्धुसागर जी महाराज परम पूज्य एलक श्री 105 सिद्धांत सागर जी महाराज का पावन वर्षायोग गुणायतन परिसर शिखर जी मधुवन में पूज्य आचार्य श्री जी के मंगल आशीर्वाद की छाया तले सम्पन्न हो रहा है।

*** मांगलिक कार्यक्रम ***

कलश स्थापना विधि- 22.07.2019 सोमवार

समय - दोपहर 1.00 बजे

सनम निवेदन- आप सभी सादर आमंत्रित हैं

*** कार्यक्रम संचालक ***

प्रतिष्ठाचार्य वाणीभूषण ब. धीरज भैया जी, राहतगढ़

*** आयोजक ***

गुणायतन एवं श्रीसेवायतन परिवार श्री सम्मोदशिखर जी, मधुवन

*** सम्पर्क सूत्र ***

ब. जिनेश मलैया इन्दौर मो. 8989505108

ब. धीरज राहतगढ़ मो. 8989834762

संजय भैया गुणायतन मो. 8969274940

अभिनव जैन गुणायतन मो. 7739396148

गुणायतन कार्यालय मो. 8969274940, 7739396148

*** निवेदक ***

विनोद काला

अध्यक्ष गुणायतन

संस्कार सागर पब्लिशिंग्स Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक : 29/06/2019, चोस्टिंग दिनांक : 03/07/2019